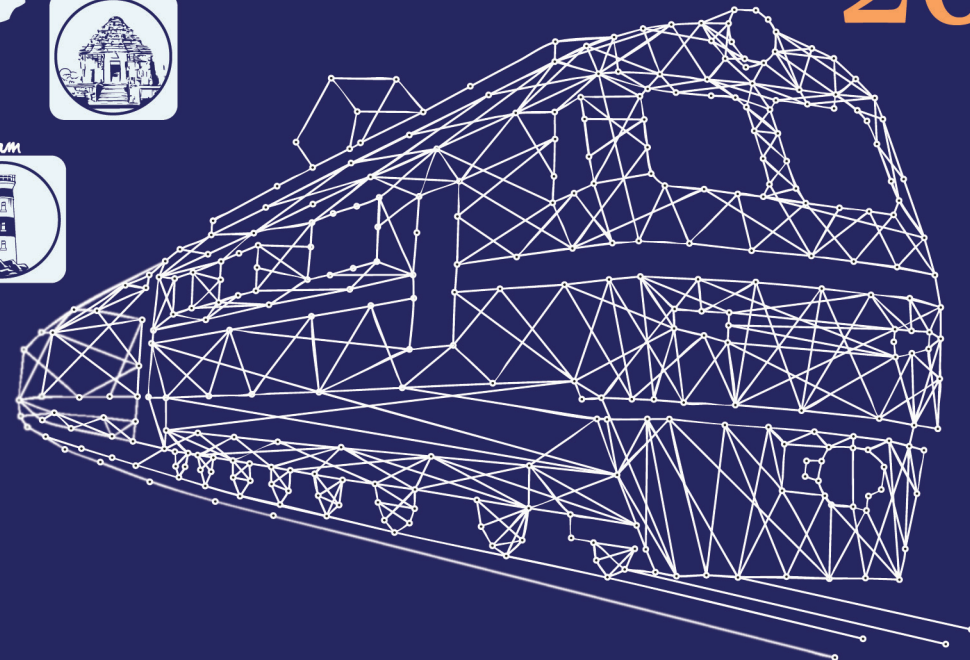




**JAGRITI**  
DIGITAL YATRA  
2020

# YATRA SAAR 2020





Jagriti Digital Yatra – Ek Nayee Khoj	4
Editorial	6
The Editorial Team	8
Building Institutions: As rooted as a banyan	10

## 12

Introduction

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders	13
Jagriti has a 3-pillar structure	14
Jagriti Yatra	15
Jagriti Enterprise Centre	16
JECPI Incubates	17
Rail to Digital – Story of Jagriti Yatra's Journey	20
JDY 2020: INSPIRATION, INNOVATION & INCUBATION	22
THE YATRA GEET	23

## 24

Inspiration

In conversation with Makarand Paranjpe	25
Dr. R. A. Mashelkar, the dangerous optimist	26
Pradeep Lokhande the library man	27
Dr. Chidambaram (ISRO)   Sustainable Development and Creating a Knowledge-Economy	28
Dr. Kurush Dalal – Importance of history	29
Madhusudan and Diken - Holding the Gandhian torch high	30
Logistics University: Mumbai Dabbawalas	31
The Vision Factory: Aravind Eye Care	32
Lighting up the world: SELCO	33
Never ending food providers: Akshaya Patra	34
Working the grass root: Gram Vikas	35
The Clothing Revolution : Goonj	36
Women Power: Barefoot College	37

# Table of contents

प्रस्तावना: शरत वैसल	4
सम्पादक की टिप्पणी	6
सम्पादक की टीम	8
लेख: शशांक मणि	10

परिचय

## 12

मिडल ऑफ द डायमंड	13
३ स्तम्भ	14
जागृति यात्रा	15
जागृति एंटरप्राइज सेंटर	16
जे ई सी पी इन्क्यूबेटी	17
लेख: सुनील पेंगारकर	20
जे डी वाए स्लाइड ३   यात्रा गीत	22
	23

प्रेरणा स्रोत

## 24

मकरंद परांजपे	25	
र. माशेलकर	26	
प्रदीप लोखंडे	27	
डॉ. चिदम्बरम	28	डब्बावाला
डॉ. कुरुश दलाल	29	अरविंद आह केयर
मधुसूदन भाई एवं विकेन पटेल	30	सेलको
		अक्षय पात
		ग्राम विकास
		गूँज
		बेअरफुट कॉलेज
		36
		37





# 38

Innovation

Women Building An Institution	39
Panel Discussion: Nation Building	41
Panel Discussion   Challenges and Opportunities for Healthcare in a post COVID world	42
Panel Discussion: Digital for Bharat	43
Panel discussion: Women empowerment Awakening Shakti	44
Panel Discussion: Agro-Processing Products	45
Panel Discussion: Rurbanisation	46
Panel Discussion: Apparels and Handicrafts	47
Innovations unbound: Sonam Wangchuk	48
Keeper of Swami Vivekananda's legacy: Madhuvanti Ghosh	49
Real life heroes: Sonu Sood and Neeti Goel	50
Jagriti Enterprise Mela	51

# 54

Incubation

Deoria 101: Knowing middle India up close	55
Organizations 101	56
Marketing 101	57
Fundraising 101	58
Biz Gyan Tree	59

# 64

Insights  
& Impressions

Waking up to a new dawn	65
Mornings with "Sone Ki Chidiya"	67
Peer to peer learning: Lifeline activity	69
Peer to peer learning: AC Chair Car Presentations	70
Kohinoor Ki Khoj	73
Impact of Digital Yatra	74
Yatri Testimonials & Creative Expressions	78
DERC	84

# 87

Intent

The Future As We Are Building It	88
Our Sponsors	90

## Table of contents

# 38

इनोवेशन

लेख: वनिता विश्वनाथन	39
राष्ट्र निर्माण	41
कोविड के बाद स्वास्थ्य सेवा	42
भारत के लिए डिजिटल	43
महिला सशक्तिकरण	44
एगो प्रॉसेसिंग	45
पुनर्विकास	46
परिधान एवं हस्तशिल्प	47
सोनम वांगचुक	48
मधुवती घोष	49
सोनू सूद एवं नीति गोयल	50
जागृति एंटरप्राइज मेला	51

# 54

इंक्यूबेशन

देओरिया १०१: कार्यस्थल को जानिए	55
संगठनों के प्रकार	56
मार्केटिंग १०१	57
फंडरेजिंग १०१	58
बिज़्ञान ट्री: गतिविधि	59

# 64

अंतर्दृष्टि

सुबह के कॉल	65		
सोने की चिड़िया	67	कोहिनूर की खोज	73
लाइफ लाइन गतिविधि	69	डिजिटल यात्रा का प्रभाव	74
ए.सी. चेंबर कार	70	यात्री वखान एवं रचनात्मकता	78
		बी ई आर सी	84

# 87

इंटेन्ट (इरादा)

लेख: आशुतोष कुमार	88
समर्थक एवं प्रायोजक	90



Sharat Bansal  
शरत बेसल

Jagriti Board Team  
Chairman

JAGRITI  
DIGITAL  
YATRA:  
EK NAYEE  
KHOJ

जागृति  
डिजिटल यात्रा  
एक नई खोज

After 12 years of enabling Jagriti Yatra, in the beginning of 2020, we thought this edition will be business as usual. But who could foresee this pandemic - a once in a century crisis of gigantic proportions. We still hoped for the regular yatra, as the year progressed. We drew up a risk matrix in the hope that the pandemic will be contained. Come August 2020, it became clear that a physical yatra is impossible. But we were determined to not have a break. Necessity is the mother of invention - Jagriti Digital Yatra was born.

With three months left, we rallied to put a core team led by Sunil Pangarkar and Chinmay and help came in many forms – Aditya, Srinivas, Samir, Aniket, KK, Pratik, Brijesh, Leena, Prerak.. Our CEO Ashutosh and the entire Jagriti board - Shashank, Vanitha, Madhu, Balu, Sunil led the effort from the front. Our mentors Dr Mashelkar and Mr Goplakrishnan were only a call away. The team identified the best platforms, a critical shift from the physical yatra. While programming remained unchanged, the delivery of the program had to be reimaged.

लगातार 12 साल जागृति यात्रा को सफल बनाने के बाद 2020 की शुरुआत में हमें लगा यह संस्करण भी हमेशा की तरह होगा। लेकिन सदी में एक बार आने वाले इस विशाल संकट वाली महामारी को कौन समझ सकता था। वक्त बीतता गया, हम फिर भी नियमित यात्रा की आशा में थे। इस उम्मीद में हमने यह अनुमान लगाया कि इस महामारी पर हम काबू पा लेंगे। फिर अगस्त 2020 का वक्त आया और यह स्पष्ट हो गया कि इस बार हम भौतिक यात्रा नहीं कर पाएंगे। परंतु हम किसी भी परिस्थिति में रुकने के लिए तैयार नहीं थे। वो कहते हैं ना "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है" और जागृति डिजिटल यात्रा का जन्म हुआ।

जब 3 महीने बचे तो हमने सुनील पंगारकर और चिन्मय के नेतृत्व में एक कोर टीम बनाई और पूरी जी जान से तैयारियों में जुट गए। हमें कई लोगों से मदद मिली - आदित्य, श्रीनिवास, समीर, अनिकेत, केके, प्रतीक, बृजेश, लीना, प्रेरक। हमारे सीईओ आशुतोष और संपूर्ण जागृति बोर्ड शशांक, वनीता, मधु, बालू, सुनील सब ने मिलकर बहुत प्रयास किया। हमारे गुरु डॉक्टर मशेलकर और श्री गोपालाकृष्णन निरंतर हमारे साथ संपर्क में थे। हमारी टीम ने सर्वश्रेष्ठ डिजिटल प्लेटफॉर्म की पहचान की जो इस डिजिटल यात्रा के लिए महत्वपूर्ण था। हमारे मुख्य कार्यक्रम पहले से ही तय थे पर उनके समय एवं प्रसारण एक नया रूप देना पड़ा। इसमें कार्यक्रम का रिकॉर्डिंग उनका प्रतिपादन तथा आकर्षक संपादन, साथ ही लाइव कार्यक्रम प्रसारण के दौरान दर्शकों को जोड़े रखना मुख्य रूप से शामिल था। हमारे लिए कई चुनौतियाँ थी जिनमें सबसे महत्वपूर्ण था कार्यक्रम के दौरान सहकर्मियों यात्रियों के बीच में बातचीत को जागृत रखना तथा समूह और पूरे प्रतिभागी समूह में एक अच्छा विचार-विमर्श जारी रखना।





## JAGRITI DIGITAL YATRA: EK NAYEE KHOJ

जागृति  
डिजिटल यात्रा  
एक नई खोज

The recording of content, rendering it in an attractive form, mixing recorded and live content, ensuring interactive sessions, etc. were many complexities that the team had to address. One of the most critical functionalities that kept us awake related to interaction amongst yatris in their cohorts, groups and across the whole participant group. What could be the best alternative to meeting, living and interacting on a 15 day train journey? While addressing the required changes was important, we could not take our eye off the other streams like registration, selection and onboarding, formation of groups and cohorts, fundraising, media, operations etc. Host of visible and silent warriors like Vaishali, Lalitha, Pankaj, Meet .... etc burnt the midnight oil to bring the Yatra 2020 to fruition.

Yaaro Chalo!  
Sharat

15 दिन की ट्रेन यात्रा में 500 से ज्यादा यात्रियों से मिलना जुलना, बातचीत करना, एक साथ रहना, उनसे सीखना इसका भला कोई और विकल्प हो सकता है क्या? हमारी आवश्यकताओं को देखते हुए परिवर्तन बहुत ही महत्वपूर्ण थे, पर हम अन्य चीजों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते थे, जैसे यात्रियों का पंजीकरण, उनका चयन, उनका ऑनबोर्डिंग, उनके समूह का गठन, यात्रा के लिए धनराशि इकट्ठा करना, इसका प्रचार तथा संचालन आदि भी बहुत महत्वपूर्ण थे। वैशाली, ललिता, पंकज, जैसे ना दिखने वाले बहुत से लोगों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। उन्होंने दिन रात एक कर दिया ताकि जागृति डिजिटल यात्रा 2020 फलित हो सके।

डिजिटल यात्रा के 15 दिनों में मुझे कुछ पूर्णता की अनुभूति हुई है। बड़ी संख्या में यात्रियों की भागीदारी से लगता है कि यह डिजिटल यात्रा लोगों को एक परिवर्तनकारी अनुभव देने में सफल रही है, जिसके लिए यह जानी जाती है। यह जानकर भी हर्ष हो रहा है कि यात्रा के कई सन डिजिटल अवतार में बेहतर थे। एसी चेयर कार सन, बीजीटी अभ्यास और प्रस्तुतियां, रोल मॉडल सन, तथा पैनल चर्चा डिजिटल रूप में ज्यादा प्रभावकारी साबित हुए।

इस पूर्णता का भाव तब और बढ़ जाया जब आप में से कई लोग यात्रा के दौरान आत्मसात किए गए "उद्यम से विकास" वाले मंत्र को अपने जीवन में कार्यान्वित करते हुए दुनिया के लिए एक मिसाल कायम करेंगे। मैं आशा करता हूँ आप जागृति यात्रा के यात्रियों के नेटवर्क से एक सक्रिय सदस्य बनकर जुड़े रहेंगे तथा एक दूसरे से अपने उद्यमी जीवन की यात्रा के अनुभवों को साझा करते रहेंगे।

यारों चलो!  
शरत बंसल



Seema Sali  
सीमा साली



Pavithra Rajagopal  
पवित्रा राजगोपाल

Co Chief Editors  
Yatri 2020

EDITOR'S  
NOTE

Dear Jagriti Family,

The proverbial train has not only left the station, but completed the journey too. But have we arrived at the destination?

2020 has undoubtedly been a year that will be earmarked in history. "What were some of the primitive ways for people to cope during the pandemic of 2020. Please describe in 400 words." This is sure to be a question in some kid's history paper, maybe 100 years from now. I don't know what that kid will know of 2020, but for us, it will be the year that resilience won.

Despite the apparent looming drudgery of the P-word that got way too popular this year, I for one am glad that we found new ways to "keep the train on the tracks." 600 young wide-eyed thought leaders of tomorrow, 15 days of mayhem and madness and an infinite number of relations that we're going to cherish for a long time. What a perfect way to cap this little less than perfect year.

Our track for the journey was set - Let's build India through enterprise. The two weeks were intense and filled with ideas and arguments that led to constructive directions. What made this year particularly intuitive was that it gave a chance for people from all walks to life to come aboard this crazy train.

प्रिय जागृति परिवार,

इस बार जागृति रेल ने स्टेशन छोड़ा भी नहीं और यात्रा पूरी भी हो गयी। पर क्या हम अपने गन्तव्य पर पहुंच गए?

२०२० ने निस्संदेह ही इतिहास में अपना स्थान निश्चित कर लिया है। "२०२० की महामारी में अपनाए गए कुछ आदिम तरीकों का ४०० शब्दों में वर्णन करें।" यह १०० साल बाद इतिहास की परीक्षा में बच्चों से पूछा जाने वाला एक संभावित प्रश्न है। मुझे नहीं पता कि वह बच्चा २०२० के बारे में क्या जानेगा पर हमारे लिए यह वह साल रहेगा जहाँ विषम परिस्थितियों से लड़कर हम सफलतापूर्वक बाहर निकले।

इस पूरे साल को महामारी के बादल ने धुन्धला सा कर दिया, पर मुझे प्रसन्नता है कि इस विपरीत काल में भी हमने अपनी रेलगाड़ी को पटरी पे बनाए रखा। ६०० नौजवान, कल की सोच के नायक, इन १५ दिनों की हलचल और जोश में यात्रा के प्रतिभागियों ने ऐसे अनगिनत रिश्ते बना लिए हैं जो कि उन्हें उम्र भर याद रहेंगे। इस उथल पुथल भरे साल का इससे बेहतर कोई अंत नहीं हो सकता था।

हमारी यात्रा का पथ साफ था - उद्यम द्वारा भारत का निर्माण। दो व्यस्त सप्ताहों के गहन चिंतन व विचारों के आदान प्रदान से सकारात्मक निष्कर्ष पर पहुंचे। इस यात्रा की सबसे रोचक बात यह थी कि डिजिटल ट्रेन में सवार यात्री अलग अलग प्रान्तों से, विभिन्न पृष्ठभूमियों व विभिन्न अनुभवों के साथ यहां आए थे। इस यात्रा पर लगभग आधी संख्या महिलाओं की थी जो कि अक्सर परिवार की ज़िम्मेदारी के चलते यथार्थ यात्रा करने में सक्षम नहीं थी। परिप्रेक्ष्य एक ऐसी चीज़ है जिसकी कभी अति नहीं होती, और इस यात्रा की विविधता परिप्रेक्ष्य की कमी नहीं होने देती।





## EDITOR'S NOTE

Half of the Yatris were women, some of them from the rural hinterland and others from tier 2 cities with familial responsibilities for whom a physical journey might not have been feasible. If there's something you can't have too much of, it's perspective. The diverse number of the people on this journey made sure of it.

Jagriti Digital Yatra 2020 took us around this magnificent country of ours, India, across 12 cities over 15 days with a front row seat to glean wisdom from almost 40 speakers. Each of the 40 speakers are nation builders and with humility, their journey and life lessons with us, the yatris.

As we start stitching together the journal of our journey with all our learnings, experiences, and reflections, we discover that we can only share a slice of it. The impact of each of us is deep and will last us a lifetime. Let me pull the chain here, just for a moment please (I'm sorry, this is the last train-pun, I swear). Each one of you is unique and has contributed immensely to this journey. We thank you for your contribution to make our life richer. We thank the core team, the DERCs, support team, facilitators for making it possible against all odds.

Yaaron Chalo!  
Seema Sali and Pavithra Rajagopal  
Co Chief editors

जागृति डिजिटल यात्रा २०२० ने १५ दिनों के दौरान १२ शहरों में स्थित लगभग ४० प्रेरणास्रोत व्यक्तियों के ज्ञान व अनुभवों को हमसे साझा किया। हर एक वक्ता की राष्ट्र निर्माण में एक अहम भूमिका है। यात्रा सार को साथ पिरोने की प्रक्रिया में जो सब हमने इस यात्रा में महसूस किया और सीखा उसको कुछ शब्दों में कह पाना संभव नहीं है। यह अनुभव तो हर यात्री के ज़हन में सदा जीवित रहेगा।

हम सब ने अपने अतुलनीय योगदान से इस यात्रा को इतना यादगार बनाया। मैं धन्यवाद करना चाहूंगी कोर टीम, डी.ई.आर.सी, सहयोगी समूह और फैसिलिटेटर्स का जिनके बिना यह यात्रा संभव ही नहीं थी। इसके साथ ही मैं वाणी को विराम देती हूँ।

यारो चलो!

सीमा साली व पवित्रा राजगोपाल  
(सह मुख्य संपादिका)



## EDITORIAL TEAM

### The Editorial Team

In the era of web series with multiple seasons, we all look forward to the next season of our favourite show. Here is the next installment of your favourite chronicle, not of Narnia but of Jagriti Yatra.

The stars of the season along with the seasoned crew of Core team members, DERCs and support team slogged hard over all odd hours, met digitally to ensure the ominous 13th year Yatra Saar was all that its fans were looking forward to.

Many Yatris refused to disembark the Digital train on the 7th January but continued on a different journey of late nights, digital meetings, follow up, last minute scrambling with a special mention to Cheshta Naval who relentlessly followed up with everyone for timely submission and managed the content very effectively. (We wonder if she slept at all.) The entire Editorial team has given their best to capture this historic Digital Yatra through their own words and screenshots.

The members of JDY family who fought bravely against all odds and succeeded in getting the Yatra Saar ready on time are:

### सम्पादकीय टीम:

इस बहु भाग वाले वेब सिरीज़ के ज़माने में, हमें अपने चहेते शो के अगले भाग का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। तो लीजिए हम लेकर आये हैं आपके पसंदीदा वृत्तान्त की एक और किश्त, नही मैं नार्निया की नहीं जागृति यात्रा की बात कर रही हूँ।

इस १३वें साल में सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद २०२० के यात्री, कोर टीम के अनुभवी सदस्यों, डी.ई.आर.सी और अन्य सहयोगी मंडल ने डिजिटल रूप से सुनिश्चित किया कि आप तक आपकी चहेती यात्रा सार पहुंच पाए।

कुछ यात्रियों ने ७ जनवरी को डिजिटल ट्रेन छोड़ने से इनकार कर दिया और इस सार को साथ पिरोने की एक दूसरी यात्रा शुरू कर दी। एक यात्री चेष्टा नवल का कार्य सरहानीय रहा, जिन्होंने प्रभावी ढंग से समय पूर्वक डेटा का प्रबंधन किया (पता नहीं वह सोती भी थीं या नहीं)। पूरी सम्पादकीय टीम ने प्रयास किया है कि वह बेहतरीन तरीके से इस ऐतिहासिक डिजिटल यात्रा को अपने शब्दों व स्क्रीन-शॉट्स के माध्यम से आप तक पहुंचा पाएँ।





## EDITORIAL TEAM

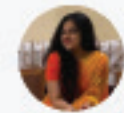
### CONTENT कंटेंट



Arohi Trivedi  
आरोही त्रिवेदी



Amar Deep  
अमरदीप



Ambica Ghai  
अम्बिका घई



Anuja Bali Karthikeyan  
अनुजा बाली कार्तिकेयन



Cheshta Naval  
चेष्टा नवल



Govardhan Sai Pinni  
गोवर्धन साई पिन्नी



Harshita Shivhare  
हर्षिता शिवहरे



Kushal Gorti  
कुशल गोली



Mayuri Singhal  
मयूरी सिंघल



Dr. Pallabi Roy  
डॉ. पल्लबी रॉय



Prakhar Agrawal  
प्रखर अग्रवाल



Radhakrishna ch  
राधाकृष्ण



Raghav Ajitsaria  
राघव अजितसरिया

### DESIGN डिजाइन



Muralikrishna  
M Kulkarni  
मुरलीकृष्ण म. कुलकर्णी



Parul Goyal  
पारुल गोयल



Sharanya Ojha  
शरण्या ओझा



Tatsat Shah  
तत्सत शाह

### TRANSLATION अनुवादन



Dr. Aabha Pimprikar  
डॉ. आभा पिम्परीकर



Akshita Rathore  
अक्षिता राठौर



Mallika Mathur  
मल्लिका माथुर



Ram  
राम



Sanjay Sahu  
सेजय साहु



Shivani Chaudhary  
शिवानी चौधरी



Wageesh Shukla  
वागीश शुक्ला



**Shashank Mani**  
शशांक मणि

Jagriti Board Team  
**Founder**

**BUILDING  
INSTITUTIONS:  
AS ROOTED AS  
A BANYAN**

**जागृति डिजिटल यात्रा  
संस्था का निर्माण**

Our institutions need a refresh as we near the 75th anniversary of India's independence. History has shown that in large democracies a generational shift starts to happen around this time. Ideas that a previous generation holds close to their heart start getting loosened, and new ideas germinate. It is around these new ideas that new institutions must be built.

In the case of Jagriti, our focus has been on smaller towns and districts, what we call Middle India, through enterprise. By motivating youth and women, nation building can be accelerated, especially after the COVID crisis. An apt symbol of this is the Banyan tree. The Banyan tree was named after Baniya's who would sit under its shade and conduct business, but its symbolism is much deeper. It signifies the ancient traditions of India, as its national tree, with the ability to grow new roots and expand. Now that our nation is at the 1.4-Billion-person mark, starting from a 350 million mark as a young nation in 1947, it is time we grew new shoots, new institutions, but with an Indian ethos and in line with a large democracy.

Institution building is the task of leaders. Enterprises that flourish are mini institutions, but as we have learnt over the past 13 years, leaders are at the core of enterprise led development. Every strong institution in the world has taken root, much like the Banyan tree, in the fertile soil of local traditions, local leaders and above all local issues that need to be solved.

जैसे जैसे हम भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के नज़दीक आते जा रहे हैं, वैसे वैसे हमारे संस्थानों में बदलाव लाने की आवश्यकता आ रही है। इतिहास गवाह है कि हर एक बड़े लोकतंत्र में इसी समय के आसपास एक पीढ़ीगत बदलाव होने लगता है। विचार, जो कि पिछली पीढ़ी अपने दिल से लगाए हुए रखते हैं, धीरे धीरे कमजोर होने लगते हैं और उनकी जगह नए विचार अंकुरित होते हैं, और इन्हीं नए विचारों के आसपास ही नए संस्थानों का निर्माण किया जाना चाहिए।

जागृति के मामले में हमारा ध्यान छोटे शहरों और जिलों पर है, जिन्हें हम उद्यमों के माध्यम से मध्य भारत कहते हैं। आज हम कोविड संकट के बाद भी, युवाओं और महिलाओं को प्रेरित करके राष्ट्र के निर्माण में तेजी ला सकते हैं। इसका एक सबसे बेहतरीन उदाहरण बरगद का पेड़ है। बरगद के पेड़ का नाम बनिया के नाम पर रखा गया था, जो इसकी छांव के नीचे बैठकर व्यापार किया करता था, लेकिन इसका प्रतीकवाद बहुत गहरा है। यह भारत की प्राचीन परंपराओं को अपने राष्ट्रीय वृक्ष के रूप में दर्शाता है, जो खुद ही नई जड़ों को विकसित और विस्तार करने की काबिलियत रखता है। आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग 140 करोड़ के आसपास हो गई है, जो की सन् 1947 में 35 करोड़ के आसपास थी, जब हमने एक युवा देश के रूप में शुरुआत की थी।





## BUILDING INSTITUTIONS: AS ROOTED AS A BANYAN

जागृति डिजिटल यात्रा  
संस्था का निर्माण

Circling the country for the past 12 years (and this year digitally for the 13th), we have realized that today's young operate from a refreshing stance of abundance. Today, that mentality of abundance, that ability to collaborate, that lessening of anxiety, the re-positioning of India as a solid democracy and other tangible and intangible benefits calls for a new approach to institution building, particularly in the Middle.

Our attempt to build the 4 – Dhams of enterprise is in this spirit. These four centers and the Middle of the Diamond Institute will be institutions that build on the ideas of Jagriti where youth and women, middle India, enterprise, digital and nation building are key to the principles that guide us. Digital will play a key role in this, and the Jagriti Digital Yatra 2020 has proven this for us. These institutions will be locations for collaboration, solving problems, through Incubation, Innovation and Inspiration.

Come join this movement to build institutions in the real India. This Digital Journey would have given you a glimpse of that 'life fulfilled' as your role models, facilitators, and Yatris have told you stories of these creations. The process of starting institutions is difficult, but once the flywheel of building starts to turn, it will give you lifelong meaning.

Yaron Chalo!  
Shashank Mani

अब समय आ गया है की हम भारतीय लोकाचार के साथ और एक बड़े लोकतंत्र के अनुरूप नए संस्थान विकसित करें।

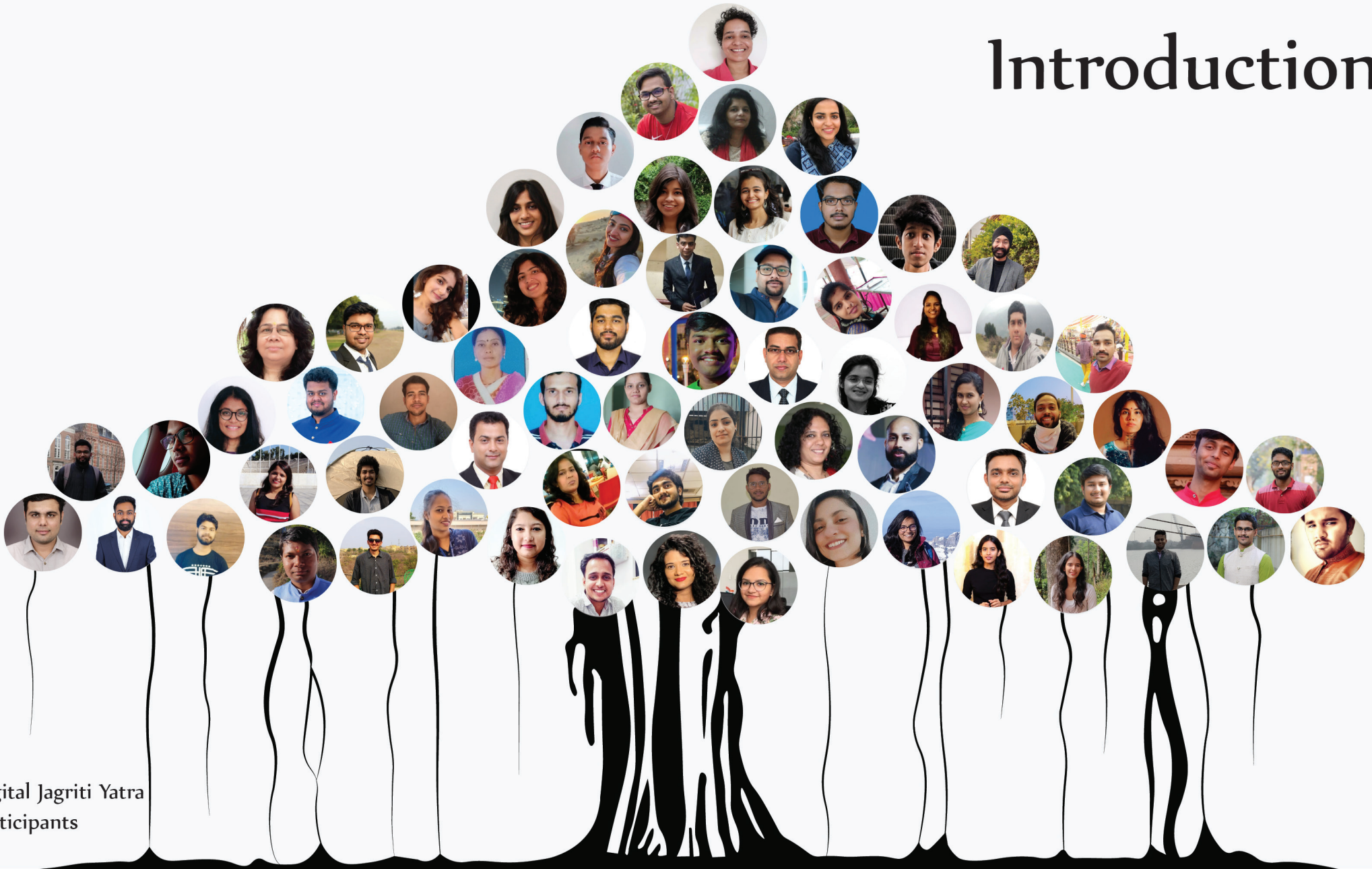
संस्था निर्माण करने का कार्य अधिनायकों का है। जो उद्यम फल फूल रहे हैं वो हमारे छोटे संस्थान होते हैं, लेकिन हमने पिछले 13 वर्षों में सीखा है कि अधिनायक किसी भी उद्यम के विकास आधारित हिस्से के मध्य में होता है। दुनिया में मौजूद प्रत्येक मज़बूत संस्था अपनी स्थानीय परम्पराओं, नायकों और सर्वोपरी स्थानीय मुद्दों को सुलझाने की नींव पर टिकी होती है ठीक एक बरगद वृक्ष के समान।

पिछले 12 वर्षों से (और इस वर्ष डिजिटल रूप से 13वें वर्ष) हम देश का भ्रमण कर रहे हैं, और हमने महसूस किया है कि आज का युवा प्रचुरता के एक ताज़ा रुख से काम कर रहा है।

यारों चलो!  
शशांक मणि



# Introduction



Digital Jagriti Yatra  
Participants





## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

Jagriti believes that the Indian demography is a 'diamond in the rough' with infinite potential. We need to awaken this potential in millions of Indians in the middle of the demographic diamond where 58% of Indian population lives. We term these 800 million Indians, inhabiting the Tier 2 & 3 districts of India as Middle India. They have passion and talent, but lack exposure and support that leads to purpose and enterprise.

### About Jagriti

Jagriti aims to inspire young Indians living in the Middle of the Indian Demographic Diamond to lead development by becoming entrepreneurs, creating a national movement of "Building India through Enterprise".



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

हमारी धारणा - मोबिलाइज मिडिल ऑफ़ डायमंड सिटीजन बिल्डर्स अर्थात देश के मध्य में बसे और जो देश को आकार दे सके ऐसे हाथों को मजबूती देना है। जागृति ये मानता है कि भारत की जनसांख्यिकी एक ऐसा अमूल्य हीरा है जिसे तराशा नहीं गया है।

हमें ये क्षमता जाननी, जगानी और बढ़ानी है, खासकर मध्य भारत में जहाँ भारत के 58 % लोग रहते हैं। ये 8 करोड़ भारतीय 2 और 3 टायर जिलों में रहते हैं। उनमें जुनून और प्रतिभा तो है, लेकिन उचित जानकारी और सहयोग के बिना उद्देश्यहीन एवं व्यवहार कुशलता से परे रह जाते हैं।

जागृति के बारे में थोड़ी जानकारी

हमारा उद्देश्य मध्य भारत में रहनेवाले युवाओं को 'बिल्डिंग इंडिया थ्रू एंटरप्राइज' नामक राष्ट्रीय अभियान के अंतर्गत उद्यमी (आल्यूप्रीन्युअर) बन के देश की उन्नति करने के लिये प्रोत्साहित करना है।



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm





## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Yatra ► JDY Main

26th December at 3:00pm

Jagriti has a 3-pillar structure.

**1. Jagriti Yatra:** A national entrepreneurship initiative through train journey and digital platform to promote entrepreneurship among the youth in Tier 2/3 India.

**2. Jagriti Enterprise Centre:** A regional innovation and incubation ecosystem to support small and medium entrepreneurs through market, mentorship and money.

**3. Jagriti Ambassador for District Entrepreneurship:** A district-level initiative to build entrepreneurship ecosystem through well-designed outreach programs, executed by alumni of Jagriti Yatra.

YATRA

JEC



Jagriti Yatra ► JDY Main

26th December at 3:00pm

जागृती की रचना तीन स्तम्भीय (श्री पिलर) है:

1. जागृती यात्रा: यह राष्ट्र स्तरीय पहल (आल्यप्रोन्न्युअरशिप इनिशिएटिव) है। इसमें हम टू/श्री टियर में बसने वाले युवा वर्ग को एक रेल की यात्रा द्वारा उद्यमिता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

2. जागृती उपक्रम केंद्र (एंटरप्राइज सेंटर): एक क्षेत्रीय नवाचार (इनोवेशन) और ऊष्मायन (इन्क्यूबेशन) पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) बाज़ार, मेंटरशिप और पैसे के माध्यम से छोटे और मध्यम उद्यमियों का समर्थन करता है।

3. जागृती राजदूत (अंबेसेडर) फॉर डिस्ट्रिक्ट आल्यप्रोन्न्युअरशिप: जिलास्तरीय पहल, जहाँ जागृती के पूर्व छात्र इन्क्यूबेशन इकोसिस्टम तैयार करने के लिये आऊटरीच कार्यक्रम तैयार (डिज़ाइन) करते हैं।

YATRA

JEC

JADE







## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Enterprise Centre » JDY Main  
26th December at 3:00pm

Jagriti Yatra is a 15-day, 8000-km entrepreneurship train journey program, which has impacted 6300+ aspiring entrepreneurs in the last 13 years.

The program is designed on the philosophy of experiential learning. The four axes of learning are – peer-to-peer learning; role model (social and business entrepreneurs) interaction; panel discussions; and a business-plan competition.



Jagriti Enterprise Centre » JDY Main  
26th December at 3:00pm

जागृती यात्रा १५ दिन और ८००० कि.मी. चलने वाला आन्वर्प्रीन्युअरशिप कार्यक्रम है, जो पिछले १३ सालों में अब तक ६,३००+ उद्यमियों पर प्रभाव छोड़ चुका है।





## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Enterprise Centre ► JDY Main  
26th December at 3:00pm



A regional entrepreneurship and innovation ecosystem to support local enterprises and lead sustainable development.

### FOUR CENTERS AND ONE NATIONAL INSTITUTE PLANNED

Jagriti Enterprise Centre –

Purvanchal in North (started)

Nagpur in West

Kanyakumari in South

Ganjam in East

Middle of Diamond Institute in Mumbai



Jagriti Enterprise Centre ► JDY Main  
26th December at 3:00pm



विभागीय स्तर पर काम करने वाले इनोवेशन और इन्क्यूबेशन इकोसिस्टम के जरिये स्थानीय उद्योगों को मदद करना और सतत विकास की अगुवाई करना।

४ राज्य स्तरीय और एक राष्ट्रीय संस्था बनाने का लक्ष्य

१. उत्तर भारत में जागृती उपक्रम केंद्र (एटरप्राइज़ सेंटर) - पूर्वांचल (शुरू हो चुका है)

२. पश्चिम में नागपुर

३. दक्षिण में कन्याकुमारी

४. पूर्व में गजम

५. मिडल ऑफ़ डायमंड इन्स्टिट्यूट - मुंबई





## INCUBATED COMPANIES

Jagriti Enterprise Centre - Purvanchal



### Jagriti Yatra ► JECP incubated companies.

24th December 2020 to 7th January 2021

Priti Pandey who is a JECP at Deoria introduced Jagriti Enterprise Centre, Deoria incubatees.

Anita Rai and Raas Narayan Rai have a business of banana fire, jams and other products made from banana flour in Kushinagar since 2017.

Aravind Rai who already had a business of making incense sticks and detergent is designing electric cycles.

Jai Singh has been growing medicinal plants since 2005. Presently he has leased 15 acres of land from the UP government for 10 years and grows lemon grass and other medicinal plants.

Narendra Yadav has been harvesting honey since 2007. He has trained more than 200 farmers to produce honey.

Swatantra Singh grows mushrooms and trains farmers to grow mushrooms. He has started his work in Purvanchal since last 5 years and plans to train 12000 families of farmers.

R. C Kushwah makes sanitary pads for women since the last 2 years. His novel idea to promote use of sanitary pads has been to give a new bride a supply of one year's sanitary pad as a wedding gift.

Pooja Shahi works on home decorative items and jewelry. She works with women who are at home. Most of her work is done in the communities. 5000 women are associated with her.



### Jagriti Yatra ► JECP के द्वारा इनक्यूबेट की गयी कंपनी

24th December 2020 to 7th January 2021

प्रीति पांडे देवरिया में JECP (जागृति एंटरप्राइज सेंटर, पूर्वांचल) की सदस्या है, उन्होंने हमें देवरिया की इनक्यूबेटिंग कंपनियों से मिलवाया।

अनिता राय और रास नारायण राय का कुशीनगर में 2017 से केले के फाइबर एवं जैम और केले के आटे से बने अन्य उत्पादों का व्यापार है।

अरविंद राय जिनके पास पहले से ही अगरबत्ती तथा डिटर्जेंट बनाने का कारोबार था, इलेक्ट्रिक साइकिल डिजाइन कर रहे हैं।

जय सिंह 2005 से ही औषधीय पौधे उगा रहे हैं। वर्तमान में उन्होंने यूपी सरकार से 15 एकड़ जमीन 10 साल की लीज पर ली है जहाँ वे लेमनग्रास और अन्य औषधीय पौधे उगाते हैं।

नरेंद्र यादव 2007 से मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उन्होंने 200 से ज्यादा लोगों को शहद उत्पादन करने के लिए प्रशिक्षित किया है।

स्वतंत्र सिंह पिछले 5 सालों से मशरूम की खेती कर रहे हैं तथा वह अन्य किसानों को भी मशरूम की खेती करने का प्रशिक्षण देते हैं, उन्होंने 12,000 किसान परिवारों को इसका प्रशिक्षण देने का लक्ष्य बनाया है।

के. सी. कुशवाहा पिछले 2 साल से महिलाओं के लिए सैनिटरी नैपकिन बना रहे हैं। महिलाओं के बीच सैनिटरी नैपकिन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए वो नव विवाहित वधुओं को शादी में 1 साल का सैनिटरी नैपकिन स्टॉक भेंट स्वरूप देते हैं।

पूजा साही घर के सजावटी सामान और गहनों पर काम करती हैं। वह उन महिलाओं के साथ काम करती हैं जो घर पर रहती हैं। उनका अधिकांश काम समुदायों में किया जाता है। उनके साथ 5,000 महिलाएं जुड़ी हुई हैं।



## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Enterprise Centre ► JDY Main

Located at Purvanchal

Being built in Deoria, Uttar Pradesh.

A world class regional center that promotes **Inspiration, Incubation & Innovation** covering 14 districts in eastern Uttar Pradesh



### COHORT-BASED LEARNING

Peer-to-peer learning through diverse cohorts, guided by facilitators.



### DIGITAL PLATFORM

Facebook Workplace platform to engage with the participants



700 DIGITAL PARTICIPANTS



14 DAYS



91+ HOURS OF CONTENT



40+ SPEAKERS



Jagriti Enterprise Centre ► JDY Main

Located at Purvanchal

उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित

विश्व स्तर का विभागीय केंद्र जो यू.पी. के १४ जिलों में प्रेरणा, इन्क्यूबेशन और नवोन्मेष (इनोवेशन) को बढ़ावा देगा।



सामूहिक प्रशिक्षण (कोहोर्ट बेस लर्निंग)

विभिन्न समूहों में बैठे अपने साथियों से सीखना, वो भी मार्ग



डिजिटल मंच (प्लेटफॉर्म)

फेसबुक वर्कप्लेस के माध्यम से प्रतिभागियों से वार्तालाप



७०० डिजिटल सहभागी



१४ दिन



९१+ घंटे की विषय - सामग्री (कंटेंट)



४०+ वक्ता





## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



Jagriti Enterprise Centre added 4 new photos

26th December at 3:00pm



Jagriti Yatra ▶  
Participant  
Demography

### 500+ YATRIS

50%  
WOMEN

53%  
RURAL

30%  
SEMI-URBAN

17%  
URBAN



28  
STATES

6  
UTS

2.3%  
FOREIGN NATIONALS

14  
COUNTRIES



38%  
STUDENTS

31%  
EMPLOYED

16%  
ENTREPRENEURS

AVERAGE  
AGE

37Y 2M  
FACILITATORS

24Y 7M  
YATRIS

### 500+ डिजिटल प्रतिभागी

50%  
महिलाएं

53%  
ग्रामीण

30%  
निमशहरी

17%  
शहरी



28  
राज्य

6  
केन्द्र शासित प्रदेशों

2.3%  
विदेशी यात्री

14  
अलग देश



38%  
विद्यार्थी

31%  
नौकर पेशा

16%  
उद्यमी

औसतन  
उम्र

37Y 2M  
मार्ग दर्शक (फैसलिटेटर)

24Y 7M  
यात्री





Sunil Pangarkar  
सुनील पंगारकर

Jagriti Board Team  
Board Member

## RAIL TO DIGITAL

STORY OF JAGRITI  
YATRA'S JOURNEY

रेल से डिजिटल  
जागृति यात्रा  
की कहानी

We do not thank adversity enough. You will all relate to the story of Jagriti Yatra below. In this story I have taken the poetic liberty to make her a human just for storytelling and to shine a different light on adversity.

Let me start with a small flash back. In 1997, Shashank met Bharat Rail Yatra. The encounter was tough, tumultuous, thoroughly enjoyable, and definitely very impressionable. It took him more than 10 years to consummate the "dromance" (dream romance) into reality. After consummation he named her Jagriti. Life with Jagriti started with the dhamaka of 26/11, causing uncertainty and tension. But with full family support he charged on. Jagriti Yatra (her full name) was and still is an inspiring person. Its dharma is to inspire, spread positivity, connect people and to awaken the spirit of people she associates with. Meticulously, over 12 years she did that for 5400 young individuals and made a name for herself due to the uniqueness of the way in which she did it. It was a rail journey around India, with the RAIL part of the setting, dominating the story. So much so that, the spirit of what she was doing was deeply connected in her TRAIN body. So Jagriti Yatra and TRAIN became interchangeable in the minds of sponsors and the public.

Then in 2020 there was a "Kahani me twist". COVID-19 hit. Nobody had imagined or accounted for this. Dark clouds of uncertainty surrounded JY of 2020. No one knew as to when it would be safe for JY to do what she did each year.

Village elders met to discuss this issue. They announced that JY is a SHAKTI after all. The body through which it embodies in everyone, while very effective so far, is not the only way she can perform her dharma. At this dark time, she needed an

हम कठिनाइयों का शुक्रिया अदा नहीं करते हैं। आप जागृति यात्रा की कहानी के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बना सकते हैं। मैंने जागृति यात्रा की कहानी कहने और उसे विभिन्न कठिनाइयों से देखने के लिए काव्यात्मक स्वतंत्रता ली है। मैं छोटे फ्लैश बैक से शुरुआत करूंगा। वर्ष 1997 में, शशांक भारत रेल यात्रा से मिले। मुठभेड़ बहुत कठिन थी, लेकिन बेहद सुखद और निश्चित रूप से बहुत प्रभावशाली थी। "ड्रोमेंस" (ड्रीम/स्वप्न रोमांस) को वास्तविकता में लाने के लिए उसे 10 साल से अधिक का समय लगा। इसे साकार करने पर उन्होंने इसे जागृति कहा। जागृति के साथ जीवन शुरू हुआ और फिर हुआ 26/11 का धमाका, जिसके परिणामस्वरूप हर जगह अनिश्चितता और तनाव हो गया। लेकिन पूरे परिवार के सहयोग के साथ उन्होंने काम किया। जागृति यात्रा (उसका पूरा नाम) पहले और अब भी एक प्रेरणादायक व्यक्ति है। इसका धर्म लोगों को प्रेरित करना, सकारात्मकता फैलाना, साथ जोड़ना और उन लोगों की भावना को जगाना है जिनसे वह संबद्ध हैं।

पिछले 12 वर्षों में, बहुत ही सावधानी से उसने 5,400 युवाओं को प्रेरित किया है और अपने लिए अनोखे तरीके से खुद का नाम बनाया है। यह भारत के चारों ओर एक रेल यात्रा थी, जहाँ रेल सेटिंग का हिस्सा और पूरी कहानी पर हावी थी। इस हद तक कि, उसके कार्यों की भावना गहराई से जुड़ी हुई थी उसके ट्रेन शरीर के साथ।

फिर 2020 में "कहानी में ट्विस्ट" आया। COVID-19 हुआ। किसी के पास नहीं था कुछ इस तरह की कल्पना या विचार। इस अंधेरे समय में, उसे एक "अवतार" की आवश्यकता थी। इसलिए डिजिटल अवतार का जन्म अगस्त 2020 में हुआ।

बुजुर्ग बहुत ही वैचारिक थे। उन्हें इस बात का बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि अवतार कैसे प्रकट होगा। अवतार के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। इस प्रकार प्रायोजकों और लोगों के मन में जागृति यात्रा और ट्रेन दोनों ही विनिमय बन गये थे। अवतार के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई।





## RAIL TO DIGITAL

### STORY OF JAGRITI YATRA'S JOURNEY

### रेल से डिजिटल जागृति यात्रा की कहानी

her dharma. At this dark time, she needed an "Avatar". Hence the digital avatar was born in August 2020. The elders were very conceptual. They had no clue of how that avatar would present itself. The process of creation of the avatar began. Three types of folks were needed. The "design" experts, the "body" experts and "spirit" experts. Indian villagers like to debate, argue, explore, call before deciding. This is exactly what they did. Then a small team came up with the Body. They realized that in a "Workplace" body she will be effective. Elders realized that it was not going to be the same; so, they brought together all the design experts and the spirit experts who had done this 12 times in the Rail avatar. With this joint working was born Jagriti Digital Yatra. The avatar was to be appearing on 24th Dec.

No birth is painless, and when on 24th December, the avatar appeared, it too had some birthing pains. Parents, relatives, and technical staff scrambled that night and eventually pacified the newly born. Then the story of its delightful and energetic growth is known to you all. You have played with the cute lifeline phase in the early part, dealt with the tantrums and tardiness of adolescence, and the growing strains of BGT. But finally, you did experience the self-realization of your raison d'être.

That is the beauty of JY in any avatar, like the prana shakti she inspires and transforms all that it comes in contact with. She shakes them from the tamas of complacency to a sattvic spirit. The intense period of rajas before, during and after the Yatra is merely her modus operandi. In 2020, it taught us all – not only its Yatri, but its makers and protectors that in adversity is the seed for transformation.

For that we must bow to the opportunity to overcome adversity!  
Sunil Pangarkar

बन गए थे। अवतार के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। तीन तरह के लोगों की जरूरत थी। "डिजाइन" विशेषज्ञ, "शरीर" विशेषज्ञ और "आत्मा" विशेषज्ञ। भारतीय ग्रामीणों को निर्णय लेने से पहले, बहस करना पसंद है। और यही उन्होंने किया। फिर एक छोटी टीम बॉडी के साथ आई। उन्होंने महसूस किया कि एक "कार्यस्थल" शरीर में वह अधिक प्रभावी होगी। बड़ों को एहसास हुआ कि यह पहले जैसा नहीं होगा; इसलिए, उन्होंने सभी डिजाइन विशेषज्ञों और आत्मा विशेषज्ञों को एक साथ बुलाया जिन्होंने 12 बार पहले ऐसा किया था।

इस संयुक्त कार्य के साथ जागृति डिजिटल यात्रा का जन्म हुआ। अवतार को 24 दिसंबर को प्रदर्शित होना था। कोई भी जन्म कभी भी दर्द रहित नहीं होता है, और जब 24 दिसंबर को अवतार दिखाई दिया, तो यह कुछ बर्thing दर्द था। माता-पिता, रिश्तेदारों और तकनीकी कर्मचारियों ने उस रात हाथापाई की और आखिरकार नवजात को शांत कर दिया। वहाँ से इसकी रमणीय और ऊर्जावान वृद्धि की कहानी आप सभी को ज्ञात है। आपने पहले भाग में प्यारा जीवन रेखा चरण के साथ खेला है, किशोरावस्था के नखरे और दिलंबता से निपटा है, और बीजीटी के बढ़ते तनाव का अनुभव किया है। लेकिन आखिरकार, इसने अपने अस्तित्व के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य के आत्म-साक्षात्कार को महसूस किया।

यह किसी भी अवतार में जागृति यात्रा की सुंदरता है, प्राणशक्ति की तरह वह सभी के साथ संपर्क में आती है और इसे बदल देती है। वह उन्हें शालीनता के भाव से सात्विक भाव से हिलाती है। यात्रा से पहले, दौरान और उसके बाद के राज्यों की गहन अवधि केवल उसकी कार्य पद्धति है। 2020 में, इसने न केवल अपनी यात्री को सिखाया, बल्कि इसके निर्माताओं और संरक्षकों ने आयातकों को सबक दिया कि प्रतिकूलता में परिवर्तन का बीज है। इसके लिए हमें प्रतिकूलताओं को दूर करने के अवसर पर झुकना होगा!

सुनील पंगारकर





## ABOUT JAGRITI YATRA

Our Belief: Mobilize 'Middle of Diamond' Citizen Builders



### Jagriti Digital Yatra

26th December at 3:00pm

The program is designed on a 3I framework of 'Inspiration, Innovation, Incubation' to build high engagement and retention of digital participants.



### Jagriti Digital Yatra

26th December at 3:00pm

'3 I' (३ आई- 'इंस्पिरेशन, इनोवेशन, इन्क्यूबेशन') ढाँचे पर बनाये गए इस कार्यक्रम का निर्माण प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित और बनाये रखने के लिये किया गया।

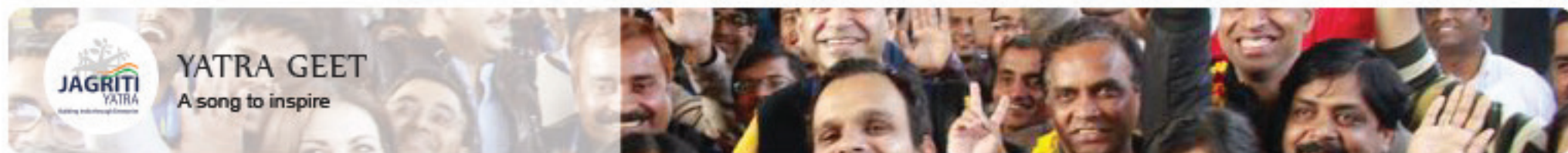






## YATRA GEET

A song to inspire



Jagriti Yatra is feeling proud  
with 576 Yatris

Kuchh badal raha, kuchh badlenge;  
Tab badlega, jab badlenge

Kuchh dekha hai, kuchh dekhenge;  
Kuchh likkha hai, kuchh likh denge...

Yaaron chalo! Badalne ki rut hai;  
Yaaron chalo! Sawarne ki rut hai

Hawa keh rahi tu theherna nahi;  
Gagan keh raha tu pighalna nahi  
Zameen keh rahi mujhko chhuke to dekh;

Arey ankhein mila, sach se darna nahi

Yaaron chalo! Badalne ki rut hai;  
Yaaron chalo! Sawarne ki rut hai.

Producer : Govind Pandey  
Composer :Late Aadesh Shrivastava  
Singer : Babul Supriyo  
Lyricist : Prasoon Joshi  
Choreography : Gauri Sharma Tripathi



Jagriti Yatra is feeling proud  
with 576 Yatris

कुछ बदल रहा, कुछ बदलेंगे  
तब बदलेगा, जब बदलेंगे;

कुछ देखा है, कुछ देखेंगे  
कुछ लिखा है, कुछ लिख देंगे..

यारों चलो ! बदलने की कुत है ..  
यारों चलो ! सवरने की कुत है ..

हवा कह रही है तू ठहरना नहीं  
गगन कह रहा है तू पिघलना नहीं;  
ज़मीन कह रही मुझको तू छूके तो देख

अरे आँखें मिला, सच से डरना नहीं..

यारों चलो ! बदलने की कुत है ..  
यारों चलो ! सवरने की कुत है ..

गोविंद पांडे निर्माता  
स्वर्गीय आदेश श्रीवास्तव संगीतकार  
बाबुल सुप्रियो गायक  
प्रसून जोशी गीतकार  
गौरी शर्मा त्रिपाठी कोरियोग्राफर



Jagriti Yatra is feeling proud  
with 576 Yatris

Some of the things are changing, and  
some we will change  
They will change only when we change;

Some of the things we have seen, some  
we will;  
Some of the things are written, some we  
will write;

Let's go friends, it's the season of change!  
Let's go friends, it's the season of better-  
ment!

The wind is asking us not to stop;  
The sky is asking us not to melt,  
The earth is asking us to touch and feel it;  
Look into my eyes, and don't fear the truth  
Let's go friends, it's the season of change!  
Let's go friends, it's the season of better-  
ment!



# Inspiration



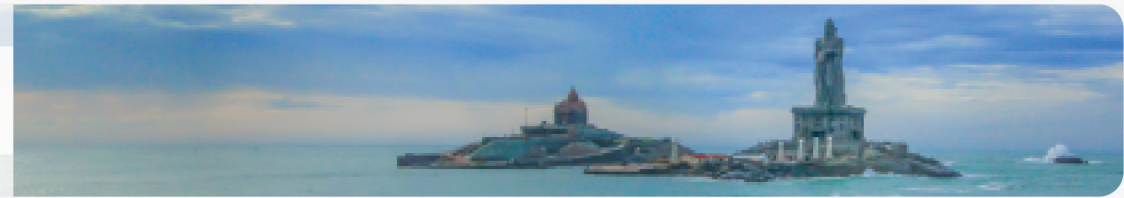
Digital Jagriti Yatra  
Participants





## In conversation with Makarand Paranjpe

Role Model



Makarand Paranjpe

"Institution building is very critical" - believes the director of the Indian Institute of Advanced Sciences. Makaranda Paranjpe, who has also authored the book 'Swami Vivekananda: Hinduism and India's Road to Modernity'. He compared the Jagriti Yatra to Swami's life as a parivrajak. He went on to say that the key themes of Jagriti Yatra deeply resonate with Swamiji's own mission, focus on youth and women. Quoting Swami Vivekananda, he said that football is better than the Geeta. He said that Swami Vivekananda's favourite statement came from the Kathopanishad 'Uttisthata Jagrata Prapya Barannibodhata' which means "Arise, awake, and stop not till the goal is reached".

He went on to quote many interesting thoughts and anecdotes from Swamiji's life. He told the anecdote about a letter which Swami Vivekananda wrote to his brother disciple on 19th March 1894 in which he recalled the time that he was in Kanyakumari, seeing the vision of India and writes that a country where millions of people live on the flowers of Mahua plant and a million or two Sadhus and a hundred million or so Brahmins suck the blood of these poor people without even the least effort for their amelioration, is that a country or hell? Is that a religion or the devil's dance? My brother, there is one thing that I want you to understand fully. I have travelled all over India and seen this country true. Can there be an effect without a cause? Can there be punishment without sin? And he quotes Vyasa. He says 'Sarva Shastra Puraneshu vasasya vachanam druvam. Paropakaraha punyaya papay parpeedanam', which means, serving others is a good deed, and hurting others is a sin. He said that Swamiji's mission was to raise the consciousness of Indians.

" किसी भी संस्थान का निर्माण अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य है" - ऐसा मानना है भारतीय विकास विज्ञान संस्थान ( इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस् साइंसेज ) के निदेशक, मकरंद परांजपे का । ध्यातव्य है कि परांजपे ने "स्वामी विवेकानंद: हिंदुत्व और भारत का आधुनिकता पथ" पुस्तक भी लिखी है। परांजपे ने अपने संबोधन में जागृति यात्रा की तुलना स्वामी जी के परित्राजक जीवन से की। उन्होंने कहा कि जागृति यात्रा की सोच एवं इसका कलेवर स्वामी जी के अपने लक्ष्यों से बेहद मिलते हैं। स्वामी जी का लक्ष्य- युवाओं और महिलाओं पर केंद्रित था। स्वामी विवेकानंद का उद्घारण देते हुए उन्होंने कहा कि उनका मानना था कि " फुटबॉल का खेल गीता से बेहतर है।" स्वामी विवेकानंद के पसंदीदा कथन का जिक्र करते हुए कहा कि यह कठोपनिषद् से आया है, 'उत्तिष्ठत जगत् प्राप्य वरान्निबोधत ' जिसका अर्थ है "उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"।

उन्होंने स्वामीजी के जीवन से जुड़े कई दिलचस्प विचार और कहानियों को यालियों से साझा किया। उन्होंने एक पल के बारे में एक किस्सा सुनाया जिसे स्वामी विवेकानंद जी ने अपने भाई की मृत्यु होने के कुछ समय बाद 19 मार्च 1894 को लिखा था, जिसमें उन्होंने कन्याकुमारी में रहते हुए उस समय को याद करते हुए भारत की अपनी परिकल्पना का जिक्र करते हुए लिखा था कि मेरे भाई! एक बात है जो मैं चाहता हूँ आप पूरी तरह से समझें। एक देश जहाँ लाखों लोग महुआ के फूलों पर जीवित रहते हैं और एक से दो लाख साधु और एक से दो लाख ब्राह्मण इन गरीबों का खून चूसते हैं, जो कि उनकी उन्नति के लिए कम से कम प्रयास भी नहीं करते हैं, वह देश है या नरक? वह धर्म है या शैतान का नृत्य? मैंने पूरे भारत भर की यात्रा की है और इस देश के सच को करीब से देखा है, क्या बिना कारण के कोई कार्य हो सकता है? क्या बिना पाप के सजा हो सकती है? व्यास को उद्धृत करते हुए वह कहते हैं - 'अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयं। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।' जिसका अर्थ है दूसरों की सेवा करना ही पुण्य अच्छा काम है और दूसरों को कष्ट पहुँचाना पाप है। सत्त के समापन में अपनी बात को पूर्णविराम देते हुए परांजपे ने कहा कि स्वामीजी का लक्ष्य भारतीयों को उनके ज्ञान का बोध कराना और उनकी अंतरात्मा को जाग्रत करना था।



## Dr. R. A. Mashelkar, the dangerous optimist

Role Model



Dr. R. A. Mashelkar

"I am a dangerous optimist," confessed Dr. R. A. Mashelkar, an eminent scientist who has played a key role in shaping policies regarding science and technology in India. The President of India honoured Dr. Mashelkar with Padma Vibhushan (2014), Padmabhushan (2000) and Padmashri (1991), three of the highest civilian honours, in recognition of his contribution to nation building.

His conversation with the yatri was energizing and inspiring, to say the least. As a scientist, he spoke about one of the most fundamental truths from his life experience –  $E=mc^2$ ; education shapes one's future. He highlighted the importance of learning from life experiences as well as from books. He encouraged all of us to re-look at our perception of failure by expanding F.A.I.L. as 'First Attempt In Learning'. When it comes to nation building, the journey from mind to market and idea to impact determines the success of the enterprise. "India is full of ideas; it is the execution that matters," he said underlining the marathon that is nation building. The confluence of innovation, compassion and passion must be the foundation and fuel of entrepreneurs. With simplicity and humour, he reminded us all that there is only instant coffee but not instant success!

"मैं एक अत्याधिक आशावादी हूँ," प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. आर. ए. माशेलकर ने इस बात को स्वीकारते हुए अपने संबोधन को शुरू किया। डॉ. माशेलकर ने भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संबंध में नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा डॉ. माशेलकर को, राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान की महत्ता स्वीकारता हुए, तीन सर्वोच्च नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया गया है- पद्म विभूषण (2014), पद्मभूषण (2000) और पद्मश्री (1991)।

यात्रियों के साथ उनकी वार्ता उत्साहजनक और प्रेरणादायक थी। एक वैज्ञानिक के रूप में, उन्होंने अपने अनुभवों से जीवन के सबसे मौलिक सत्य के बारे में बात की -

ई = एमएफ; शिक्षा ही आपके भविष्य को आकार देती है। उन्होंने जीवन के अनुभवों के साथ-साथ पुस्तकों से सीखने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने हम सभी को विफलता की हमारी धारणा को एक अलग नजरिए से देखने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा F.A.I.L. का विस्तार "फर्स्ट एटेम्प्ट इन लर्निंग" या "सीखने का पहला प्रयास" होता है। जब राष्ट्र निर्माण की बात आती है, तो अपने विचारों का बाज़ार तक पहुंचना और बदलाव लाने की यात्रा ही उद्यम की सफलता को निर्धारित करती है। "भारत विचारों से भरा है; इसका निष्पादन है जो मायने रखता है।" उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण की यात्रा एक मैराथन है। नवाचार, करुणा और जुनून का संगम उद्यमियों की नींव और ऊर्जा होनी चाहिए। सादगी और हास्य से भरे खुशनुमा माहौल में उन्होंने हम सभी को याद दिलाया कि एक क्षण में केवल कॉफी तैयार हो सकती है, सफलता नहीं मिल सकती। सफलता के लिए हमें अनवरत मेहनत करनी पड़ती है।





## Pradeep Lokhande, The library man of India

Role Model



Pradeep Lokhande

Social entrepreneur and founder of Rural Relations, Mr. Pradeep Lokhande is known as the **Library Man of India**. Fostering the use of Information Technology in villages, he established several successful projects with the help of Non-Resident Villagers (NRV), Gyan-Key Library (**3,640 libraries in rural secondary schools in 1,390 working days**) and VillagewiKY (**information about 43,033 villages in 481 days**) which improved the lives of many.

Addressing the yatriks over Zoom did not dampen Mr. Lokhande's exuberance one bit. His brief yet impactful talk successfully provided a dangerously optimistic picture of rural India. Facts and statistics were at his fingertips and showed the possibilities and potential of rural landscape.

- There are **700 districts** and **65 lakh** villages in India
- **6 lakh** outlets in rural India
- **5 lakh** villages have all season roads
- **6 lakh** villages have electricity
- India has the largest elementary education system in the world
- **8.5 lakh** women council members, with potential to become village Sarpanch
- **Rs. 34,000 Cr** being spent by CSR to build infrastructure in rural India

Mr. Lokhande shared the success mantra for entrepreneurs – being accountable, answerable, following up and taking feedback. He also underlined the criticality of focusing on the “need” of the people and not the demand as perceived by the entrepreneur.

प्रदीप लोखंडे जिन्हें हम भारत के लाइब्रेरी मैन के रूप में जानते हैं, एक सामाजिक उद्यमी और ग्रामीण संबंधों के संस्थापक हैं। गाँवों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देते हुए, उन्होंने गैर-निवासी ग्रामीणों (NRV) के साथ मिलकर कई सफल परियोजनाओं की स्थापना की जैसे ज्ञान-कुंजी पुस्तकालय (ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में ३,६४० पुस्तकालय १,३९० दिनों में) और ग्रामविकी (इसमें ४३,०३३ गाँवों के बारे में जानकारी है, ४८१ दिनों में पूरा किया), इन कार्यों ने कई लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है।

ज़ूम एप्लिकेशन पर यात्रियों को संबोधित करने पर भी श्री लोखंडे के उत्साह में एक प्रतिशत भी कमी नहीं आई। उनकी एक संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली बातचीत ने ग्रामीण भारत की एक अत्याधिक आशावादी तस्वीर को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। ग्रामीण परिदृश्य की संभावनाओं और क्षमता को दर्शा रहे तथ्य और आँकड़े मानो उनकी उंगलियों पर थे।

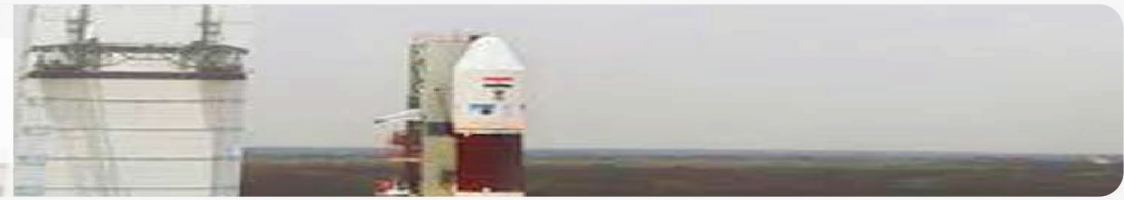
- (1) भारत में कुल ७०० जिले और ६५ लाख गाँव हैं।
- (2) ग्रामीण भारत में ६ लाख दुकानें हैं।
- (3) ५ लाख गाँव में सभी मौसमों के अनुरूप सड़कें हैं।
- (4) ६ लाख गाँव में बिजली की सुविधा है।
- (5) भारत में दुनिया की सबसे बड़ी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली है।
- (6) ४.५ लाख महिला परिषद सदस्य हैं जिनमें ग्राम सरपंच बनने की संभावना है।
- (7) सीएसआर द्वारा ग्रामीण भारत में बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए ३४,००० करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

श्री लोखंडे ने उद्यमियों के लिए सफलता के मंत्र साझा किए - जिम्मेदार बनो, जवाबदेह बनो, और ग्राहक से जानकारी लेते रहो। इसके साथ ही उन्होंने लोगों की “आवश्यकता” पर ध्यान केंद्रित करने को रेखांकित किया है ना कि उद्यमी द्वारा बताई गई मांग को।



Dr. Chidambaram (ISRO)

Sustainable Development and Creating a Knowledge-Economy  
Role Model



Dr. Chidambaram

Dr. Chidambaram took us on a virtual journey to Sriharikota, a place where the Indian space dreams turn to reality. The session focused on the country's scientific advancement in sustainable development and creating a knowledge economy.

In his own humble way, Dr. Chidambaram enlightened us about the various ways space and nuclear technologies touch our lives. The communication satellites' networks made it possible for us to be digitally connected during the ongoing pandemic. In addition to this, several applications of these technologies support our needs in agriculture, disaster management, search and rescue operations, weather forecasting, diagnosis and treatment of cancer and several other diseases, etc.

Dr. Chidambaram defined sustainable development as "development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs." To aid this goal, he focussed on the usage of low carbon energy technologies.

Drawing examples from the lives of several great leaders and thinkers, he emphasized the importance of self-belief, character, risk-taking, and passion for working to realize dreams. He stressed the importance of the democratization of knowledge by making citizens of the country empowered. In his own words, "When a team completes a project with a great leader, every member of the team feels that he/she did it." And that makes all the difference!

डॉ. चिदंबरम हमें श्रीहरिकोटा की एक आभासी यात्रा पर ले गए, एक ऐसी जगह जहाँ भारतीय अंतरिक्ष के सपने हकीकत में बदल जाते हैं। सतत विकास में देश की वैज्ञानिक प्रगति और एक ज्ञान अर्थव्यवस्था बनाने पर केंद्रित था।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना 1969 में भारत सरकार द्वारा की गई थी ताकि मनुष्य और समाज की वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभ का उपयोग किया जा सके। अपने स्वयं के विनम्र तरीके से, डॉ. चिदंबरम ने हमें बताया कि विभिन्न तरीकों से अंतरिक्ष और परमाणु तकनीक हमारे जीवन को छूते हैं। संचार उपग्रहों के नेटवर्क ने हमारे लिए डिजिटल रूप से जुड़ा होना संभव बना दिया है, अभी चल रही महामारी के दौरान भी शारीरिक दूरी को सामाजिक दूरी नहीं बनने दिया। इसके अलावा, इन प्रौद्योगिकियों के कई अनु-प्रयोग हैं जैसे कृषि, आपदा प्रबंधन, खोज और बचाव कार्य, मौसम के पूर्वानुमान, निदान व कैंसर और कई अन्य बीमारियों के उपचार आदि।

डॉ. चिदंबरम के अनुसार सतत विकास वह है जहां भविष्य की पीढ़ियों की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है। सतत विकास को सच बनाने के लिए उन्होंने निम्न कार्बन ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया। उनके अनुसार, प्रति व्यक्ति बिजली की खपत और महिला साक्षरता हमारे देश के लिए दो प्रत्यक्ष विकास उपाय हैं।

कई महान नेताओं और विचारकों के जीवन से उदाहरण लेते हुए, उन्होंने सपनों को साकार करने के लिए आत्मविश्वास, चरित्र, जोखिम उठाने की क्षमता और काम करने के जुनून पर जोर दिया। उन्होंने देश के नागरिकों को सशक्त बनाकर ज्ञान के लोकतंत्रीकरण के महत्व पर बल दिया। इस पहलू में समुदाय की भागीदारी महत्वपूर्ण है, क्योंकि लोग विकास में योगदान देते समय अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। एक अच्छे नायक का गुण उन्होंने यह बताया कि "एक महान नायक के साथ जब एक दल कोई परियोजना को पूरा करता है, तो दल के प्रत्येक सदस्य को लगता है कि उस सफलता में उसकी भी भागीदारी है। और इस विचार का बहुत महत्व है!"





## Dr. Kurush Dalal – Importance of history

Role Model



Dr. Kurush Dalal

Dr Kurush Dalal is an archaeologist, historian, food anthropologist and raconteur. He is the Director of the School of Archeology, INSTUCEN and Consulting Editor of Live History India on issues pertaining to Archaeology, Culinary Anthropology, History and Art History.

"You will be in awe when you visit Nalanda University," said Dr. Dalal and shared the rich and tragic history. For almost 700 years, Nalanda was the most important centre of learning in South Asia created and sustained by Buddhists. People from all over the world, from China, Korea, Sri Lanka, Thailand, Java came to study at Nalanda.

- Education, food and shelter was free at Nalanda.
- 200 villages surrounding Nalanda were also part of the University.
- Nalanda was destroyed three times.
- 1500 years of knowledge at the library was destroyed by fire which burned for months.

History is not about who killed whom, why and when; it is about the people and the message they had for us. "We all want to know where we are going, to know that we have to know where we are. To know where we are, we should know where we come from." This beautifully summed up the value of knowing history. "Dream big and believe in yourself. Only you can be the change. Learn to take responsibilities for your action," was his message for the yatriis.

डॉ. कुरुष दलाल एक पुरातत्वविद्, इतिहासकार, खाद्य मानवविज्ञानी और एक शानदार कहानीकार हैं। वह स्कूल ऑफ़ आर्केओलोजी, INSTUCEN के निर्देशक हैं और पुरातत्व, पाक शास्त्र नृविज्ञान, इतिहास और कला इतिहास से संबंधित मुद्दों पर लाइव हिस्ट्री इंडिया के परामर्श संपादक भी हैं। "जब आप नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा करेंगे तो आप चौकन्ने हो जायेंगे।" डॉ. दलाल ने यह कहा और नालंदा के समृद्ध और दुखद इतिहास को साझा किया। लगभग ७०० वर्षों तक, नालंदा दक्षिण एशिया में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था जो गुप्ता राजाओं द्वारा बनाया व बौद्धों द्वारा संभाला जाता था। चीन, कोरिया, श्रीलंका, थाईलैंड, जावा से विद्यार्थी नालंदा में अध्ययन करने आते थे।

नालंदा में शिक्षा, भोजन और आवास की सुविधाएँ मुफ्त थीं। वहाँ के आसपास के 200 गाँव भी विश्वविद्यालय का हिस्सा थे। नालंदा को तीन बार नष्ट किया गया।

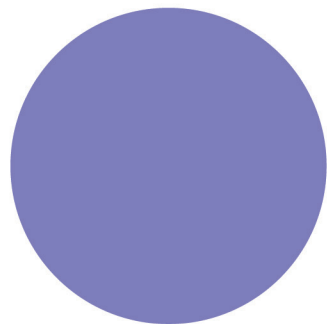
१५०० साल का ज्ञान जो पुस्तकालयों में था, वह आग से नष्ट हो गया और कई महीनों तक जलता रहा।

इतिहास का महत्व इसमें नहीं है कि किसने किसको, क्यों और कब मारा बल्कि उनके संदेश में है जो वह हमारे लिए छोड़ गए। बड़ी खूबसूरती से इतिहास जानने के मूल्य को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि "हम सभी जानना चाहते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं, और इसके लिए हमें जानना होगा कि हम कहाँ हैं | लेकिन यह जानने के लिए कि हम कहाँ हैं, हमें पता होना चाहिए कि हम कहाँ से आते हैं।" सभी यात्रियों के लिए उनका आखिरी संदेश था कि "बड़े सपने देखें और खुद पर विश्वास रखें। आप ही बदलाव का स्रोत हैं। अपने करनी की ज़िम्मेदारियाँ स्वयं लेना सीखें" | इस संदेश के साथ उन्होंने हम से विदा ली।



## Madhusudan and Diken - Holding the Gandhian torch high

Role Model



Madhusudan bhai and  
Diken Bhai

The last digital stop took us to Sabarmati Ashram (amдав) where the journey to build India began by the father of the nation, fondly known as Bapu and worldly known as; Mahatma Gandhi. The session was inspired by changemaker volunteers at the ashram; Madhusudan Agrawal and Diken Patel.

Madhusudan talked about his involvement in an initiative 'Safai Vidyalaya' for 10 years which was led by the toilet man of India - Ishwarbhai Patel. He educated people in semi-urban areas about various aspects and the necessity of sanitation in India further expanding to various sectors like education, nutrition to bring a holistic change in people's life.

Diken Patel shared his views on how simple and joyful it is to add 'quality' to every action we perform in day to day life. He spoke about; 'Clowning Project' which was launched to bring laughter to children fighting with cancer.

Taking the talk ahead he introduced 'Jail University' which is inspired by a thought that; "Every person out there is a bank of life learnings, knowledge, and it depends upon an individual on how to harness it and apply it in their daily life".

When asked by digital yatriis about their ideas on entrepreneurship they replied; "The driving force behind any entrepreneur is 'Antar Prerna' (self-inspiration), whatever work one does should be self-driven and that is the key to sustainable and successful entrepreneurship."

जागृति डिजिटल यात्रा का अंतिम पड़ाव हमें साबरमती आश्रम (अमदावाद) ले गया। यह वही स्थान है जहाँ भारत के निर्माण की यात्रा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के द्वारा शुरू की गई थी। इस सत्र में हमें आश्रम के दो स्वयंसेवकों ने संबोधित किया: मधुसूदन अग्रवाल और डिकेन पटेल।

श्री मधुसूदन ने ईश्वर भाई पटेल, जो 'टॉयलेट मैन' के नाम से प्रसिद्ध हैं, के नेतृत्व में चल रहे 'सफाई विद्यालय' से जुड़े होने के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कैसे उप शहरी क्षेत्रों में उन्होंने स्वच्छता की आवश्यकता के बारे में लोगों को शिक्षित किया। लोगों के जीवन में संपूर्ण परिवर्तन लाने के लिए उन्होंने इस मुहिम को शिक्षा अथवा पोषण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विस्तारित किया।

डिकेन पटेल ने बताया कि कैसे हम हर दिन करने वाली प्रत्येक क्रिया में सरल तरीकों से गुणवत्ता ला सकते हैं। उन्होंने अपने 'क्लाउनिंग प्रोजेक्ट' (विदूषक योजना) के बारे में बताया जिसका मकसद था कैसर से लड़ रहे बच्चों को हँसाना, ताकि वे अपना दर्द भुला सकें।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 'जेल विश्वविद्यालय' से हम सबको परिचित करवाया। जेल विश्वविद्यालय एक विचार से प्रेरित है कि 'प्रत्येक व्यक्ति जीवन के ज्ञान से सराबोर खज़ाना है और वह स्वयं उत्तरदायी है कि कैसे इसका उपयोग कर अपने जीवन और जीवित लक्ष्यों में सुधार ला सके"।

उद्यमशीलता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि "किसी भी उद्यमी की प्रेरक शक्ति 'अंतःप्रेरणा' (आत्म-प्रेरणा) है, हम जो भी काम करें वह आत्म-चालित होना चाहिए और यही स्थायी और सफल उद्यमशीलता की कूजी है।"





With the multitude of applications, we can't imagine a food delivery service which functions without technology. However, Mumbai's Dabbawalas will take you by surprise. They deliver over 2,00,000 meals a day and have been doing so for the past 130 years. In 4 hours, they deliver home-cooked meals to people at work. They have an intricate yet tech free system in place for the execution of this mammoth task.

How many men does it take to deliver these meals? There are about 2.4 million manual movements in transit. This organisation hires over 5000 people and most of them haven't received a formal education. They use an alphanumeric coding system to identify and differentiate the dabbas (tiffin boxes), locations and the Dabbawala who would handle that delivery.

Since 1890, their mission has been to always deliver on time. Transportation of the dabbas takes place via the popular local train of Mumbai and the bikes which the men ride.

Case studies by prestigious institutions like Harvard Business School have depicted how efficient this system is, and it has received various certifications like the Six Sigma. The organisation is creating a social impact, too. Office-going Mumbaikars couldn't carry lunch boxes in the bustling local trains. This was the laser-focussed problem statement, and the Dabbawalas provided a simple solution.



Mumbai Dabbawalas  
at Jagriti Yatra

आज के तकनीकी युग में अनगिनत एप्लिकेशन मौजूद हैं जो घर बैठे हम तक खाना पहुंचा रहे हैं लेकिन मुम्बई के डब्बावाले बिना तकनीक के इस्तेमाल से आपको लंच पहुंचाकर अचंभित कर देंगे।

वह पिछले 130 वर्षों से प्रतिदिन लगभग 2 लाख टिफिन 4 घंटे के अंदर घर से कार्यस्थल तक पहुंचाते हैं। इस महनीय कार्य को करने के लिए यह तकनीक रहित मानवीय कौशल एवं श्रम आधारित प्रणाली काम में लेते हैं।

लंच पहुंचाने के इस कार्य में कितने आदमी लगते हैं?

मुम्बई डब्बावाला संस्था लगभग 5 हजार लोगों को नियुक्त करती है। गौर करने लायक बात यह है कि इनमें से ज्यादातर औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं हैं। यह संस्था एक अक्षरांकीय कोडिंग प्रणाली का प्रयोग कर डब्बा एवं स्थान की पहचान करते हैं।

1890 ई. से ही वह समय से खाना पहुंचाने का ध्यान रखते हैं। इस कार्य को करने के लिए वह प्रख्यात मुम्बई लोकल और साइकिल का प्रयोग करते हैं।

मुम्बई डब्बावाला की कार्य प्रणाली हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के शोध व अध्ययन का विषय रही है। सबसे खास बात यह है कि डब्बावाला एक सिक्स सिग्मा प्रमाणित संस्था है। इस संस्था का सामाजिक प्रभाव भी कम नहीं है। दफ्तर पेशा मुंबईकर जो अत्यधिक भीड़ के कारण अपने डब्बे दफ्तर ले जाने में अक्षम थे उनकी इस परेशानी को दूर करने के लिए डब्बावाला एक उपाय बनकर सामने आए। मुम्बई जैसे शहर में नौकरीपेशा लोगों को घर का भोजन उपलब्ध कराने को डब्बावाला ने एक मिशन के तौर पर लिया और तब से लेकर आजतक इसी पर केंद्रित हैं।





## The Vision Factory: Aravind Eye Care

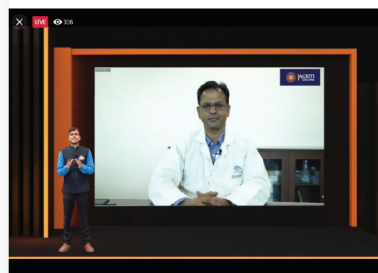
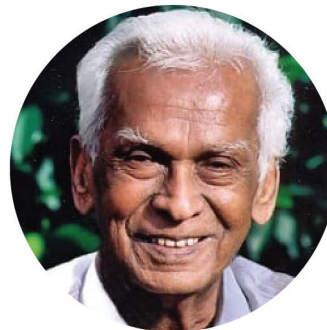
Role Model. Madurai. Day 3



Aravind Eye Care came up in Madurai with a vision to "eliminate needless blindness" by G Venkataswamy 44 years ago. Aravind Eye Care has performed 4 million treatments and 4 lakh operations at fraction of the cost. Aravind Eyecare's value systems have been core driving principles which allow them to provide eye care at such large scale. The enterprise has also been dynamic to evolve with the times. They started manufacturing Intraocular lenses in-house to reduce costs of procuring them.

Their model has provided free and subsidised eye care to 47% of all of their patients through cross-subsidisation where the paying patients also pay for two free/ highly subsidized patients. Aravind Eye Care, not only provides treatment in their hospitals, but they also host camps in villages, bring people in-house to perform surgeries and send them back with better eyes and many more smiles.

As his closing remarks, Dr Aravind, nephew of G Venkataswamy and the current Director at Aravind Eye Care, asked all the Yatri's to begin with, start something small and steady and not to run behind volume and speed, rather focus on endurance, self-sustenance and quality. He also mentioned that without a track record it's difficult for people to trust any enterprise. The lack of trust is something we must take positively as it is this scepticism that keeps us rooted to our cause.



Aravind Eye Care  
at Jagriti Yatra

जी. वेंकट स्वामी ने ४४ वर्ष पहले, मदुराई में, अरविंद आई केयर की नींव बनाई। उनका एक ही मिशन था - "अनावश्यक अंधेपन को खत्म करना"। अरविंद आई केयर ने अभी तक चालीस लाख (४ मिलियन) उपचार और ४ लाख ऑपरेशन किए हैं और वो भी वास्तविक लागत के एक अंश पर। अरविंद आई केयर अपने मूल्यों और सिद्धांतों के वजह से ही इतने बड़े पैमाने पर आंखों की देखभाल प्रदान कर पाता है।

यह उद्यम गतिशीलता-पूर्वक समय के साथ विकसित हुआ है और इनोवेशन भी दर्शाया है। इसका एक उदाहरण यह है की उन्होंने स्वयं ही इंद्राओकुलर लेंस का निर्माण शुरू कर दिया ताकि लागत कम कर पाए।

उनके मॉडल ने क्रॉस-सब्सीडी के माध्यम से अपने सभी रोगियों को ४७% तक मुफ्त और रियायती कीमत पर आंखों की देखभाल प्रदान की है। इस क्रॉस-सब्सीडी के तहत भुगतान करने वाले मरीज़ दो मुफ्त अथवा अत्यधिक सब्सिडी वाले रोगियों के लिए भुगतान करते हैं। अरविंद आई केयर, अपने अस्पतालों में उपचार प्रदान करने के साथ-साथ, गाँवों में भी शिविर आयोजित करता है। इन शिविर में जिन लोगों को सर्जरी की ज़रूरत होती है, उन्हें अस्पताल वापस लाया जाता है। यह मरीज़ बेहतर आंखों और बहुत मुस्कान के साथ घर वापस जाते हैं।

उनकी समापन टिप्पणियों के रूप में, जी वेंकट स्वामी के भतीजे और अरविंद आई केयर के वर्तमान निर्देशक, डॉ. अरविंद ने सभी यात्रियों से कहा, "कुछ छोटी और स्थिर शुरुआत करें और मात्रा और गति के पीछे न भागे, बल्कि धीरज, आत्म-जीविका और क्वालिटी पर ध्यान दें।" उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड के बिना लोगों के लिए किसी भी उद्यम पर भरोसा करना मुश्किल है। विश्वास की कमी एक ऐसी चीज है जिसे हमें सकारात्मक रूप से लेना चाहिए क्योंकि यह संदेह ही है जो हमें अपने मूल कारण से जोड़े रखता है।





## Lighting up the world: SELCO

Role Model. Bengaluru. Day 4

The World Bank said that solar energy will not be able to do anything for the poor of India. SELCO demystified this by successfully adopting a business model which many other countries in the world are trying to replicate.

SELCO was built on the premise to decentralize services as that leads to removal of poverty but more so, it democratizes the thought process, creating more entrepreneurs and innovators from so called non inclusive classes.

Founder Harish Hande, winner of the 2011 the Ramon Magsaysay award, said that just by providing light, they are trying to build a nurturing ecosystem for underserved communities. He pondered if light could be a currency for change! He further added that too much centralization leads to killing of aspirations of millions.

Can a democratic ecosystem be created using sustainable energy to decentralize everything else so that kids in all the rural areas of the world get the same opportunity as those in urban areas?

His message was- good finance in not for profit can actually achieve the same results as a for profit organization as long as when you sell services to the poor the entire ecosystem is right. He believes that an enterprise is a part of the society and society is a part of the enterprise.



Founder Dr. Harish Hande  
at Jagriti Yatra

विश्व बैंक ने एक बार कहा था कि सौर ऊर्जा भारत के गरीबों के लिए कुछ भी नहीं कर पाएगी। सेल्को ने सौर ऊर्जा के इस बिज़नेस मॉडल को सफलतापूर्वक अपना कर इस झूठ को ध्वस्त कर दिया और आज इस मॉडल को दुनिया के कई अन्य देश दोहराने की कोशिश कर रहे हैं।

सेल्को का निर्माण सेवाओं के विकेंद्रीकरण के आधार पर किया गया था क्योंकि इससे गरीबी दूर होती है, लेकिन इसके अलावा, यह सोची-समझी प्रक्रिया का लोकतंत्रीकरण करता है, जिससे तथाकथित समावेशी वर्ग के अधिक उद्यमी और नवप्रवर्तनकर्ता पैदा होते हैं। सेल्को के संस्थापक श्री हरीश हांडे, जिन्हें सन 2011 में रेमन मैगसेसे पुरस्कार दिया गया था, कहते हैं कि हम सिर्फ प्रकाश प्रदान करके वंचित समुदायों के लिए पोषण तंत्र का निर्माण कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले समय में प्रकाश परिवर्तन के लिए एक मुद्रा हो सकता है!

उन्होंने आगे कहा कि बहुत अधिक केंद्रीकरण लाखों लोगों की आकांक्षाओं को मार सकता है। क्या सब कुछ विकेंद्रीकृत करने के लिए स्थायी ऊर्जा का उपयोग करके एक ऐसे लोकतांत्रिक पारिस्थितिकी तंत्र को बनाया जा सकता है जिससे दुनिया के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को शहरी क्षेत्रों में बच्चों के समान अवसर मिल सके?

उनका संदेश था - लाभ के लिए अच्छा वित्त वास्तव में लाभ संगठन के लिए समान परिणाम प्राप्त कर सकता है जब तक आप गरीबों को सेवाएं बेचते हैं, संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र सही है। उनका मानना है कि एक उद्यम समाज का एक हिस्सा है और समाज उद्यम का एक हिस्सा है।





## Never ending food providers: Akshaya Patra

Role Model. Visakhapatnam. Day 6



We Become what we eat, that's why sustainable farming. – Ijaz

I will make India corruption free. – Aishwarya

My father is a superhero, I only want to help him. – Shravani

A bowl of 'Payasa' is like a luxury for them. – Leelavati

The numerous awards that now decorate the school office are a testimony to this. - Ismail Malik  
These are some of the quotes of students and teachers who are the beneficiaries of the midday meal program by Akshaya Patra.

With a premise that the mind can take a great leap with a full stomach, Akshaya Patra has been concerting all its efforts towards providing fresh and nutritious meals to children on every single school day since 2000.

Shridhar Venkat, the CEO of Akshaya Patra, recounting its journey and growth said that we should give what is acceptable and palatable to our beneficiaries. He said that if he were to describe Akshaya Patra as a person then she has a mind of a corporate and heart of a not for profit.

He said that the foundation has utilized technology to cook large amounts of meals. He summed up the reasons for success of Akshaya Patra as, focus, implementing frugal innovations to scale up, denominator mind set, and lateral hiring mindset.



CEO Sridhar Venkat  
at Jagriti Yatra

हम जो खाते हैं, वैसे ही हम बनते हैं; इसलिये खेती शाश्वत (सस्टेनेबल) होनी चाहिये। -एजाज

मुझे भारत को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाना है। -ऐश्वर्या

मेरे पापा सुपर हीरो हैं, मैं सिर्फ उनकी मदद करना चाहती हूँ। -श्रावणी

खीर की एक कटोरी उनके लिए लक्झरी है। -लीलावती

स्कूल ऑफिस को निहारनेवाले ये कुछ पुरस्कार गवाही देते हैं। -इस्माइल मलिक

ये उन अध्यापिकाओं और छात्रों के उदाहरण हैं, जो अक्षय पात्र के 'मिड-डे मील' (दोपहर का खाना) प्रोग्राम के लाभार्थी हैं। "यदि पेट भरा होगा, तो दिमाग तेज़ दौड़ेगा" इस बात को ध्यान में रखते हुए साल २००० से अक्षय पात्र की पूरी कोशिश है की बच्चों को हर रोज़ ताज़ा और पौष्टिक खाना मिले।

श्रीधर वेंकट, जो अक्षय पात्र के मुख्य कार्य पालक अधिकारी (CEO) है, उन्होंने अपने विकास पूर्ण सफर के बारे में बताते हुए कहा की हमे लाभार्थियों को वही देना चाहिये, जो उनको लिए स्वीकार्य एवं सुहावना है। आगे उन्होने कहा की, अगर अक्षय पात्र एक इंसान है; तो उसका दिमाग व्यापारी का हो, लेकिन दिल मुनाफ़ाखोर का ना हो। उन्होने ये भी बताया की इस संस्था ने बहुत बड़ी मात्रा में खाना बनाने के लिये टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया है।

अंत में उन्होने अक्षय पात्र के सफलता के कारण बताये - ध्यान काम पर केंद्रित होना, आगे बढ़ने के लिये कम खर्च वाले संसाधनों का उपयोग करना, परिणाम के बारे में सोचने वाले तथा अनुभवी लोगों को काम पर रखना।

अतिरिक्त जानकारी-

१३ लाख से भी ज़्यादा बच्चों को रोज़ खाना दिया जाता है।

हर रोज़ औसत ४०० टन खाना बनाने के सामान का प्रबंध किया जाता है।

५२ रसोई घर - जिनमें से ५० केंद्रीकृत (सेंट्रलाइज्ड) हैं, अब तक केवल २ रसोई घर का विकेंद्रीकरण (डीसेंट्रलाइज़ेशन) हुआ है।

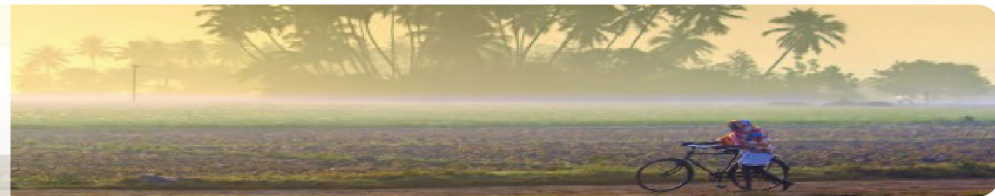
एक किचन की क्षमता १ लाख भोजन बनाने की है, जहाँ ७ टन अनाज, ५ टन दाल एवं ५ टन दूध (और दुग्धजन्य चीज़ें) आती हैं।





## Working the grass root: Gram Vikas

Role Model. Ganjam. Day 7



Southern part of Odisha needs rural development in which education, health, rural power, livelihood, food safety and local environment play a very important role. And it needed a local solution.

Recipient of many prestigious national and international awards, Joe Madiath, the founder of Gram Vikas, has been conscious of social inequality since his childhood.

Joe Madiath recounted how in 1971 he led a group of volunteers to start relief work for the people of cyclone ravaged Odisha. They continued to work towards restoring livelihoods by implementing improvements in irrigation for agriculture. They eventually started addressing areas of immediate concern like sanitation, ill-health and illiteracy, which led to the birth of Gram Vikas in 1979. Since then Gram Vikas has worked relentlessly to empower rural communities by directly engaging with them and ensuring the participation of all households in the communities for their projects.

Libi Johnson, CEO of Gram Vikas said that over the years of working in rural Odisha they have realised that the digital solutions are insufficient, there is requirement for actual solutions on ground.

He then spoke about the work Gram Vikas has been doing and how they partner with the rural population, taking input from them about the current need. Like in the 80s they worked on biogas and later in 90s on human waste management because that led to water borne diseases.

# Gram Vikas



Founder Joe Madiath  
at Jagriti Yatra

" किसी भी संस्थान का निर्माण अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य है" - ऐसा मानना है भारतीय

ओडिशा के दक्षिणी हिस्से को ग्रामीण विकास की आवश्यकता है जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण शक्ति, आजीविका, खाद्य सुरक्षा और स्थानीय वातावरण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। और इसके लिए स्थानीय समाधान की जरूरत थी।

कई प्रतिष्ठित राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता, ग्राम विकास के संस्थापक, जो मदियथ बचपन से ही सामाजिक असमानता के प्रति सचेत रहे हैं।

जो मदियथ ने बताया कि कैसे 1971 में उन्होंने सुनामी ग्रस्त ओडिशा में तबाह हुए लोगों के लिए राहत कार्य शुरू करने के लिए स्वयंसेवकों के एक समूह का नेतृत्व किया। उन्होंने कृषि के लिए सिंचाई में सुधार लागू करके आजीविका बहाल करने की दिशा में काम करना जारी रखा। उन्होंने अंततः स्वच्छता, अस्वस्थता और अशिक्षा जैसे तत्काल चिंता के क्षेत्रों में कार्य करना शुरू कर दिया, और फिर 1979 में 'ग्राम विकास' का जन्म हुआ और तब से 'ग्राम विकास' ने ग्रामीण समुदायों को सीधे तौर पर सामिलित करते हुए और सभी अपनी परियोजनाओं में समुदायों और गृहस्थों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए लगातार काम किया है।

'ग्राम विकास' के सीईओ लीबी जॉनसन ने कहा कि ग्रामीण ओडिशा में काम करने के वर्षों में उन्होंने महसूस किया है कि डिजिटल समाधान अपर्याप्त हैं, जमीनी स्तर पर वास्तविक समाधान की आवश्यकता है।

इसके बाद उन्होंने 'ग्राम विकास' ने ग्रामीण आबादी के साथ कैसे काम किया, इस बारे में बात की, जैसे 80 के दशक में उन्होंने बायो-गैस पर और बाद में 90 के दशक में मानव अपशिष्ट प्रबंधन पर काम किया क्योंकि इससे जल जनित बीमारियाँ होती थीं।





## The Clothing Revolution: Goonj

Role Model. Dehli. Day 11



Consumerism seems to be the mantra of urbanites. This leads to a lot of urban discard which when rightly used becomes a gold mine to fulfill many needs of the underprivileged.

Goonj has successfully promoted circular economy by ensuring maximum use of each material. Founded by Anshu Gupta, who is popularly known as the 'Clothing Man', Goonj offers a sustainable economic model for eliminating poverty and related issues.

Recipient of many prestigious national and international awards, Anshu Gupta spoke to the Yatris about Goonj and its many initiatives.

Some of the highlights of Anshu Gupta's talk with Yatris are:

- The people who migrate in search of work are able to accumulate almost nothing.
- He has tried to instill a behavioral change in attitude by calling it giving something you don't need anymore and not calling it donation.
- He saw disasters as an opportunity to understand the needs of the community better and also empowered them to build better using local skill and materials.
- Labour, skills, wisdom are all currencies in their own way and money is not the only one. GDP for Goonj is Giving, Development and People.
- Clothes have become an issue of dignity more than a protective cover. It is time we change our lenses and value people for their worth, not their garbs.

## गूँज.. GOONJ.. a voice, an effort



Founder Anshu Gupta  
at Jagriti Yatra

उपभोक्तावाद शहर के लोगों के लिए एक मंत्र सा बन गया है। इसकी वजह से काफी चीजें खरीदी और बाद में फेंकी जाती हैं। इस रद्दी का अगर हम सही इस्तेमाल करें; तो ये एक सोने की खान जैसा होगा जो जरूरतमंदों की काफी सारी जरूरतें पूरी करेगा।

गूँज ने ऐसे सब सामान और चीजों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करते हुए वृत्तीय अर्थव्यवस्था (सर्क्युलर इकॉनॉमी) को बढ़ावा दिया है। अंशू गुप्ता (जो 'क्लोदिंग मैन' के नाम से मशहूर हैं) द्वारा स्थापित की गयी ये संस्था टिकाऊ अर्थव्यवस्था का एक उत्तम उदाहरण है, जो गरीबी और उससे जुड़ी समस्याओं का निवारण करने में मददगार साबित होगा।

अंशू गुप्ता ने ( जिन्हें देश और विदेश में भी कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है) यात्रियों से गूँज और उसके अंतर्गत चलाए जाने वाले विभिन्न उपक्रमों के बारे में बात की।

उन्होंने मुख्यतः ये बातें बताई -

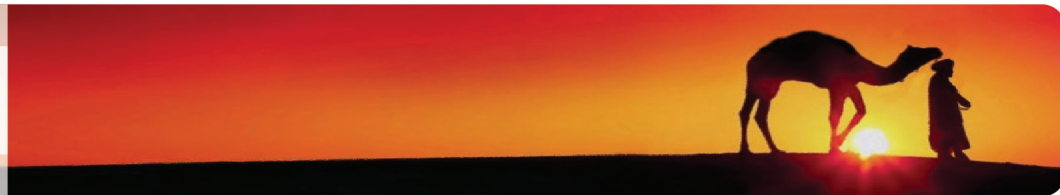
- \* काम की खोज में भटकनेवाले लोगों के पास कोई जमापूंजी नहीं होती।
- \* उन्होंने लोगों के रवैये में बदलाव लाने की कोशिश की - आप जो अब दे रहे हो, उसकी आपको जरूरत नहीं है, इसलिये दे रहे हो और ना कोई दान कर रहे हो।
- \* उन्होंने आपदाओं को एक अवसर की तरह देखा और समाज की जरूरतों को समझकर उन्हें अपने सामान एवं कौशल का इस्तेमाल करने के लिए समर्थ बनाया।
- \* पैसा ही एकमात्र चलन (currency) नहीं है; बल्कि श्रम, कौशल, ज्ञान ये भी एक तरह से करेंसी ही है।
- \* कपड़े शरीर को ढकने का साधन न रहकर गौरव और प्रतिष्ठा का मुद्दा बन गया है। हमें अपना ये नजरीया बदलना होगा और लोगों के पास क्या साधन- संपत्ति है ये न देखते हुए उनकी काबिलियत का सम्मान करना सीखना होगा।





## Women Power: Barefoot College

Role Model. Tilonia. Day 12



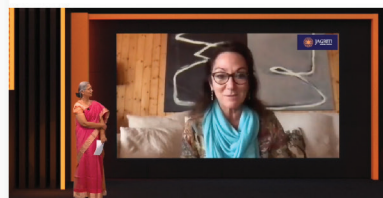
The families in the village weren't ready to send their female members away for training. Connotations about how the women wouldn't return spread across the village. But a few women from different villages in Bihar accepted the challenge and moved to Tilonia, Rajasthan to learn something skill based and entrepreneurial. Most of them were illiterate.

These women had no clue about the journey ahead. In six months, they became Barefoot Solar Engineers - a tag that they proudly wear. These 'Solar Mamas' headed back home with an aim to banish darkness from their villages.

They set up workshops which helped hundreds of villagers and proved their worth. These engineers have gained recognition and respect. Their self-confidence levels have rocketed and a smile spreads across their faces when somebody refers to them as 'Engineer Sahib'. For 40 years, it has shown the power and impact of demystifying modern technologies into rural settings focusing on basic quality of life improvement: water management (rainwater harvesting), basic lighting (solar electrification), livelihood development (handicrafts, health communications) and education (rural based, alternative education that includes indigenous skills and wisdom).

If there is one thing that Barefoot College has taught the world, it is the power of learning by doing. The Barefoot Approach has spread to 93 countries over the past five years.

barefoot college



CEO Meagan Fallone  
at Jagriti Yatra

गाँव के लोग अपने परिवार की महिलाओं को प्रशिक्षण के लिए भेजने के लिए कतई राज़ी नहीं थे। औरतें वापस गाँव में लौटकर नहीं आयेंगी, ऐसा शायद सब को लग रहा था। ऐसे में बिहार के कुछ गाँव की महिलाओं ने चुनौती स्वीकार कर ली और वे राजस्थान के तिलोनिया में कौशलपूर्ण काम सीखने के लिए चली आईं। उनमें से ज्यादा निरक्षर थी। आगे क्या होने वाला है, उन्हें इस बात का कोई भी अंदाज़ा नहीं था। लेकिन छह महीने में ही वे 'बेअरफूट सोलर इंजिनियर्स' बन गयीं और आगे चलकर वे ये बात बहुत ही अभिमान व गौरव से बताने वाली थी।

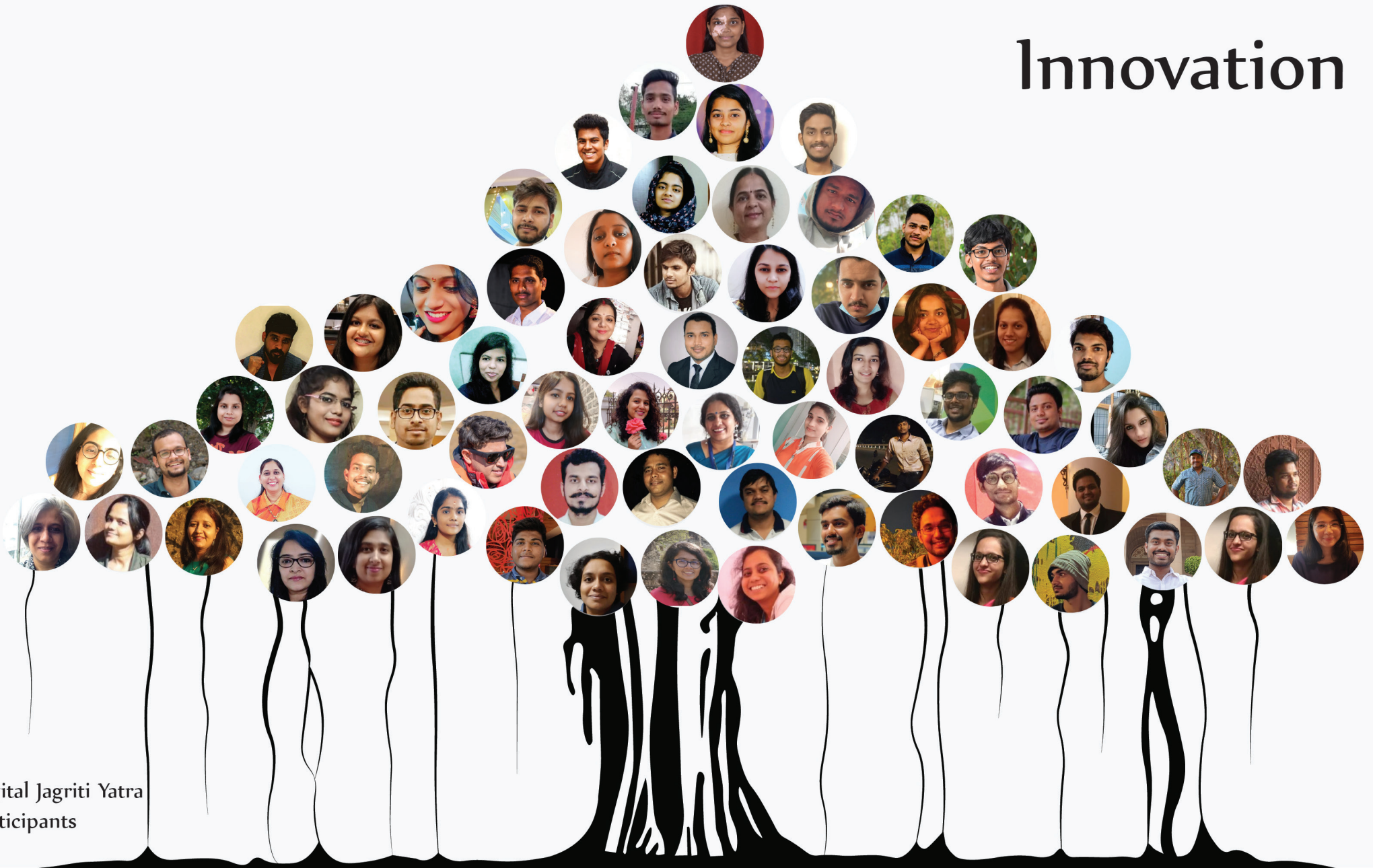
ये 'सोलर ममा' अपने गाँव का अंधेरा दूर करने के लिए अपने घर वापस आयीं। उन्होंने अपने-अपने गाँवों में प्रशिक्षण के लिए वर्कशॉप खोली और इस तरह उन्होंने अपने हुनर का परिचय दिया। अपने काबिलियत के दम पर उन्हें पहचान और इज्जत मिली। जब कोई उन्हें 'इंजिनियर साहिब' पुकारता है, तो उनके चेहरे पर एक बहुत बड़ी मुस्कान आ जाती है और उनका सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है।

पिछले 40 सालों में आधुनिक तकनीकी ज्ञान ने गाँव वालों की जिंदगी पर काफ़ी प्रभाव डाला है जिसका परिणाम उनके जीवन स्तर के विकास में परिलक्षित होता है। पानी (रेनवॉटर हार्वेस्टिंग), बिजली (सोलर इलेक्ट्रिफिकेशन), रोज़ी-रोटी (हथकरघा, आरोग्य - संपर्क यथा सूचना) और शिक्षा (स्थानिक कला और कुशलता का उपयोग करते हुए वैकल्पिक शिक्षा का प्रावधान)।

बेअरफूट कॉलेज ने दुनिया को एक चीज़ जरूर सिखाई है और वह है 'पावर ऑफ़ लर्निंग बाय डूईंग' बेअरफूट का ये दृष्टिकोण या तरीका पिछले पांच सालों में 93 से अधिक देशों ने अपनाया है।



# Innovation



Digital Jagriti Yatra  
Participants





**Dr. Vanita  
Viswanath**  
डॉ वनिता विश्वनाथ

Jagriti Board Team  
Board Member

## WOMEN BUILDING AN INSTITUTION

संस्था का निर्माण  
करती महिलाएँ

Shakti is Energy. Shakti in Indian traditions is a feminine principle because a woman is responsible for creation. Its root in Sanskrit means "can do".

For women in Madhya Bharat (Middle India), many of whom participated in JDY 2020, it is their Shakti, the energy and can do spirit that has built enterprise – in sectors such as agriculture, handicraft and apparel, and small retail. They apply their nurturing skills in these enterprises to build models of business and social stability that survive during the toughest of times. These models are inclusive of family and community involvement in core business and support roles. At JDY 2020, a group of participants, men and women, came together to affirm their intuitive connection to Shakti and building women's enterprise in Middle India. The reinforcement was provided by a male Yatri, Rajanya Dey, when he conceived, convened and initiated the Shakti charcha (चर्चा)!

The framework that steered the charcha recognizes Shakti as consciousness of the energy that is already in women everywhere and by gradually raising four key pillars of the building called Udyam or enterprise, Shakti can become a powerful force that will hold the Udyam together. The pillars are Ambition (महत्वाकांक्षा), Aspiration (आकांक्षा), Confidence (आत्मविश्वास) and Capacity (क्षमता). Women were concerned in the charcha that it may be a tall order for one woman to have the Shakti for building all four pillars. The charcha clarified that the building of the pillars for the realization of Shakti requires solidarity and partnership among many women and the active involvement of men. The JDY 2020 certainly made a spectacular start in this direction with many men involved in the charcha!

शक्ति ऊर्जा है। शक्ति, भारतीय परंपरा के अनुसार एक स्त्री सिद्धांत है क्योंकि एक महिला निर्माण के लिए जिम्मेदार है। संस्कृत में इसकी जड़ का अर्थ है "कर सकते हैं"।

मध्य भारत में महिलाओं के लिए, उनमें से कई ने जागृति डिजिटल यात्रा 2020 में भाग लिया, यह उनकी शक्ति है, ऊर्जा और 'यह कर सकती हैं' भावना जिसने उद्यम बनाया है - कृषि, हस्तशिल्प और परिधान जैसे क्षेत्रों में, और यहां तक कि छोटे खुदरा क्षेत्र में भी। वे व्यापार और सामाजिक स्थिरता के मॉडल बनाने के लिए इन उद्यमों में अपने पोषण कौशल को लागू करते हैं जो समय के सबसे कठिन समय के दौरान जीवित रहते हैं। इन मॉडलों में, परिवार और समुदाय की भागीदारी मुख्य व्यवसाय और सहायक भूमिकाओं में है। JDY 2020 में, पुरुषों और महिलाओं के प्रतिभागियों का एक समूह, मध्य भारत में शक्ति और महिलाओं के उद्यम के निर्माण के लिए उनके सहज संबंध की पुष्टि के लिए आगे आए। सुहृदीकरण एक पुरुष यात्री, राजन्या डे द्वारा प्रदान किया गया था, जब उन्होंने कल्पना की, बैठक बुलाई और शक्ति चर्चा शुरू की!

चर्चा को आगे बढ़ाने वाली रूपरेखा, शक्ति को उस ऊर्जा की चेतना के रूप में पहचानती है जो पहले से ही महिलाओं में है और उद्यम नामक इमारत के चार प्रमुख स्तंभों को उभारकर, यह एक शक्तिशाली शक्ति बन सकती है जो उद्यम को एक साथ रखेगी। ये स्तंभ महत्वाकांक्षा, आकांक्षा, आत्मविश्वास और क्षमता हैं। चर्चा में महिलाओं चिंतित थे कि एक महिला के लिए सभी चार स्तंभों को बनाने के लिए शक्ति होना बहुत मुश्किल हो सकता है। चर्चा ने स्पष्ट किया कि शक्ति की प्राप्ति और स्तंभों को बनाने के लिए, कई महिलाओं के बीच एकजुटता, साझेदारी और पुरुषों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होगी।





## WOMEN BUILDING AN INSTITUTION

संस्था का निर्माण  
करती महिलाएँ

This four-pillar framework is not complete without the realization of needed supports to build the institution – women's knowledge, attitude and skills; their family; their "trust circles" in their location and community; the state, its institutions and its programs that are meant to help women move forward; non-governmental institutions including the private (for profits and non-profits). The methods that are key to Shakti consciousness and action that are enterprise and institution-building are native to our traditions. They have helped to provide societal stability and generational shifts towards gender equality, such as using negotiation as a principle and having a certain level of reasonableness while negotiating with family on what women want. Women have to fine-tune their negotiation skills so that they can take their family and community along with them in their journey. One 'formula' they could use is a 60-40 principle where 60% of the time what women want is negotiated and 40% are non-negotiable ground rules such as no denial of education, no damage to women's mental & physical health, and no denial to women of affirmative action provisions already made available in public and private institutions.

The charcha concluded that women already have everything that they need to be good leaders - compassion, a high EQ, the ability to hustle and an entrepreneurial mindset. "WE JUST NEED TO REMIND THEM THAT THEY ARE QUEENS"

JDY 2020 ने निश्चित रूप से इस दिशा में एक शानदार शुरुआत की, जिसमें कई लोग शामिल थे! चर्चा के प्रतिभागियों ने भी सहमति व्यक्त की कि किसी एक के दम पर उद्यम शुरू करना चुनौती-पूर्ण और थकेला हो सकता है।

संस्था बनाने के लिए आवश्यक समर्थन के बिना चार-स्तंभ की रूपरेखा अधूरी है - महिलाओं का ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल; उनका परिवार; उनके "विश्वास मंडलियाँ"; उनके स्थान और समुदाय; राज्य, संस्थाएँ और कार्यक्रम जो महिलाओं को आगे बढ़ने में मदद करने के लिए हैं; निजी (लाभ और गैर-लाभ के लिए) सहित गैर सरकारी संस्थाएँ।

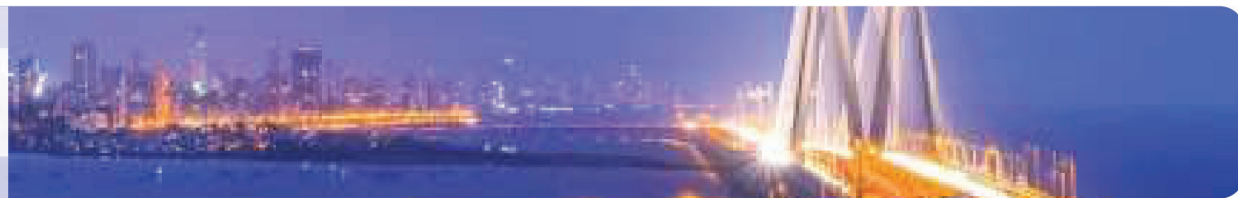
महिलाओं को अपना बातचीत कौशल सुधारना होगा ताकि वे अपने परिवार और समुदाय को अपनी यात्रा में ले जा सकें। एक "सूल" वे उपयोग कर सकते हैं 60-40 सिद्धांत; 60% समय महिलाओं को क्या चाहिए बातचीत और 40% गैर-परकाम्य बुनियादी नियम, जैसे कि शिक्षा से वंचित नहीं होना, महिलाओं के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को कोई नुकसान नहीं, पहले से ही पुष्टि किया प्रावधानों की महिलाओं के लिए निर्विवाद सार्वजनिक और निजी संस्थानों में उपलब्ध कराया जाना। चर्चा ने निष्कर्ष निकाला कि महिलाओं के पास पहले से ही वह सब कुछ है जो उन्हें होना चाहिए अच्छे नेता - करुणा, एक उच्च भावनात्मक उद्घरण (EQ), ऊर्ध्व और एक उद्यमी की क्षमता मानसिकता। "उन्हें बस याद दिलाना होगा कि वे रानी हैं!"





## Nation Building

### Panel Discussion



#### Panelists:

- Sunil Pangarkar
- Sharat Bansal
- Ashutosh Kumar
- Vanita Vishwanath
- Shashank Mani
- Shadab Hassan

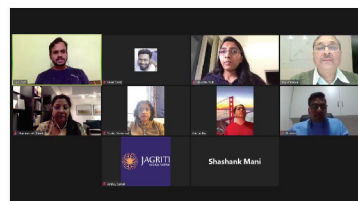
#### Moderator:

- Nivedita Todi

All panelists being passionate nation builders this was a very engaging discussion with Guest speaker, Ms Madhuvanti Ghosh's described Swami Vivekananda's speech and memories from his visit to Chicago.

Some of the favourite quotes of the panelists were:

1. Mr. Sunil mentioned insights of Swami Vivekananda capturing the view of the nation in the early 20th century, and described how that view still holds good.
2. Mr. Sharat calls the contributions of Mahatma Gandhi, in the quest of bringing the souls together for the freedom fight.
3. Mr. Shadab recalls Subash Chandra Bose, who mentioned "Life loses half its interest if there is no struggle-if there are no risks to be taken".
4. Mr. Ashutosh quotes Dr APJ Abdul Kalam, who dearly mentioned, "Dream is not that which you see while sleeping it is something that does not let you sleep".
5. Miss. Vanita recalls Kiran Mazumdar Shaw's quote, "A blockbuster drug is not about billion dollars but about billion patients".
6. Mr. Shashank recalled, "Mental endurance takes over physical strength, it is only after the launch that waves of exhaustion came crashing down on me", a quote by Ritu Karidhal, Deputy Director, Mission M.O.M.



### Nation Building at Jagriti Yatra

#### आमंत्रित वक्ता :

सुनील पंगारकर  
शरत बंसल  
आशुतोष कुमार  
वनीता विश्वनाथ  
शशांक मणि  
शादाब हसन

संचालक: निवेदिता तोडी

सभी सदस्य राष्ट्र निर्माण हेतु अग्रसर हैं और इसी कारण अतिथि मधुवंती घोष के साथ हुई यह चर्चा बहुत दिलचस्प रही। मधुवंती जी ने स्वामी विवेकानंद का भाषण और शिकागो की उनकी यात्रा की अन्य स्मृतियाँ सभी के साथ बाँटी।

चर्चा से कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

१. सुनील जी ने 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में स्वामी विवेकानंद की राष्ट्र के दृष्टिकोण को पकड़ने की अंतर्दृष्टि का उल्लेख किया, और बताया कि यह दृश्य आज भी कितना सही है।
२. शरत जी ने महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम में एक उद्देश्य हेतु लोगों को साथ लाने के प्रयास के योगदान को याद किया।
३. शादाब जी ने सुभाष चन्द्र बोस के कहे कुछ शब्दों को याद किया, "बिना संघर्ष के, बिना जोखिम के जीवन अपना आकर्षण खो देता है।"
४. आशुतोष जी ने डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम के हवाले से कहा, "स्वप्न वो नहीं है जो आप सोते हुए देखते हैं, स्वप्न तो वो है जो आपको सोने ही नहीं देता।"
५. वनीता जी ने किरण मजूमदार शॉ के शब्दों को याद करते हुए कहा, "एक ब्लॉकबस्टर दवा का मतलब एक अरब डॉलर नहीं बल्कि एक अरब रोगियों को निरोग करना है।"
६. शशांक जी ने ऋतु करिधाल, जो मिशन मंगल की डायरेक्टर हैं, के शब्दों को याद किया, "मानसिक सहनशक्ति से शारीरिक बल बढ़ता है, मुझे थकावट का एहसास लॉन्च के बाद ही महसूस हुआ।"



# Challenges and Opportunities for Healthcare in a post COVID world

Panel Discussion

## Panelists

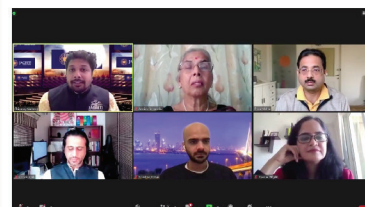
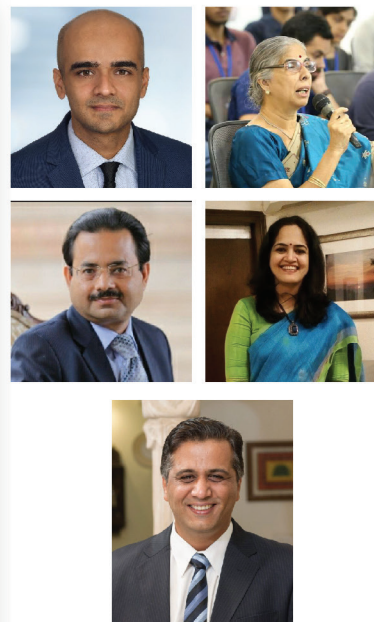
- Dr. Armida Fernandez
- Dr. Shashvat Desai
- Dr. Ashwin Naik
- Dr. Rana Mehta
- Dr. Aparna Hegde

Every person, irrespective of socio-economic status, has the right to good health. The panelists brought to the forefront the unseen impact of the pandemic where the fear of getting infected by COVID overshadowed the need for getting treatment at a hospital. As a result, several patients' health conditions have taken a turn for the worse which could have been avoided if they had sought treatment at the right time.

The impact of awareness about causes of ill health and imbibing practices for promoting good health in preventing the need for treatment is tremendous. In fact, Dr. Fernandez, highlighted that, good health is not a priority for most and comes in fifth in the list of priorities after having a roof over one's head, food to eat, job and education for children.

Dr. Ashwin also emphasized the importance of listening to the patient and not assume solutions before understanding the problem. There is a need for people to be informed and be educated about the health care service.

"Technology and human touch are important to ensure effectiveness and scale in the health sector," shared Dr. Aparna Hegde. The future entails virtual, integrated, and personalized healthcare for all.



Challenges and Opportunities for  
Healthcare in a post COVID world  
at Jagriti Yatra

## आमंत्रित वक्ता :

- डॉ आर्मीडा फर्नांडीज
- डॉ शाश्वत देसाई
- डॉ अश्विन नाइक
- डॉ राणा मेहता
- डॉ अपर्णा हेगडे

प्रत्येक व्यक्ति, सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद, अच्छे स्वास्थ्य का अधिकार रखता है। बेहतर स्वास्थ्य हर व्यक्ति का मूलभूत अधिकार है। चर्चा में शामिल सदस्यों ने महामारी के अनदेखे प्रभाव को सामने लाने का प्रयत्न किया, जहाँ लोग कोविड से संक्रमित होने के डर से ग्रसित रहे और अपना अन्य जरूरी इलाज अस्पताल में कराना मुनासिब नहीं समझा। नतीजतन कई रोगियों के स्वास्थ्य की स्थिति ने बड़ से बड़तर मोड़ ले लिया, शायद अगर उन्हें समय पर बेहतर उपचार मिल गया होता तो उन्हें नाजुक हालत से बचाया जा सकता था। ऐसे लोगों के जीवन पर कोरोना की दोहरी मार पड़ी।

बीमारियों के कारण और उसके सेहत पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में यदि समय के साथ लोगों में जागरूकता फैलायी जाय, साथ ही साथ उनके बीच बेहतर स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित किया जाय तो इलाज की जरूरतों को रोकने में काफ़ी हद तक मदद मिल सकती है। जागरूकता स्वास्थ्य क्षेत्र का सबसे अहम अंग है। डॉ फर्नांडीज ने भी इस बात पर अपने वक्तव्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे समाज में स्वास्थ्य अधिकांश के लिए वरीय प्राथमिकता नहीं है। बच्चों के लिए भोजन, नौकरी और शिक्षा, मकान के बाद स्वास्थ्य प्राथमिकताओं की सूची में पांचवें स्थान पर आता है।

डॉ अश्विन ने समस्या के समाधान से पहले रोगी को सुनने और समस्या को समझने महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि लोगों को उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधा के बारे में सूचित करने और उसको लेकर शिक्षित करने की आवश्यकता है।

डॉ अपर्णा हेगडे ने कहा कि "स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी और मानव स्पर्श महत्वपूर्ण हैं।" सभी के लिए आभासी, एकीकृत, और व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा हो इस बात पर भविष्य में स्वास्थ्य क्षेत्र का जोर है।

निम्नलिखित को ग्राफिक्स में डिज़ाइन किया जा सकता है।

क्या तुम्हें पता था?

जंक फूड सिगरेट की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाता है।

आप रोकथाम और जागरूकता से लाखों लोगों की जान बचा सकते हैं।

स्वास्थ्य को निर्धारित करने के लिए पिन कोड अनुवांशिक कोड से अधिक महत्वपूर्ण है।

अस्पताल में COVID संक्रमण के डर से टीकाकरण की संख्या कम हो गई है।





## Digital for Bharat

Panel Discussion

### Panelists:

- Shoaib
- Geeta Prakash
- Tushar Shankar
- Chirag

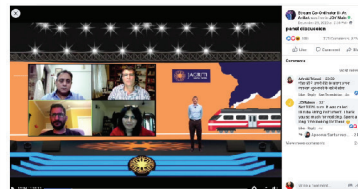
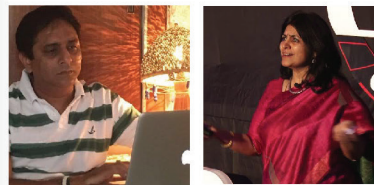
Moderator: Madhu

The theme of the discussion was the effect of digital on middle India, especially on entrepreneurship and on small and medium businesses.

Panelists advised on the following -

1. What one puts behind the product is critical to business, as a product is based on trust.
2. The critical aspects are to be handled with care while others can be outsourced.
3. Organization needs an outline of goals and processes, about the optimal utilization of technology.
4. Element of technology plays a key role as the business expands, and accordingly technology needs to be leveraged.
5. Having transparency within the organization primarily helps build trust from outside with ease.
6. Digital business needs and provides digital support..
7. Collaborations, well outlined, create exceptional synergies which can pivot businesses to drive change and further efficiency.
8. Reaching out to Yatri Network can clear your queries and can find you mentors.

"In the world of digitization, end users seek privacy. The one focusing on this, will stand as a winner."



Digital for Bharat  
at Jagriti Yatra

### आमंलित वक्ता :

शोयब  
गीता प्रकाश  
तुषार शंकर  
चिराग

संचालक: मधु

मध्य भारत में छोटे और मध्यम व्यवसाय तथा उद्यमशीलता पर डिजिटल के प्रभाव के संदर्भ में आमंलित सदस्यों ने निम्नलिखित सलाह दी :-

आपके उत्पाद में क्या खास बात है यह आपके व्यापार के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उत्पाद विश्वास पर निर्भर करता है।

उत्पाद के महत्वपूर्ण पहलुओं को देखभाल कर संभालना चाहिए, जबकि अन्य चीजों को आप बाहर से मंगा सकते हैं।

संगठन के पास प्रक्रिया और लक्ष्यों का एक रूपरेखा तैयार होना चाहिए ताकि तकनीक का उत्तम उपयोग कर सकें।

व्यापार के विस्तार में तकनीक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और जैसे-जैसे ये बढ़ती है इसका लाभ उठाने की आवश्यकता है।

संगठन के भीतर पारदर्शिता होने से इस पर बाहरी लोगों का विश्वास करना आसान हो जाता है।

डिजिटल व्यापार की जरूरत है और यह डिजिटल समर्थन प्रदान करता है।

आपसी सहयोग तथा अच्छी तरह से बनाई गई योजना असाधारण तालमेल बनाते हैं जो व्यवसाय को नई ऊंचाइयां दे सकता है।

यात्री नेटवर्क में संपर्क करने से आपके प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे साथ ही आपके व्यवसाय के लिए परामर्शदाता भी मिल जाएंगे।

डिजिटल वेबसाइट स्थापित करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें- वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए डिजिटल में प्रवेश करने से पहले व्यवसाय को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

जब डिजिटल समाधानों को सही तरीके से लागू किया जाता है तो वह व्यवसाय के लिए एक वरदान साबित होते हैं।

किसी भी बिज़नेस के लिए कोई खास तरह का आसान सा रास्ता नहीं है आपको लगातार परिवर्तन करते रहना होगा और हर तरह की परिस्थितियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना होगा।

"डिजिटलीकरण की दुनिया में हर ग्राहक गोपनीयता चाहते हैं और जो व्यवसाय इसका ध्यान रखेगा वह निश्चित रूप से विजय होंगे।"



## Women empowerment-Awakening Shakti

Panel Discussion



Panelists:

- Rajashri Sai
- Archana Stalin
- Manna Swati Baig

Moderator: Ashutosh Kumar

'We have to think about the Indian approach to empowerment which is a very inclusive approach to women empowerment.' With this as the main theme of the discussion the panelists shared their own experiences of their entrepreneurial journey.

Some of the invaluable takeaways from the session were:

- Women take inspiration from stories of other women entrepreneurs.
- While Shakti is a fire, she is also a mother who cares for a lot of people and works with a lot of communities.
- There is a struggle for women entrepreneurs they are questioned, will you earn money? Will you have time for your family? Will you be able to prioritize that?
- Men have a lot of machismo as entrepreneurs, women are the silent ones.
- Women don't recognize that they are entrepreneurs. Business becomes a part of their life. They find a very integrated way to work.
- Most women entrepreneurs start with either their own savings or family funding.
- India is all about family businesses and it continues to grow in the grass roots. The structures for strategy, finance or scale are not very well built today to accept the fact that inherently Indians do this well.
- There are more women whose Shakti must be unearthed.



आमंत्रित वक्ता :

राजश्री साई

अर्चना स्टालिन

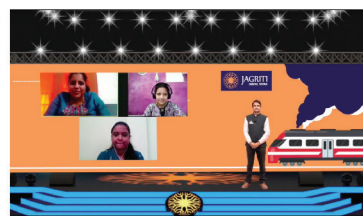
मन्ना स्वाति बेग

संचालक: आशुतोष कुमार

"हमें महिला सशक्तिकरण के भारतीय दृष्टिकोण के बारे में सोचना होगा जो की बहुत ही महत्वपूर्ण एवं समावेशी दृष्टिकोण है।" इस बात को चर्चा के केंद्र में रखते हुए पैनलिस्टों ने अपने उद्यमशीलता के अनुभवों को साझा किया। आइए जानते हैं चर्चा की कुछ मुख्य बातें:

बहुत सी महिलायें अन्य महिला उद्यमियों की कहानियों से प्रेरणा लेती हैं। जहां शक्ति एक आग है, वहां एक मां भी है, जो बहुत सारे लोगों की देखभाल करती है और बहुत सारी समुदायों के साथ काम करती हैं। महिला उद्यमियों को बहुत संघर्ष करना पड़ता है। उनसे कई तरह के सवाल पूछे जाते हैं जैसे अगर आप पैसा कमाएंगे तो क्या आपके पास अपने परिवार के लिए समय होगा? क्या आप उन्हें प्राथमिकता दे पाएंगे? पुरुषों उद्यमियों की बहुत सारी चर्चायें होती हैं महिलायें चुप रहती हैं। महिलायें यह नहीं मानती कि वे उद्यमी हैं, व्यापार उनके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है और वे काम करने के लिए बहुत ही एकीकृत तरीका ढूंढ लेती हैं। ज्यादातर महिलायें या तो अपनी बचत से व्यापार का शुरुआत करती हैं या परिवार की आर्थिक मदद से।

भारत में हर प्रकार के पारिवारिक व्यवसाय हैं जो कि स्वाभाविक रूप से सही भी है और निरंतर अपनी जड़ें मजबूत कर रहे हैं। रणनीति, वित्तीय पैमाने के लिए देश की संरचनायें बहुत अच्छी तरह से निर्मित नहीं है ये बात हमें सुधारनी होगी। ऐसी और भी महिलायें हैं जिनकी शक्ति का सही पता लगाना चाहिए और सही प्रशिक्षण देना चाहिए ताकि वह भी आत्मनिर्भर बन सकें।



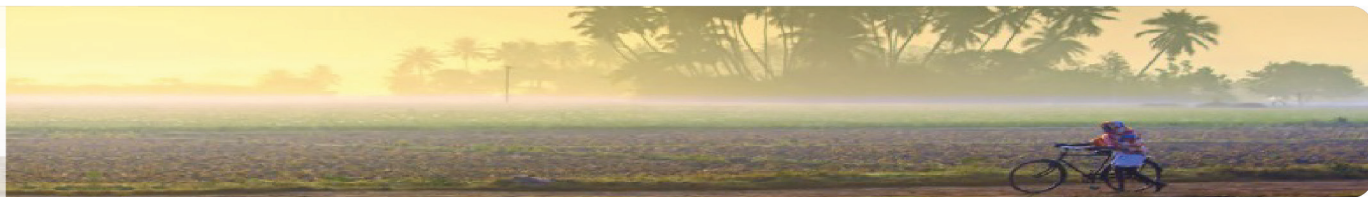
Women empowerment  
Awakening Shakti  
at Jagriti Yatra





## Agro-Processing Products

### Panel Discussion



#### Panelists

- Rakesh Gupta
- Ruchi Jain
- Sanjeev Kumar

Moderator : Ashutosh Kumar

Agriculture being the main focus area of the Jagriti Enterprise Centre, Purvanchal which also hosts the Centre of Excellence for Agriculture, the discussion was how to help small farmers do better and increase their income with focus on market linkages.

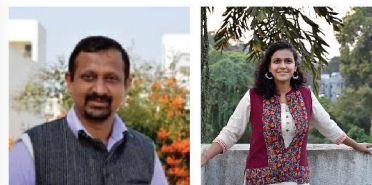
The esteemed panelists shared their journey and how they began their organizations. All three of them pressed upon the importance of market linkages and an organisation must have a deeper understanding of the market.

The panelists being on the ground and experienced agricultural practitioners, spoke in depth about actual problems faced by the farmers and how they have to be innovative to solve the problems.

Some of the points which came up in the discussion were:

- How to ensuring the parameters of quality
- Cost effectiveness of production
- Logistics in case of perishable products
- Commercial viability of the produce
- Capacity building
- Funding and rotation of money
- Financial viability
- Lack of funds for R&D in social sector space
- Branding and market linkages

The panel discussion was wrapped by panelists answering some interesting questions posed by the yatriis.



Panel Discussion on  
Agro-Processing Products  
at Jagriti Yatra

आमंत्रित वक्ता :

राकेश गुप्ता

रुचि जैन

सजीव कुमार

संचालक: आशुतोष कुमार

'कृषि' जागृति एंटरप्राइज सेंटर- पूर्वांचल (जे.ई.सी.पी) का मुख्य फोकस क्षेत्र है जे.ई.सी.पी कृषि के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र की मेजबानी भी करता है।

चर्चा थी कि छोटे किसानों को बेहतर करने में कैसे मदद करें व बाजार संबंधों (मार्केट लिंकजिस) पर ध्यान केंद्रित कर उनकी आय में कैसे वृद्धि कराएं।

सम्मानित पैनलिस्टों ने अपनी यात्रा साझा करते हुए बताया कि कैसे उन्होंने अपने संगठन शुरू किए। तीनों ने ही बाजार संबंधों को महत्वपूर्ण बताया और कहा एक संगठन को बाजार की गहरी समझ होनी चाहिए।

कृषि क्षेत्र में अनुभवी होने के कारण पैनलिस्ट्स ने इस क्षेत्र से संबंधित किसानों के सामने आने वाली वास्तविक समस्याओं का गहराई से वर्णन किया तथा इन समस्याओं को हल करने के सुझाव भी दिए।

चर्चा में आए कुछ बिंदु इस प्रकार थे:

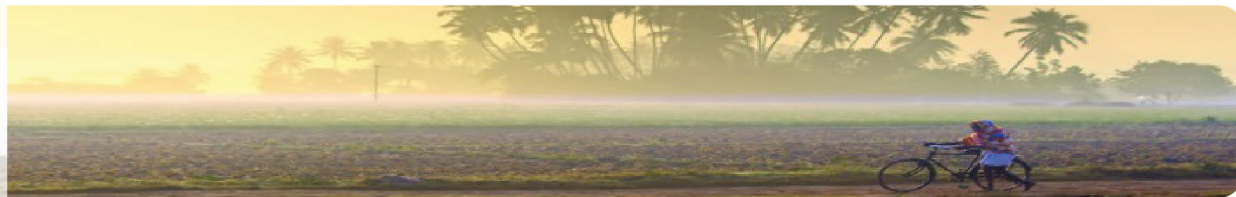
- गुणवत्ता के मापदंडों को कैसे सुनिश्चित करें
- किफायती लागत पर उत्पादन
- खराब होने वाले उत्पादों के मामले में यातायात की व्यवस्था
- उत्पादन की व्यावसायिक व्यवहारिकता
- क्षमता निर्माण
- धन का व्यवस्था और तरलता
- वित्तीय औचित्य
- सामाजिक क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए धन की कमी
- ब्रांडिंग और बाजार संबंध

पैनल चर्चा के अन्त में पैनलिस्ट्स ने यत्रियों द्वारा पूछे गए कुछ दिलचस्प सवालों के जवाब दिए।



## Rurbanisation

### Panel Discussion



#### Panelists:

1. Ashok - Electrical Engineer
2. Trupti Doshi - Architect
3. Aditya Rajan - IAS 2015

Moderator: Manish

**Need for Smart Rurbanisation:** There are 400 cities in India which have population between 1 to 10 Lakhs, which are fast growing in size and therefore it is of utmost importance that these townships grow sustainably and not end up in the same mess as their predecessors.

What all is needed? A township has to have basic infrastructure like sewage, water-supply etc. for improved quality of life and roads and connectivity for industries to develop. A township must be such, where humans and nature can co-exist i.e. it should contain social and cultural infrastructure apart from essentials such as health and education. As far as possible the development of town should be done in a self-funding mode rather than depending upon central government funds for the same.

Why is it important? Rurbanisation is becoming increasingly important to address the issue of internal migration, which happens because people are not getting adequate lifestyle or opportunities to work in their hometowns.

Town Infrastructure should be developed keeping in mind:

- Citizens are the clients not the cars.
- Diversity of towns should be kept alive. Should suit the climatic and cultural need of the location.
- 2-4 towns can co-plan to achieve economies of scale.
- Indigenized, decentralized solutions should be used, which actually were used before.



आमंत्रित वक्ता :

अशोक- विद्युत इंजीनियर

तृप्ति दोषी- वास्तुकार

आदित्य रंजन - आई.ए.एस 2015

संचालक: मनीष

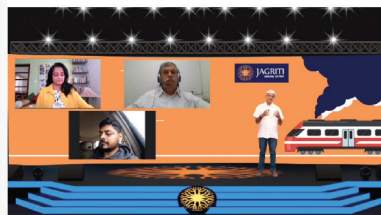
आज भारत में हमें स्मार्ट रूर्बानाइजेशन की जरूरत है, वर्तमान में भारत में 400 शहर हैं जिनकी जनसंख्या 1 से 10 लाख के बीच है, जो की आकार और आबादी में बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं और इसलिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि ये कालोनी बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना विकसित हो ताकि ये शहर अपने से पहले के शहरों के समान अस्तव्यस्त ना हो जाए।

शहर में किन सुविधाओं की आवश्यकता है?- किसी भी शहर में जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ बुनियादी सुविधाओं जैसे सीवेज, पानी की आपूर्ति आदि होनी चाहिए। वहीं उद्योगों के विकास के लिए एक आदर्श शहर में उद्योगों का सड़कों से जुड़ाव बेहतरीन होना चाहिए। एक आदर्श शहर में मनुष्य और प्रकृति के बीच समन्वय होना चाहिए, मानवीय जीवन और प्रकृति में साहचर्य हो, साथ ही इस तरह की कालोनियों में स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी चीजों के अतिरिक्त सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचा भी बहुत मजबूत होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो शहर का विकास इस तरह से हो कि वह अपनी जरूरतों को पूरा करने में आत्मनिर्भर हो ना कि उस शहर को केंद्र सरकार के धन पर निर्भर रहना चाहिए।

अब प्रश्न यह उठता है कि यह महत्वपूर्ण क्यों है?- रूर्बानाइजेशन आंतरिक प्रवासन को रोकने के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता जा रहा है, आंतरिक प्रवासन इसलिए हो रहा है क्योंकि लोगों को अपने नगरों में एक बेहतर जीवन जीने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल रहे हैं।

नगरीय अवसंरचना को हमें निम्न बातों को ध्यान में रखते हुए विकसित करना चाहिए -

1. नागरिक ग्राहक है ना कि कार।
2. शहरों की विविधता को जीवित रखा जाना चाहिए, उसे विकसित करते समय वहाँ की जलवायु और संस्कृति का ध्यान रखना चाहिए।
3. 2 से 4 शहर आपस में मिलकर एक बड़ी अर्थव्यवस्था को प्राप्त करने की योजना बना सकते हैं।
4. स्वदेशी, विकेंद्रीकृत समाधानों का उपयोग किया जाना चाहिए, जो वास्तव में पहले से उपयोग किए जा रहे थे।



Rurbanisation  
at Jagriti Yatra





## Apparels and Handicrafts

### Panel Discussion



#### Panelists:

- Shilpa Sharma,
- Kirti Poonia
- Ami Shroff
- Dipali Patwa

Moderator: Shivangini

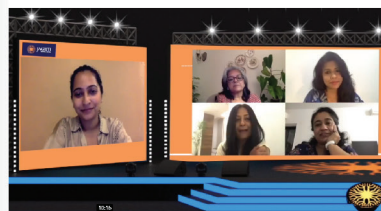
The energetic panelists brought in a different perspective and carried out a wholesome discussion about the nuances of the apparels and handicrafts sector, the way forward and the ever-changing market trends.

They shared the mindset of successful entrepreneurs in this sector. They believed that buying products out of sympathy for artisans is not sustainable rather training the artisans to develop ongoing trends is the way forward. The Apparel sector requires constant innovation as the trends keep changing very fast and therefore the products must be designed and sold before the trends pass. The panelists also suggested use of AI to predict demand and also for development of designs.

For the Yatris who are interested in this sector the panelists had following suggestions:

1. Keep the goals realistic.
2. Consumer needs are to be at the centre of any development for business to be sustainable.
3. There is also a need to ensure artisans are socially comfortable.
4. Make smart use of technology.
5. Connect all the dots through community, craft and conscious consumerism.

The panelists believe that business would thrive if it is mindful, responsible and ensures circularity. This sector directly empowers women of the marginalised communities and enables them to play an active role in building the economy.



Apparels and Handicrafts  
at Jagriti Yatra

#### आमंत्रित वक्ता :

शिल्पा शर्मा,  
कीर्ति पूनिया,  
अमी श्रॉफ, और  
दिपाली पटवा

संचालक: शिवांगिनी

ऊर्जा से पूरित पैनलिस्टों ने परिधान और हस्तशिल्प क्षेत्र के बदलते रुझानों के मद्देनजर व्यापार में आगे बढ़ने के बारे में एक नए परिप्रेक्ष्य से चर्चा की तथा इसकी बारीकियों को साझा किया।

उन्होंने इस क्षेत्र में सफल उद्यमियों की सोच साझा की। उनका मानना है कि कारीगरों के प्रति सहानुभूति पैदा करके उत्पाद बेचना सतत व्यापार नहीं है, बल्कि कारीगरों को बाज़ार में चल रहे रुझानों के अनुसार उत्पाद को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करना आगे की सोच है।

परिधान क्षेत्र को निरंतर नयेपन की आवश्यकता होती है क्योंकि फैशन बहुत तेजी से बदलते रहते हैं और इसलिए फैशन के बदलने से पहले उत्पादों को डिजाइन करके बेचा जाना चाहिए। पैनलिस्टों ने मांग का अनुमान लगाने और डिजाइन के विकास के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के उपयोग का भी सुझाव दिया।

इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले यात्रियों के लिए पैनलिस्टों के निम्नलिखित सुझाव थे:-

- एक वास्तविक लक्ष्य बनाएं।
- उपभोक्ता की जरूरत किसी भी व्यापार के विकास के केंद्र में होनी चाहिए।
- यह सुनिश्चित करें कि कारीगर सामाजिक रूप से सहज हों।
- तकनीक का सही और सटीक इस्तेमाल करें।
- समुदाय, शिल्पकार और जागरूक उपभोक्तावाद को साथ में लेकर चलें।

पैनलिस्टों का मानना है कि अगर व्यवसाय दिमाग से एवं जिम्मेदारीपूर्वक किया जाए तो यह बढ़ेगा और साथ ही इसका सतत विकास भी होगा। यह क्षेत्र सीधे तौर पर हाशिए पर खड़े समुदायों की महिलाओं को सशक्त बनाता है और उन्हें अर्थव्यवस्था के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बनाता है।





## Innovations unbound: Sonam Wangchuk

Role Model . Mumbai. Day 1

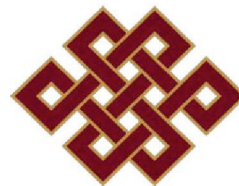


Dr. Sonam Wangchuk is an engineer, innovator, and education reformist. He invented the Ice Stupa technique that creates artificial glaciers, used for storing winter water in the form of conical shaped ice heap.

He was awarded the Ramon Magsaysay Award in 2018. "Learning is not about school, textbooks or teachers," said Dr. Wangchuk as he addressed the yatris during the inaugural session. He shared life lessons from his personal experience and journey of working to make a difference in society. He shared ingredients that go into innovation and entrepreneurship: curiosity to learn, empathy to solve problems, initiative to make things happen and experiences to build confidence. Each ingredient paves way for the other and together help one in the aspiration to become a nation builder.

In addition, he shared several examples where innovation is implemented to meet the needs of the people, such as applying the concept of convection to leverage solar energy to power the school building.

Dr. Wangchuk also touched upon the fact that aspirations of people are impacted by their perceptions; if the elite believe that living in an environmentally friendly building is prestigious, then those who look up to them will follow suit. Dr. Wangchuk also spoke about the #ilivesimply movement, and left us with a thought-provoking statement, "Live simply so that others may simply live."



Dr. Wangchuk  
at Jagriti Yatra

डॉ. सोनम वांगचुक एक इंजीनियर, इनोवेटर (अन्वेषक) और शिक्षा सुधारक है। उन्होंने बर्फ स्तूप तकनीक का आविष्कार किया जो कृत्रिम ग्लेशियर बनाने में सहयोग करता है। इस तकनीक द्वारा सर्दियों के पानी का भंडारण, एक शंख के आकार वाले बर्फ के ढेर के रूप में किया जाता है। इस आविष्कार हेतु उन्हें 2018 में रेमोन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

"सीखना केवल स्कूल, पाठ्य पुस्तक या शिक्षकों के बारे में नहीं है," डॉ. वांगचुक ने उद्घाटन समारोह के दौरान यत्रियों को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव और समाज में बदलाव लाने की अपनी कोशिश का विवरण कर जीवन के कुछ सबक सबके साथ साझा किए। उन्होंने ऐसे नुस्खे बताए जो नवाचार और उद्यमिता में काम आते हैं: सीखने की जिज्ञासा, समस्याओं को सुलझाने की सहानुभूति, चीजों को बनाने की पहल और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए अनुभव। यह सारी खूबियाँ एक राष्ट्र निर्माता या जो भी आकांक्षा रखता है राष्ट्र निर्माता बनने की, उनमें ज़रूर होती है। इसके अलावा, उन्होंने कई उदाहरणों के द्वारा यह बताया की नवाचार को लागू किया जाता है जहाँ लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि स्कूल की इमारत को बजिली देने के लिए सूर्य की ऊर्जा का लाभ उठाना। डॉ. वांगचुक ने इस तथ्य को भी छुआ कि लोगों की आकांक्षाएं उनकी धारणाओं से प्रभावित होती हैं; यदि अभिजात वर्ग के लोग यह माने कि पर्यावरण के अनुकूल इमारत में रहना चाहिए, तो जो लोग उन्हें देखते हैं, वे भी इसका पालन करेंगे।

डॉ. वांगचुक ने #ilivesimply आंदोलन के बारे में भी बात की, और कहा की, " हमें यह सोचना चाहिए की हम कनि चीजों के बिना नहीं जी सकते, ना की कनि चीजों से हमारा जीवन बेहतर हो जाएगा "।





## Keeper of Vivekananda's Legacy: Madhuvanti Ghosh

Role Model. Kanyakumari. Day 2

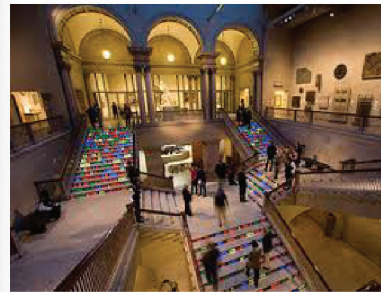
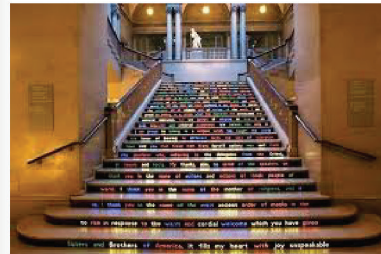


Madhuvanti Ghosh, the first Alsdorf associate curator of Indian, Southeast Asian, Himalayan and Islamic art at the Art Institute of Chicago, who has worked at the actual site where Swami presented his sisters and brothers of America speech shared pictures of the actual site of the speech. And shared many anecdotes about Swami Vivekananda's visit to America.

Miss. Madhuvanti narrated what happened on the day 9th September, 1893 on the podium. It was almost the end and Swamiji had still not spoken. Rev. John Henry Barrows who had organised this eventually turned to Swamiji and said it was his moment to speak now. Later on Swamiji has written that he was initially blank when he stood up. Then she said that it was a remarkable speech if we were to think that it was an extempore speech. She went on to add that swamiji became a star of the parliament which went on for a fortnight.

She said that she commemorated the speech at the art institute with an exhibition called Public Notice 3 from 9th September 2010 for a year. She curated it and Indian contemporary artist Jitish Kallat put it together. She said that 108 years before 9/11, Swamiji spoke about universal tolerance.

The entire speech was put up in LED lights on the staircase. The colours that were used were of homeland security to show the level of risk.



Madhuvanti Ghosh  
at Jagriti Yatra

मधुवंती घोष शिकागो के कला संस्थान में भारतीय, दक्षिण पूर्व एशियाई, हिमालयन, और इस्लामिक कला की पहली अल्सडॉर्फ सहयोगी संग्रहाध्यक्ष हैं। उन्होंने उस वास्तविक स्थान पर काम करते हुए समय व्यतीत किया है जहां स्वामी विवेकानंद ने अपनी प्रसिद्ध, "ब्रदर्स एंड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका" का भाषण दिया था। मधुवंती जी ने सभी के साथ उस स्थान की तस्वीरें और किस्से साझा किए। उन्होंने स्वामीजी की यात्रा से जुड़े कुछ अन्य संस्मरण भी साझा किए।

९ सितंबर १८९३ के दिन उस मंच पर घटित घटनाओं का वर्णन भी किया। उन्होंने बताया कि अंत तक स्वामीजी कुछ बोले नहीं थे, तब आयोजक रेव. जॉन हेनरी बैरोज ने स्वामीजी को बोलने के लिए आग्रह किया। इस विषय पर स्वामीजी ने लिखा है कि वे शुरुआत में सोच नहीं पा रहे थे कि क्या कहें। मधुवंती जी ने कहा कि यदि यह भाषण बिना किसी भी तैयारी के दिया गया था तो यह एक बेहद असाधारण भाषण था। इस भाषण के पश्चात स्वामीजी धर्म संसद में, जो एक पखवाड़े तक चली, बेहद लोकप्रिय हो गए।

मधुवंती जी ने बताया कि उन्होंने कला संस्थान में ९ सितंबर २०१० से एक वर्ष के लिए पब्लिक नोटिस ३ नामक एक प्रदर्शनी के माध्यम से इस भाषण की शुरुआत की थी। उन्होंने इसे व्यूरेट किया और जीतीश कल्लत जी ने उनका साथ दिया। मधुवंती जी ने कहा कि ९/११ से १०८ वर्ष पूर्व स्वामीजी ने सार्वभौमिक सहिष्णुता की बात कही थी। संपूर्ण भाषण को एल. ई. डी. लाइट्स के माध्यम से सीढ़ियों पर सजाया गया है। जोखिम स्तर को दर्शाने के लिए होमलैंड सिक्योरिटी के रंगों का उपयोग किया गया है।



## Sonu Sood and Neeti Goel

Role Model . Mumbai. Day 15



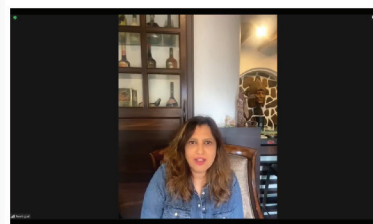
Lockdown has posed many challenges to the citizens of our country such as unemployment and food crisis for the poor. But one on-screen villain turned out to be a real life superhero, actor Sonu Sood.

He along with restaurateur Neeti Goel helped many migrant workers stranded in Mumbai to reach their homes. Their companionate work during the pandemic needs a standing ovation.

They sent over one lakh people home with their 'Ghar Bhejo' initiative. They joined Ruben Mascarenhas in 'Khana Chahiye' initiative and provided over 50 lakh meals and over 20 thousand ration kits. Later when the shramik trains started, they helped over 5 lakh people with food and water on their journey.

Neeti Goel said that to succeed one needs to believe in their dream and persist with it. Sonu Sood's message to the Yatri was 'The thought of bringing about change is amazing. But making it into an actual movement is always a challenge. Do not depend on a leader, be a leader and bring about the change'.

He ended saying that the mission has just started and by the time we meet again next year we would have learnt something.



Sonu Sood and Neeti Goyal  
at Jagriti Yatra

Covid-19 की वजह से राष्ट्रीय लॉकडाउन के कारण देश के गरीब तबके को बेरोज़गारी एवं खाने की कमी जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ा। ऐसे में फिल्म जगत का एक खलनायक असली ज़िंदगी में सुपर-हीरो बनके सामने आया, यह हैं अभिनेता सोनू सूद।

सोनू सूद ने नीती गोयल, जो कि एक रेस्टोरेंट चलाती हैं, के साथ मिलकर मुम्बई में फंसे कई हज़ार प्रवासी मज़दूरों को 'घर भेजो' मुहिम चला कर उनके घर पहुंचने का बीड़ा उठाया। इन लोगों का यह कार्य बेहद सराहनीय है। इन दोनों ने रुबेन मस्कारेनास की 'खाना चाहिए' मुहिम से जुड़ कर 50 लाख खाने की थालियां अथवा 20 हज़ार से ज्यादा खाने की सामग्री के किट का वितरण किया। जब श्रमिक एक्सप्रेस ट्रेनें चलीं तब उसमें भी 5 लाख लोगों को रास्ते के लिए खाना और पानी मुहैया कराया।

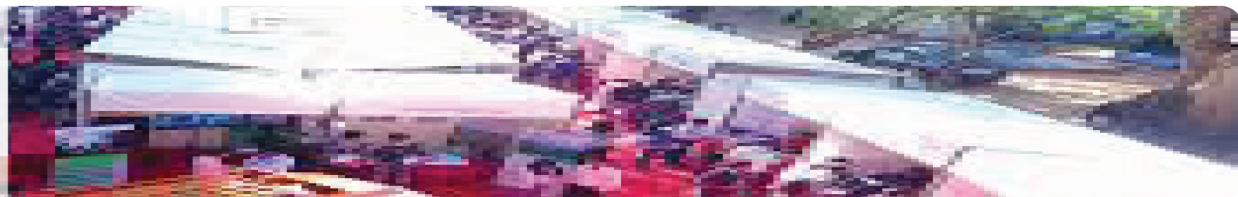
नीती गोयल का मानना है कि "किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए एक व्यक्ति को अपने सपने में विश्वास होना चाहिए अथवा अपने मार्ग पर अडिग रहना चाहिए"। वहीं सोनू सूद ने यात्रियों की हौसलाफ़ज़ाई करते हुए कहा कि "बदलाव लाने की सोच काफी रोचक होती है, पर उसको ज़मीन पर उतारने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। किसी के नेतृत्व का इंतज़ार नहीं करो, खुद उस बदलाव के नायक बनो"।

“जो हमें दिख रहा है यह तो बस एक अच्छे कार्य की शुरुआत है, जब वह हमसे अगली बार मिलेंगे तब उनके पास और बहुत कुछ होगा बताने और सीखने के लिए”, ऐसा कहकर सोनू सूद ने अपनी वाणी को विराम दिया।





## Jagriti Enterprise Mela



### Education and more

**Indian School of Democracy:** A non-partisan organization that conducts programs for aspiring, grassroots political leaders. We want to nurture principled leaders, with moral courage and imagination, to achieve sarvodaya.

**Indian School of Development Management:** An institution founded to create, strengthen and establish Development Management, a domain that transcends the exclusive silos of 'development perspectives' and 'management principles'.

**Involve Education:** Believe that developing agency in students and making them more self-reliant, will reduce the dependence on the adults in the learning process.

**Brook and Blooms:** Auspicious. Enliven. Aid. Made out of temple flowers. Their sustainable products take care of rivers from solid waste and worshipped flower waste & provide employment to the underprivileged.

**Dcal:** Low cost maintenance free water softeners, and a wide range of Diabetic Rice, Glycemic Rice.

**Narsimha Chary:** He is an innovative mind who is in the process of brightening up the world by bringing dead tube lights back to life.



### शिक्षा से आगे:

**इंडियन स्कूल ऑफ डेमोक्रेसी:** एक निर्दलीय संस्थान है जो उन कम अनुभवी स्तर के राजनीतिक प्रत्याशी नेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। हम सर्वोदय प्राप्त करने के लिए सिद्धान्तवादी नेताओं को नैतिक साहस और कल्पना के साथ प्रशिक्षित करना चाहते हैं।

**इंडियन स्कूल ऑफ डेवलपमेंट मैनेजमेंट:** एक संस्थान जो विकास के प्रबंधन को बनाने, मजबूत करने और स्थापित करने के लिए स्थापित किया गया, एक ऐसा ज्ञान क्षेत्र जो 'विकास के दृष्टिकोणों और प्रबंधन सिद्धांतों' के विशेष सिलोस को पार करता है।

**इन्वॉल्व एजुकेशन:** हमें इस बात पर विश्वास करना होगा कि छात्रों में विकासशील एजेंसी और अधिक आत्मनिर्भरता सीखने की प्रक्रिया में उनकी वयस्कों पर निर्भरता कम हो जाएगी।

**ब्रुक एंड ब्लूम्स:** शुभ। बढ़े हुए। सहायता मंदिर के फूलों से बना है। उनके स्थायी उत्पाद ठोस अपशिष्ट और पूजा फूल कचरे से नदियों की देखभाल करते हैं और वंचितों को रोजगार प्रदान करते हैं।

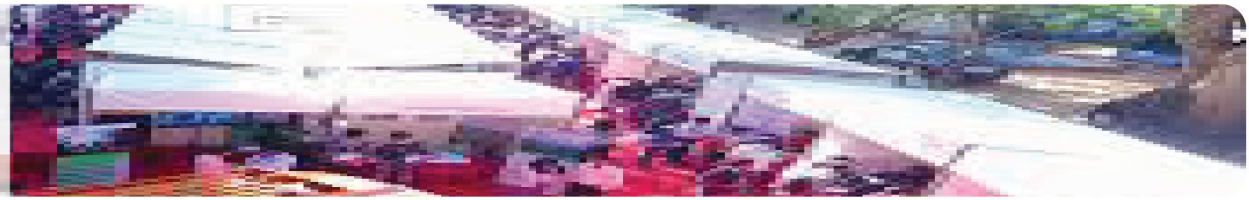
**डिकैल:** किफ़ायती कीमत में रखरखाव के लिए मुफ्त पानी सॉफ्टनर और डायबिटिक चावल, ग्लाइसेमिक चावल की एक विस्तृत श्रृंखला।

**नरसिम्हा चारी:** वह एक अभिनव दिमाग है, जो मृत ट्यूब लाइटों को वापस जीवन देकर दुनिया को रोशन करने की प्रक्रिया में है।

Enterprises  
at Jagriti Yatra



## Jagriti Enterprise Mela



### Agriculture Urbanization and Environment

**Centre for Applied Research and People's Engagement:** A solid waste management, green cover management and waste water management organization aiming to achieve inclusive sustainable villages, towns and cities.

**Pop-Up Housing:** Aims to solve the affordable and accessible space problems in cities, using light structures and recycled materials.

**Be Basket:** Along with the conservation of bees, their objective is to infuse raw honey in its purest form into your daily lifestyle for a healthier living.

**Abeera Creations:** Has a vision to empower women so that she becomes stronger and more confident especially in controlling her own life.

**Lalit Greens:** Works on a process which replaces the use of wood with recycled newspaper.



Enterprises  
at Jagriti Yatra

### कृषि शहरीकरण और पर्यावरण:

**सेन्टर फ़ॉर एप्लाइड रिसर्च एंड पीपुल्स एंगेजमेंट:** एक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, ग्रीन कवर प्रबंधन और अपशिष्ट जल प्रबंधन संगठन, जिसमें समावेशी टिकाऊ गांवों, कस्बों और शहरों को प्राप्त करने का लक्ष्य है।

**पॉप-अप हाउसिंग:** शहरों में सस्ती और सुलभ रिहाइशी जगह की समस्याओं को हल करने के लिए, प्रकाश संरचनाओं और पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग करना।

**बी बास्केट:** मधुमक्खियों के संरक्षण के साथ उनका उद्देश्य अपने शुद्ध जीवन शैली में कच्चे शहद का उपयोग स्वयं को एक स्वस्थ जीवन देना है।

**अबीरा क्रिएशन्स:** महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ताकि वे विशेष रूप से अपने जीवन को नियंत्रित करने के लिए मजबूत और अधिक आत्मविश्वासी बन जाएं।

**ललित ग्रीन्स:** एक ऐसी प्रक्रिया पर काम करता है जो पुनर्नवीनीकरण अखबार के साथ लकड़ी के उपयोग की जगह लेती है।





## Jagriti Enterprise Mela



### Technology and Healthcare

**Think Raw India:** A Women centric Enterprise that implements efficient Renewable Energy Solutions addressing today's one of the primary needs that has been underlined as a major future challenge to mankind – Climate Change.

**Get my parking:** Provider of Interoperable Smart Parking Platform connects all parking and mobility stakeholders on a common platform who were until now operating in silos.

**Pacify Medical:** an innovation-driven company solving unmet clinical needs in the field of medical technologies.

**SatSure:** A bespoke geospatial big data platform combines satellite imagery, proprietary algorithms, with weather, IoT, drone imagery, social and economic datasets, and cadastral amongst others to generate near real time location specific insights.

**Magan Khadi:** Built on Gandhian vision, and with a strong legacy connect to his personal involvement, this is an enterprise that is uniquely progressive in its holistic approach to community development, combining traditional skills from across regions, current scientific advances, design expertise, and a pulse of changing fashion trends of individual and commercial customers.



Enterprises  
at Jagriti Yatra

### प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवा

**थिंक रॉ इंडिया:** एक महिला केंद्रित उद्यम जो आज के ज़माने की प्राथमिक जरूरतों में से एक को संबोधित करते हुए कुशल नवीकरणीय ऊर्जा समाधान को लागू करता है। इसे मानव जाति के भविष्य में आनेवाली एक बहुत बड़ी चुनौती माना गया है - जलवायु परिवर्तन।

**गैट माय पार्किंग:** इंटरऑपरेबल स्मार्ट पार्किंग प्लेटफॉर्म के प्रदाता एक साझा मंच पर सभी पार्किंग और गतिशीलता हितधारकों को जोड़ता है जो अब तक साइलो में काम कर रहे थे।

**पैसिफ़ाय मेडिकल:** चिकित्सा प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में एक अभिनव-संचालित कंपनी, जो नैदानिक आवश्यकताओं को हल करती है।

**सैटशियौर:** एक भू-स्थानिक बिग डेटा प्लेटफॉर्म ड्रोन इमेजरी, सामाजिक और आर्थिक डेटासेट के साथ उपग्रह इमेजरी, मालिकाना एल्गोरिदम को जोड़ती है, और वास्तविक समय, स्थान विशिष्ट अंतर्दृष्टि के निकट उत्पन्न करने के लिए दूसरों के बीच कैडस्ट्राल।

**मगन खादी:** गांधीवादी दृष्टि पर निर्मित, और एक मजबूत विरासत के साथ उनकी व्यक्तिगत भागीदारी से जुड़ती है, यह एक उद्यम है जो सामुदायिक विकास के लिए अपने समग्र दृष्टिकोण में विशिष्ट रूप से प्रगतिशील है, पूरे क्षेत्रों से पारंपरिक कौशल, वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति, डिजाइन विशेषज्ञता, और व्यक्तिगत और वाणिज्यिक ग्राहकों के बदलते फैशन के रुझान की एक नब्ज।



# Incubation



Digital Jagriti Yatra  
Participants





Deoria

Knowing middle India  
up close

As most of the yatris are focused on building enterprises for middle India, knowing the ground realities and problems of middle India is very critical. This is achieved by visiting Barpaar in Deoria and interacting with the local people. This year the interaction took a digital avatar. The yatris shared their questions with the JY team at Barpaar who spoke to the local people to get the insights. Purvanchal where Barpaar is situated has a GDP which is 30% lower than U.P. which in turn is 30% lower than India's GDP. Hence this region is apt to get a realistic picture of ground realities.

Some of the information yatris gathered the local people were regarding:

- Finance, loan, micro finance, etc.
- Employment and skill development to find employment.
- Education in the government school and the quality of education.
- Sending their daughter to city for higher education.
- The awareness of New Education Policy.
- Video based training opportunity for farmers.
- Single window policy for industrial approvals.
- Availability of internet technology as a facilitating medium.
- Initiatives which can improve employment in this area.
- Reason for both girls and boys to drop out of schools after intermediate.

देवरिया : मध्य भारत को करीब से जानना

चूंकि अधिकांश यात्री मध्य भारत के लिए उद्यम बनाना चाहते हैं, इसलिए मध्य भारत की ज़मीनी हकीकत और समस्याओं को जानना बहुत महत्वपूर्ण है। यह देवरिया के बारपार में जाकर और स्थानीय लोगों के साथ बातचीत करके ही मुमकिन हो सकता था। और यही देवरिया १०१ का मकसद था।

इस वर्ष बातचीत ने एक डिजिटल अवतार लिया। यात्रियों ने बारपार में जाग्रतयात्रा (JY) टीम के साथ अपने सवाल साझा किए और वहाँ मौजूद टीम ने अंतरदृष्टि प्राप्त करने के लिए स्थानीय लोगों से बात की।

पूरवांचल जहाँ बारपार स्थिति है वहाँ की जीडीपी यूपी से 30% कम है। जो बदले में भारत की जीडीपी से 30% और नीचे है। इसलिए यह क्षेत्र ज़मीनी वास्तविकताओं की वास्तविक तस्वीर पाने के लिए उपयुक्त है।

कुछ जानकारी यात्रियों ने एकत्रित की, जिसके बारे में स्थानीय लोगों को पता था:

- वित्त, ऋण, सूक्ष्म वित्त, आदि।
- रोज़गार और कौशल विकास।
- सरकारी स्कूल में शिक्षा और शिक्षा की गुणवत्ता।
- उच्च शिक्षा के लिए उनकी बेटी को शहर भेजना।
- नई शिक्षा नीति के बारे में जागरूकता।
- किसानों के लिए वीडियो आधारित प्रशिक्षण का अवसर।
- औद्योगिक स्वीकृति के लिए एकल खड़की नीति।
- एक माध्यम के रूप में इंटरनेट प्रौद्योगिकी की उपलब्धता।
- पहल जो इस क्षेत्र में रोज़गार में सुधार कर सकती है।
- लड़कियों और लड़कों का इंटरमीडिएट के बाद स्कूलों से नकिल जाने का कारण।



## Organizations

### Types of enterprises

As the Yatris endeavoured to come up with entrepreneurship ideas with their cohorts to pitch in the BGT competition, they also donned the hat of a curious college student eager to learn the nitty-gritties of entrepreneurship. Over the course of two days, they attended lectures by industry professionals, on diverse topics like types of enterprises, marketing & fundraising. Here, let's dive into a small recap of each of these sessions.

#### Types of enterprises

This session was anchored by an ex yatri, Kshitij Lunkad who is a Company Secretary and a lawyer. Giving the examples of JY which is centred around enterprise-led development and fosters the idea of building India through enterprise as social enterprise, he led the discussion on other types of enterprises. Kshitij told the yatris about the following:

- What is a business organization?
- What is the right form of ownership?
- What are the different types of organizations?
- How to choose the right type of organization?
- What are social and economic enterprises?

Then he spoke about the pros and cons of each type of organization, ending his talk with emphasis on social enterprises which most yatris were keen on. He gave detailed information about Society, Trust and Section 8 companies which come under social enterprises.

यात्रियों ने बीजीटी प्रतियोगिता में अपने बिज़नेस आयडीया प्रस्तुत करने के लिए अपने ग्रुप के सहकर्मियों के साथ मिलकर उद्यमशीलता के विचारों को एक मुमकिन बिज़नेस पिच बनाने का प्रयास किया।

वे उद्यमिता की बारीकियों को सीखने के लिए उत्सुक छात्रों की तरह जोश में थे।

दो दिनों के दौरान, उन्होंने उद्योग के पेशेवरों, उद्यमों के प्रकार, विपणन और धन उगाहने वाले व्याख्यान में भाग लिया।

आइए इन सत्रों में से प्रत्येक के एक छोटे से पुनरावृत्ति में गोता लगाएँ।

#### उद्यमों के प्रकार

इस सत्र की मेजबानी एक पूर्व यात्री, क्षितिज लुनकड ने की, जो कंपनी सचिव और वकील हैं।

जागृति-यात्रा एक ऐसा उदाहरण है जो उद्यम-आधारित विकास के आसपास केंद्रित है और सामाजिक उद्यम के माध्यम से भारत के निर्माण के विचार को बढ़ावा देता है। उन्होंने अन्य प्रकार के उद्यमों के बारे में चर्चा का नेतृत्व किया।

क्षितिज ने यात्रियों को इन बातों के बारे में बताया:

- व्यवसाय संगठन क्या है?
- स्वामित्व का सही रूप क्या है?
- विभिन्न प्रकार के संगठन क्या हैं?
- सही प्रकार का संगठन कैसे चुनें?
- सामाजिक और आर्थिक उद्यम क्या हैं?

उन्होंने सोसाइटी, ट्रस्ट और धारा 8 कंपनियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जो सामाजिक उद्यमों के तहत आती हैं।





## Marketing

Any product however great it is, needs to be marketed well. Marketing is the critical channel to selling and making money in turn making the enterprise sustainable and profit making. To shed light on the aspects of marketing, Mr Frederick Devarampati, Co-founder, StuMagz and an ex yatri gave marketing mantras to the current yatri.

Fredy said that, marketing mindset encompasses ideas like bias towards action, radical collaboration, craft clarity, focus on human values, experimentation and mindfulness. Such a mindset enables a marketer to reach the depths of a problem.

Moving on to the key factors involved in the marketing process, Fredy told about the 4Ps; Product, Price, Place & Promotion. Talking about marketing funnel - in the discovery phase (top of the funnel), the customer is unaware of the product. In the consideration phase (middle of the funnel), the customer is actively researching products. Lastly, in the purchasing phase (bottom of the funnel), the customer is ready to buy the product.

One advice which Fredy gives in respect to the various channels of marketing out there such as email, social media, online video, SEO, etc. is that it is best to focus on one or two marketing channels only instead of diversifying to all. His parting remark was that knowing your product well makes it selling easy.

चाहे कोई उत्पाद कितना भी अच्छा हो, उसे मार्केटिंग की जरूरत होती है। बिक्री और पैसा बनाने के लिए विपणन एक महत्वपूर्ण चैनल है और यह उद्यम को टिकाऊ और लाभकारी बनाता है। विपणन के पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए श्री फ्रेडरिक देवरमपति ने वर्तमान यात्रियों को विपणन मंत्र दिए। फ्रेडी स्टूमाग्स के सह-संस्थापक और एक पूर्व यात्री भी हैं। फ्रेडी ने कहा कि विपणन मानसिकता कार्रवाई, कट्टरपंथी सहयोग, शिल्प स्पष्टता, मानव मूल्यों, प्रयोग पर ध्यान देने के लिए एक पूर्वाग्रह जैसे विचारों को शामिल करती है।

इस तरह की मानसिकता एक बाज़ारिया को एक समस्या की गहराई तक पहुंचने में सक्षम बनाती है। विपणन प्रक्रिया में शामिल प्रमुख कारकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, फ्रेडी ने '4 पी' के बारे में बताया; उत्पाद (प्रोडक्ट), मूल्य (प्राइस), स्थान (प्लेस) और संवर्धन (प्रमोशन)।

चलो मार्केटिंग फ़नल के बारे में बात करते हैं। खोज चरण (फ़नल के शीर्ष भाग) में, ग्राहक आपके द्वारा बेचे जाने वाले उत्पाद से अनजान होता है। विचार चरण (फ़नल के मध्य भाग) में, ग्राहक सक्रिय रूप से उत्पादों पर शोध कर रहा है।

अंत में, क्रय चरण (फ़नल के निचले हिस्से) में, ग्राहक उत्पाद खरीदने के लिए तैयार है।

फ्रेडी ने विभिन्न विपणन चैनलों जैसे ईमेल, सोशल मीडिया, ऑनलाइन वीडियो, एसईओ, आदि के संबंध में यात्रियों को सलाह दी। उन्होंने कहा कि सभी में विविधता लाने के बजाय केवल एक या दो मार्केटिंग चैनलों पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा है। उनकी आखिरी टिप्पणी यह थी कि यदि आप अपने उत्पाद को अच्छी तरह से जानते हैं तो आप उसे आसानी से बेच सकते हैं।



## Fundraising

Fundraising is an indispensable phase that every startup goes through. It becomes quintessential for an entrepreneur to appreciate the importance of this aspect. Mr. Prashant Agarwal, Founder, Nivesh Gyaan shared his personal experiences and helped yatriis understand the basics of fundraising.

Mr Prashant says there are certain things one must have in place before starting fundraising - firm knowledge about the organisation, a system for acknowledging donations & donors and clarity about how the funds will be used. Then an analysis needs to be done about what funding sources to go for - debt, equity, crowdfunding & grants are some options.

Depending on the stage at which a venture is, it should decide what sources to go for. Fundraising is not easy and it is essential to have a proper plan in place and also understand the donor's mindset. Talking about this, Mr Prashant says that a person gives money to an organisation when they believe in that organisation's purpose & ability to succeed.

Also, no person gives money unless they are asked. Stating some facts - India has over 31 lac NGOs who are vying for CSR funds amounting to 20,000 crores every year. Only a top few NGOs get most of the funding.

He concluded the talk with describing 'The Funding Journey' in detail.

फंड रेज़िंग किसी भी उद्यम के लिए बहुत ही आवश्यक चरण (फेज़) है। एक उद्यमी के लिए इस बात का महत्व समझना बहुत अनिवार्य है। निवेश ज्ञान के संस्थापक प्रशांत अग्रवाल ने उनके व्यक्तिगत अनुभव यात्रियों के साथ साझा करते हुए फंड रेज़िंग की आवश्यक और मूलभूत जानकारी दी।

प्रकाश जी ने बताया की फंड रेज़िंग के पहले कुछ बातें ध्यान में रखना ज़रूरी है - आपको अपने संस्था के बारे में पूरी और पुख्ता जानकारी होना चाहिये, प्राप्ति सूचना (एकनोलेजमेंट) की व्यवस्था होनी चाहिये तथा पैसे कहाँ और कैसे इस्तेमाल किये जायेंगे इस बारे में स्पष्टता होनी चाहिये। इसके बाद एक विश्लेषण करना चाहिए की हमें किस तरह का फंड रेज़िंग करना है - कर्ज़, इक्विटी, क्राउड फंडिंग या ग्रैंट ये कुछ पर्याय है।

हमारा वेंचर किस स्टेज में है ये ध्यान में रखकर फंड्स के स्रोत के बारे में सोचना बेहतर होगा। फंड रेज़िंग बिल्कुल भी सुलभ नहीं है, इसलिये प्लानिंग बहुत जरूरी है। ये भी ध्यान में रखना होगा की जिससे हम पैसा लेने वाले है, उसकी सोच क्या है। ये बताते हुए प्रशांत जी ने आगे कहा की एक व्यक्ति किसी भी संस्था को तब तक पैसे नहीं देता, जब उसे संस्था के उद्देश (पर्पस) और सफल होने की क्षमता पर विश्वास न हो।

ये बात ध्यान रखना ज़रूरी है की कोई भी व्यक्ति माँगे बिना पैसे नहीं देता है। भारत में कुल ३१ लाख एनजीओ हैं जो लगभग २०,००० करोड़ रुपयों के सी एस आर फंड पाने की होड़ में है। उनमें से कुछ ही एनजीओ ऐसे हैं, जिन्हें ज़्यादातर फंड्स मिलते हैं।

भाषण के अंत में प्रशांत जी ने अपने 'फंडिंग जर्नी' के बारे में विस्तार में बताया।





Biz Gyan Tree

Miracles and innovations happen when people are driven together with a sole purpose of making a change in the world. Biz Gyan Tree was such a process.

From breaking the ice to discussing a way to solve the on ground problems the groups went through the entire gamut. JDY had already made the groups based on their interest area. The stage was set. Now was the time to create a business that would take up a problem and implement a solution that could be sustainable and scalable. The challenge was to create a business plan with a realistic approach. All 33 groups were needed to work upon one sector among the below eight:

1. Agriculture and Agri Business
2. Arts, Culture and Sports
3. Education and Knowledge
4. Energy and Climate
5. Finance
6. Health
7. Manufacturing
8. Technology

All minds were keen to find a unique and sustainable solution to the tier 2 and tier 3 cities' problems. This period really tested the multitasking capacity of the members. Attending all sessions starting from the morning, managing discussions with the group, getting into the shoes of the rural population to identify the need, learning the business model concepts from experts and applying them to their own model posed many challenges to the teams. These efforts brought forth some really innovative concepts and models.

एक समान उद्देश्य और सकारात्मक बदलाव की चेतना से ओत- प्रोत जब कई लोग एक साथ जुड़ते हैं और साथ मिलकर एकनिष्ठ होकर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ होते हैं तो समाधान की राहें खुलने लगती हैं समस्या के समाधान के लिए नयी खोजों का जन्म होता है। नवाचारों के माध्यम से चुनौतियां अवसर में बदल जाती हैं। जागृति यात्रा में एक ऐसी ही प्रक्रिया थी- ' बिज़्ञान ट्री '

जागृति यात्रा में यात्रियों को उनकी रुचि और अनुभवों के आधार पर पहले से ही यात्री-समूहों का गठन करके एक उचित वातावरण बनाया गया था। यात्रियों के लिए बिज़्ञान ट्री के रूप में एक मंच तैयार था, अब समय था मध्यभारत के टियर-1, टियर-2 जिलों की जमीनी समस्याओं और उनके समाधान के लिए एक बिजनेस नीति बनाने की जिससे ग्रामीण क्षेत्रों को सक्षम बनाया जा सके। नवोन्मेष का एक ऐसा माडल तैयार करना जिसे वास्तविक धरातल पर उतारा जा सके , जिसका विस्तार किया जा सके और जो बदलते समय के अनुरूप टिका भी रह सके।

यात्रा में गठित सभी 33 समूहों को निम्नांकित 8 क्षेत्रों में से किसी एक क्षेत्र पर अपना मॉडल प्रस्तुत करना था -

- 1 खेती और कृषि आधारित व्यवसाय
- 2 कला, संस्कृति और खेल
- 3 शिक्षा और विद्या
- 4 ऊर्जा और जलवायु
- 5 अर्थव्यवस्था
- 6 स्वास्थ्य
- 7 विनिर्माण / उत्पादन
- 8 तकनीक



## Biz Gyan Tree

The worth of all these efforts, late-night call discussions, brainstorming over revenue models and technicalities was to be convincingly pitched before the jury within 5 minutes. This process brought out some astounding ways to tackle the issues. The jury- who were also the experts in particular sectors- graded them and a winner from each sector was announced  
The ideas were:

Idea	BGT idea in one line
Agriculture and Agri Business	
We Kisaan	Creating ecofriendly products with farmers who are trained to grow high return-low effort crops, while developing farms for eco-tourism
FTB Enterprise	Building farm to business (restaurants) linkages via contractual farming, and promoting commodities from locally grown products
Kisan Setu	Providing market linkages to small and marginalized farmers growing organic produce in the hilly districts of Uttarakhand
Farmers Natural Fruits and Vegetables	A platform bringing together Organic farmers and customers, both in a physical and digital space
Forganic	Providing microbial solutions for chemical free farming
Organic Spices Enterprise Association	Using technology to scale-up turmeric farming, and access to larger and wider markets
Right from Farms	Establishing an eco system which is mutually beneficial for both farmers and consumers by providing direct access and removing middleman.

देश और शेष दुनिया के अन्य भागों से एकत्र यात्रीगण अब इस प्रक्रिया के माध्यम से एक ऐसा समाधान ढूंढने में जुट गये थे जो न केवल नवीन और अलग हो बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करते हुए समाज के लोगों को सक्षम भी बनाये ताकि वह बदलते समय के साथ कदमताल करें। समूहों के लिए यह एक कड़ी परीक्षा का दौर था क्योंकि अपनी सामूहिक चर्चा के साथ- साथ उन्हें यात्रा में चल रहे अन्य ज्ञानदायी सत्रों, प्रेरक व्यक्तित्व सत्र और अन्य विभिन्न विषयों पर आधारित चर्चा- परिचर्चा के सत्रों में भी सहभागिता करनी थी। व्यावसायिक दिग्गजों के अनुभवों से अभिसंचित होकर मॉडल की तकनीकी बारीकियों को सीखते हुए उसे अपने खुद की प्रक्रिया एवं सोच में शामिल करना, उस पर चिंतन- मनन करना एक देखने लायक प्रयास था। व्यावसायिक दिग्गजों के अनुभव अत्यंत ही प्रेरित करने वाले रहे जिसने यात्रियों को अपने मॉडल पर कार्य करने के लिए ऊर्जा प्रदान किया। सबने मिलकर अपने मॉडल की हर एक छोटी- बड़ी तकनीकी समस्याओं, उसे जमीन पर उतारने की रणनीति, उस पर लगने वाली लागत, वह समय के साथ बेहतर और टिकाऊ कैसे हो, कैसे लोगों के जीवन में इससे क्रान्तिकारी बदलाव लाया जा सके जैसे पहलुओं पर दिनों - रात मेहनत की। अपने मॉडल को दिये गये समय 5 मिनट में निर्णायक मंडल के समक्ष बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने और प्रभाव डालने की होड़ में मध्य भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को दूर करने के लिए कई विशिष्ट तरीके निकलकर आये जो इस प्रक्रिया का अत्यंत ही उद्देश्यपूर्ण और सुखदायी पहलू था।

हर क्षेत्र के विशेषज्ञों से युक्त निर्णायक मंडल ने उस क्षेत्र के अत्यंत ही विशिष्ट मॉडल को एक विजेता मॉडल के तौर पर चुना। क्षेत्रानुसार विजित मॉडल कुछ इस प्रकार हैं -

1. खेती और कृषि आधारित व्यवसाय

समूह :02 किसान सेतु- उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों में जैविक (आर्गेनिक) उत्पादन बढ़ाने वाले लघु और सीमांत किसानों को उपज़ के उचित दाम हेतु बाजार संपर्क प्रदान करना





Biz Gyan Tree

Arts Culture Sports	
Kalakariya	Providing secure livelihoods to traditional and indigenous artists while simultaneously investing in rural education
Khoj-e-Pratishta	Customizing screening/ scouting processes to tap unexplored sports potential across India
Satat Vikas	Reclaiming and redefining self-identity through exploration and acceptance of your roots

Education and Knowledge	
Aavya	Empowering teachers to transform the image of school teachers by building their personal & professional expertise and local knowledge
Jignyasu	Creating interactive educational toys using recycled paper to help children understand concepts better
My Ikigai	Connecting people with opportunities that will add value to their career path and are in alignment with their skillsets and inclination
Pencil Box	Enabling peer to peer learning by providing required support and training to local people and build local learning communities
Saksham Hum	Enabling and empowering Indian Rural Women socially, personally, financially and professionally through Training in Soft Skills
Sakshi	Providing early identification training, special educator services & learning kits to schools & parents for children with learning & intellectual disabilities

## 2. कला, संस्कृति और खेल

समूह 09: सतत् विकास- अपनी सामाजिक जड़ों को पहचानकर उसके अन्वेषण और स्वीकृति के माध्यम से स्वयं की पहचान को पुनः परिभाषित और प्राप्त करना

## 3. शिक्षा और विद्या

समूह 13: आव्या -सार्वजनिक विद्यालयों के शिक्षकों को उनके व्यावसायिक और व्यक्तिगत कौशल तथा स्थानीय ज्ञान के आधार पर अपनी प्रचलित छवि बदलने हेतु सशक्त बनाना



Biz Gyan Tree

Education and Knowledge	
Sashakt gram	Enabling holistic development (sensory-motor, cognitive development etc) of children between 6 months to 14 years
Shikshanet	Providing real time education e-governance system to empower institutes, students and policy makers with intelligent insights to enhance the quality of education
Swabhimaan	Helping school dropout children of construction labourers by bridging the gap between Policy and people and ensuring education and Employment to their family

Energy and Climate	
Garima	Working with key stakeholders including waste pickers to integrate in circulate economy while developing a free marketplace to trade waste
Parali Bricks	Inspiring people to take action towards sustainable consumption by using our bricks that promote recycling and reduce post-use littering
Trawillow	Providing affordable stay options to the consumers while minimizing negative social economic and environmental impacts on the local ecology and culture

Finance	
Urooj	A digital microlending platform for home-based businesses in Tier 2-3 cities which provides microcredit and business mentorship
Vrridhi	Ensuring credit availability for MSME and self help groups who don't fall under the ambit of traditional banking

#### 4. ऊर्जा और जलवायु

समूह 20: पराली ब्रिक्स- लोगों में ऐसी ईंटों के इस्तेमाल को बढ़ावा देना जिसे पुनः उपयोग में लाया जा सके ताकि इस्तेमाल के बाद होने वाले कचरे में कमी आये |

#### 5 अर्थव्यवस्था

समूह 33 : उरूज - लघु कर्ज देने वाला एक डिजिटल प्लेटफार्म जो ग्रामीण क्षेत्रों के घर - आधारित व्यवसायों को माइक्रो क्रेडिट और व्यवसाय के लिए उचित परामर्श प्रदान करे |





Biz Gyan Tree

Health	
Chikitsa Chakra	Establishing health kiosks at pharmacy counters to enable on-spot prescription generation through telemedicine and serve as a pre-primary health centre.
DigiSwasthya	Employing telemedicine in rural areas to solve the pertinent issues of accessibility and awareness and remotely connect patients with general physicians/specialists.
Swasthya Express	Bridging the gap of healthcare personnel focusing on family health services in rural and semi-urban settings, by setting up mobile clinics.

Manufacturing	
Aavas	Creating affordable, sustainable and portable housing solutions for middle India.
Bagasse	A sustainable disposable kitchenware product, made from bagasse.
Kasturi	Enabling and nurturing enterprises with new techniques and technology.

Technology	
Digi Dukaan	Building a technological platform only for SMEs to digitize their product catalog, reach to a wider audience and sell their products.
KhetiMate	Building a transparent partnership with producers to enable affiliated farmers through external resources to get cleaner produce
Rise of Rural	Providing skill based training to rural people to convert their raw materials into products and providing market access for the same.

## 6- स्वास्थ्य

समूह 24: डिजीस्वास्थ्य - ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीमेडिसिन के उपयोग से लोगों में स्वास्थ्य सेवा की पहुँच तथा इसके बारे में जागरूकता को बढ़ावा देकर मरीज़ और डॉक्टर को आपस में जोड़ना, स्वास्थ्य सेवा सुलभ करना<sup>6</sup>.

### उत्पादन / विनिर्माण

समूह 27: बैगैस ( खोइया ) - गन्ने से रस निकालने के बाद बचे हुए सूखे गन्ने अर्थात खोइया से रसोईघर में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं का निर्माण करना

## 7- अर्थव्यवस्था

समूह 33 : उरुज - लघु कर्ज़ देने वाला एक डिजिटल प्लेटफार्म जो ग्रामीण क्षेत्रों के घर - आधारित व्यवसायों को माइक्रो क्रेडिट और व्यवसाय के लिए उचित परामर्श प्रदान करे |

## 8. तकनीक

कोई विजेता नहीं

### सम्पूर्ण विजेता

समूह 02: किसान सेतु- उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों में जैविक (आर्गेनिक) उत्पादन बढ़ाने वाले लघु और सीमांत किसानों को उपज़ के उचित दाम हेतु बाज़ार संपर्क प्रदान करना ।



# Insights

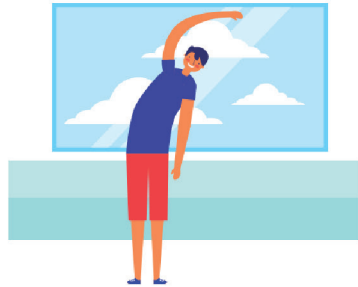


Digital Jagriti Yatra  
Participants





## Waking up to a new dawn



Each day of the Digital Yatra started with a wake-up call at 7 a.m., the yatriis were informed about the events of the day and welcomed to the city they would virtually visit on the given day.

At 7:30 a.m., Brijesh shared amazing and relatable insights with the yatriis. He spoke about the relevance of the upcoming events.

There were two very interesting aspects of this call which the yatriis looked forward to. Bargad Kriya of the day and "Sone Ki Chidiya", a quiz compiled and narrated by

Mr. Mahesh Jadhav. The intent of the quiz was to inspire yatriis by learning about the rich past of our country.

The seven Bargad Kriyas:

The first Kriya: Swaasth or Health. Here health refers to not only the physical but also the spiritual and emotional aspects of health. We should engage our body and mind in exercise to keep them fit.

The second Kriya: Shaanti or Silence. Post ablutions, we should sit in silence for 20 minutes and calm ourselves. We should learn to find the silence within the chaos that surrounds us. We should then refresh our purpose by connecting with our own selves.

एक नई सुबह

डिजिटल यात्रा के प्रत्येक दिन की शुरुआत सुबह 7 बजे फोन कॉल के द्वारा यात्रियों को जगाने से होती थी, जहाँ उन्हें दिन की गतिविधियों के बारे में सूचित किया जाता था और उस शहर में उनका स्वागत किया जाता था जहाँ ट्रेन उस दिन पहुंची थी।

सुबह 7:30 बजे बृजेश यात्रियों के साथ अद्भुत ज्ञान साझा करते थे। वह सभी को यह भी बताता था कि आगामी कार्यक्रम की प्रासंगिकता क्या है।

इस कॉल के दो बहुत ही दिलचस्प पहलू थे, जिनके बारे में यात्री उत्साहित रहते थे: उस दिन की बरगद क्रिया और "सोन् चिड़िया", एक प्रश्नोत्तरी जिसे श्री महेश जाधव ने संकलित और प्रस्तुत किया था। प्रश्नोत्तरी का उद्देश्य हमारे देश के समृद्ध अतीत के बारे में जानकारी देकर यात्रियों को प्रेरित करना था।

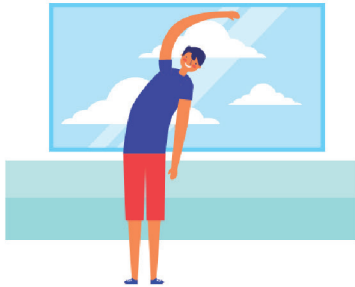
सात बरगद क्रिया:

पहली क्रिया: "स्वास्थ" या स्वास्थ्य। यहाँ स्वास्थ्य का तात्पर्य केवल शारीरिक ही नहीं है आध्यात्मिक और भावनात्मक स्वास्थ्य भी। हमें अपने शरीर और दिमाग को फिट रखने के लिए व्यायाम करना चाहिए।

दूसरी क्रिया: "शांती" या मौन। स्नान के बाद, हमें 20 मिनट के लिए मौन में बैठना चाहिए और खुद को शांत करना चाहिए। हमें अपने चारों ओर फैली अराजकता के भीतर अपने मन को शान्त रखना सीखना चाहिए। फिर हमें अपने उद्देश्य के ओर कदम उठाना चाहिए।



## Waking up to a new dawn



The third Kriya: "Sakaratomak Soch" or Positive mindset. When we mindfully look at every situation in our lives through a positive lens, we can find the strength to keep going come what may. It is more important to go on, especially during the lows because only then would we get to the better times.

The fourth Kriya: "Sthaan" or Place. We need to focus on one place (metaspace or physical space) and dedicate a certain portion of our energy, time, and intent to focus on its development through a particular intervention.

The fifth Kriya: "Shravan" or Deep Listening. Since the yatra was digital, Brijesh emphasised the idea of deep reading as well. He pointed out that sometimes in the eagerness to share our own thoughts we forget to listen to what others are saying or writing. This would help us to learn from each other and thus, co-create and collaborate effectively.

The sixth Kriya: "Sakriya Nirmaan" or Building a positive bias in every action and every aspect surrounding us. The intent was to move everyone to build a feasible and realistic plan of action for the BGT activity. This would then prepare us to continue our work within our community and eventually contribute to this path of Sakriya Nirmaan!

The seventh Kriya: "Sadbhav" or Harmony through which we were encouraged to share a meal with a friend and use that time to share our mission and seek feedback to further enhance the same.

तीसरी क्रिया: "सकारात्मक सोच" या सकारात्मक मानसिकता। जब हम सकारात्मक लेंस के माध्यम से अपने जीवन में हर स्थिति को ध्यान से देखते हैं, तो हम आने वाले समय से जूझने की शक्ति पाते हैं। निरंतर चलते रहना, खासकर मुश्किल समय में आवश्यक है क्योंकि तभी हम बेहतर परिस्थितियों तक पहुँचेंगे।

चौथी क्रिया: "स्तवन" या स्थान। हमें एक स्थान (मेटा स्पेस या भौतिक स्थान) पर ध्यान केंद्रित करने और अपनी ऊर्जा, समय और उद्देश्य के एक निश्चित हिस्से को एक विशेष हस्तक्षेप के माध्यम से इसके विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

पाँचवीं क्रिया: "श्रवण" या दीप श्रवण। चूंकि यात्रा डिजिटल थी, बृजेश ने गहन पढ़ने के विचार पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कभी-कभी अपने विचारों को साझा करने की उत्सुकता में हम यह सुनना भूल जाते हैं कि दूसरे क्या कह या लिख रहे हैं। यह हमें एक दूसरे से सीखने में मदद करेगा और इस प्रकार, हम प्रभावी रूप से सहयोग कर सकते हैं।

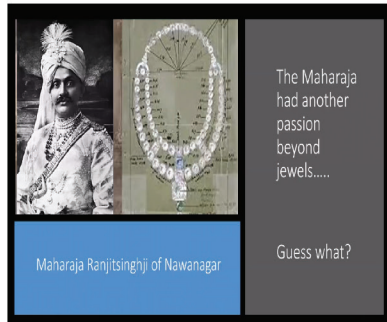
छठी क्रिया: "सक्रिय निर्माण" या हमारे आस-पास की हर क्रिया और हर पहलू में एक सकारात्मक पूर्वाग्रह का निर्माण। यह इरादा बीजीटी गतिविधि के लिए एक यथार्थवादी योजना बनाने के लिए हर किसी को उत्साहित करने का था। यही हमें हमारे समुदाय के भीतर अपने काम को जारी रखने के लिए तैयार करेगा और आखिरकार सक्रिय निर्माण के इस मार्ग में हम योगदान दे पायेंगे!

सातवें क्रिया: "सौभाग्य" या सदभाव जिसके माध्यम से हमें एक मित्र के साथ भोजन साझा कर और उस समय का सदुपयोग कर अपने मिशन को साझा करने और आगे बढ़ाने के लिए प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।





## Mornings with "Sone Ki Chidya"



"The Quiz from India's golden and global past"

Mr. Mahesh Jadhav had compiled a quiz for the yatris based on the stories from India's golden and global past. This kept the yatris glued to their screens and scramble to be the first to get the correct answer. The questions from the quiz were quite a revelation to many yatris.

"Sone Ki Chidiya" Episode 1: Global Demand for Indian products 2000 years ago.

The question that led to this episode was about the ivory statue of Goddess Lakshmi found in Pompei, Italy in 1938. The message of the quiz was, can we build India to its past glory?

"Sone Ki Chidiya" Episode 2: Rural Enterprise, Famous Ports and Cities of ancient India.

The quiz question was about the port Barygaza, the modern day Baruch through which India traded with Romans and Egyptians more than 2000 years ago. The message of the quiz was, India has been a world leader in trade having ties with ancient Roman and Egyptian empires, can we be the leaders again?

"Sone Ki Chidiya" Episode 3: Understanding foreign markets and competition

The quiz question was about Vasco da Gama's gift to the local Zamorin when he landed at Calicut after an 11-month journey, in May 1498 which were feather hats, wash basin and honey. The message of the quiz was, understanding the markets, the competition, and the intermediaries is of key importance when aiming for success in the global markets.

श्री. महेश जाधव जी ने यात्रियों के लिए एक प्रश्नोत्तरी बनाई। इससे यात्री स्क्रीनसे ही चिपके रहते और सबसे पहले सही जवाब देने के लिये होड़ लगाते। इस सवाल-जवाब से यात्रियों को चौंकाने वाली बातें पता चलीं।

सोने की चिड़िया - भाग १

२००० साल पहले भारतीय उत्पादों के लिये विश्वस्तर पर मांग - प्रश्न लक्ष्मीजी की हाथी दाँत से बनी मूर्ति के बारे में था जो १९३८ में इटली की पॉम्पे शहर में मिली।

इस एपिसोड ने हमें सोचने पर मजबूर किया कि - क्या हम भारत का ये गौरव वापस ला सकते हैं ?

सोने की चिड़िया - भाग २

ग्रामीण उद्यम, मशहूर बंदरगाह और भारत के पुराने शहर।

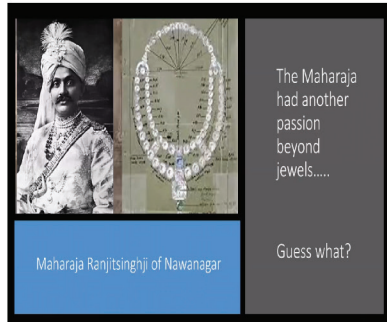
प्रश्न बरीगाड़ा बंदरगाह के (जो अब भरूच नाम से जाना जाता है) बारे में था, जहाँ से २००० साल पहले भारतीय रोमन्स और इजिप्शियन लोगों से व्यापार करते थे। इस प्रश्न से हमें यह पता चला कि रोमन्स और इजिप्शियन के साथ व्यापारिक संबंध रखनेवाला भारत इस क्षेत्र में पूरे विश्व की अगुवाई करता था।

सोने की चिड़िया - भाग ३

विदेशी मार्केट और वहाँ की कॉम्पिटिशन को समझना ११ महीने सफर करने के बाद मई १४९८ में वास्को द गामा जब कालीकट पहुँचे, तब उन्होंने वहाँ के नरेश (झामोरिन) को पंखवाली टोपी, चिलमची (वाँश बेसिन) और शहद आदि कुछ उपहार दिये। प्रश्न इस बारे में ही था और इससे हमें यह सीख लेनी चाहिये कि विदेशी बाजार, वहाँ की कॉम्पिटिशन की हमें अच्छी समझ होनी चाहिये। ऐसी जगह कामयाब होने के लिए मध्यस्थ का होना जरूरी होता है।



## Mornings with "Sone Ki Chidya"



"The Quiz from India's golden and global past"

"Sone Ki Chidiya" Episode 4: Sometimes fast-follower strategy of product improvisation is better than invention

The quiz question was about the rocket technology which the British learnt from Tipu Sultan's army. The message of the quiz was, while innovation is crucial, improvisation of existing technology based on learning is the way to progress.

"Sone Ki Chidiya" Episode 5: World-class winners ask the right questions and fail-fast to achieve greatness  
The quiz question was about the Nobel laureate Dr. C.V important research on Indian percussion instruments, especially Mridangam and Tabla, which he believed were superior to western drums because of their unique shape and tension equalizers. The message of the quiz was, the importance of asking the right questions and of failure.

"Sone Ki Chidiya" Episode 6: Branding and Film Promotion by the French Jewelers and India's royal heritage. The quiz question was about the \$150 Million necklace worn by Anne Hathaway in the movie "Oceans 8" was made by Cartier, a French luxury jeweller which was a replica of the original necklace that Jacques Cartier had specially designed and made for the Maharaja of Nawanagar. The message of the quiz was, the importance of branding, advertising, and promotion of an enterprise.

सोने की चिडिया- भाग ४

कभी कभी नयी कल्पना /उत्पाद लाने से बेहतर है कि हम किसी बनी बनाई कल्पना / उत्पाद को फॉलो करें ।

प्रश्न था रॉकेट टेक्नॉलॉजी के बारे में जो ब्रिटिश सैनिकों ने टीपू सुलतान की आर्मी से सीखा था ।

इनोवेशन जरूरी है लेकिन कभी कभार जो तकनीक पहले से ही मौजूद है, उसे हम देखें, उससे कुछ सीखें तो बेहतर है ।

सोने की चिडिया - भाग ५

विश्वविजेता हमेशा सही सवाल पूछते हैं और कभी कभी गलती करना हमें जल्दी सफलता की ओर लेकर जाता है ।

नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. सी.वी. रमन ने भारतीय तालवाद्य (मृदंग ,तबला) के बारे में रिसर्च किया था । उनका कहना था कि हमारे वाद्य खास आकार और सुर मिलाने की तकनीक (टेन्शन इक्वालाइजर) की वजह से विदेशी ड्रम्स से बेहतर हैं ।

सीख: सही सवाल पूछने और असफल होने का महत्व ।

सोने की चिडिया - भाग ६

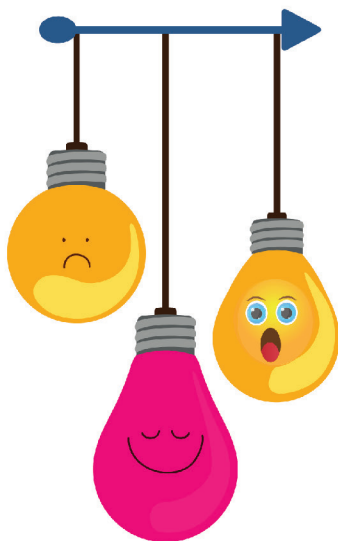
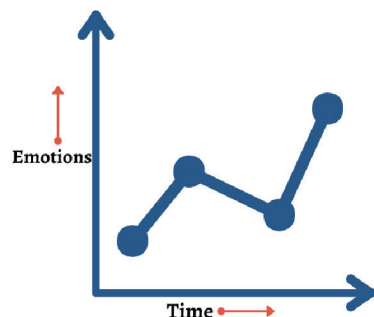
फ्रान्स की जौहरी की ब्रैंडिंग, फिल्म प्रमोशन एवम् हमारी शाही विरासत ऐनी हाथवे ने 'ओशन ८' फिल्म में एक हार पहना था, जिसकी कीमत १५० मिलियन यू.एस. डॉलर थी । जैक्स कार्टियर ने नवानगर के महाराजा के लिए एक हार बनाया था; मूवी में इस्तेमाल किया हुआ हार इसी हार की नकल था । ध्यान मे रखिये - ब्रैंडिंग, एडवर्टाइजिंग और अपने उपक्रम का प्रमोशन जरूरी है ।





## Lifeline activity

### "Peer to peer learning"



When 500 people from different walks of life came together digitally to experience stories from all over the country, the key challenge is to break the ice and get to know each other. Though they were divided into cohorts based on the common interests (verticals) and into a group of three cohorts, bonding with strangers digitally was difficult.

This challenge was overcome by an engaging activity, the Lifeline activity. The activity was an interesting way to introduce every yatri within the groups and get to know each other well. Every yatri in the group was to narrate the story of their life within 5-7 minutes in the form of a line graph. The y-axis of the graph represented the way a person felt emotionally, and the x-axis represented the time.

Sharing your life via a graph with a group of complete strangers digitally was daunting. As they interacted for the first time for the activity, there was the much-anticipated hesitation, not everyone was comfortable to switch on the video, or share their journey. In some groups it was heartening to see some yatri who started with tentative steps emerging as heroes having packed in so much of rich experience which left others in awe. The learnings from the activity helped gain varied perspectives.

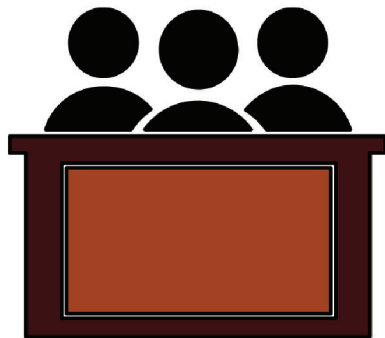
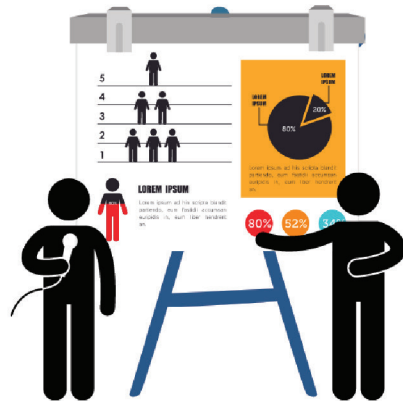
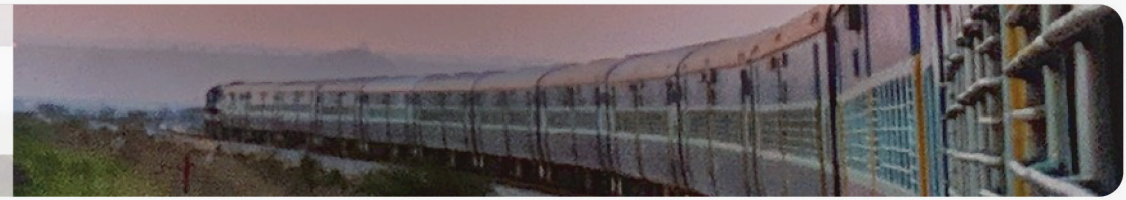
जब देश भर से जीवन के विविध क्षेत्रों से ५०० लोग एक साथ जागृति यात्रा में एकत्रित हुए तब चुप्पी तोड़ना और एक दूसरे को जानना प्रमुख चुनौती थी। यद्यपि समान रुचियों के आधार पर इन सभी यात्रियों का कोहोर्ट्स में विभाजन किया गया। ऐसे प्रत्येक तीन कोहोर्ट्स को मिलाकर एक समूह की रचना हुई तदपि बिना साक्षात्कार के अजनबियों के साथ डिजिटल रूप से संवाद स्थापित करना कठिन था।

इस चुनौती को दूर करने के लिए जागृति ने एक आकर्षक गतिविधि से हम सबको अवगत कराया- जीवन रेखा गतिविधि। यह एक दिलचस्प गतिविधि थी जिसमें समूह में उपस्थित हर यात्री को अपने जीवन की कहानी 5-7 मिनट के भीतर सुनानी थी। यह एक दूसरे को अच्छी तरह से जानने का बहुत ही अद्भुत तरीका था। समूह में हर यात्री को अपनी कहानी एक रेखा चित्र के रूप में दिखानी थी जिसमें वाई-अक्ष रेखा बताती थी जिस तरह से एक व्यक्ति भावनात्मक रूप से महसूस करता है और एक्स-अक्ष रेखा ने समय का प्रतिनिधित्व किया।

डिजिटल रूप से पूर्ण अजनबियों के समूह के साथ एक रेखा चित्र के माध्यम से अपने जीवन को साझा करना चुनौतीपूर्ण था। जैसा कि उन्होंने पहली बार इस गतिविधि के लिए बातचीत की, वहाँ अपेक्षित झिझक थी, हर कोई अपना चेहरा दिखने के लिए वीडियो को चालू करने या अपनी यात्रा साझा करने के लिए सहज नहीं था। कुछ समूहों में यह देखकर खुशी हुई कि कुछ यात्रियों ने शुरू किया अपने जीवन का रेखा चित्र देखना, जो कि अस्थायी कदमों के साथ उभरते हुए नायकों के रूप में उभरे थे, जो इतने समृद्ध अनुभव में परिपूर्ण थे कि दूसरों को विस्मय में छोड़ दिया। इस गतिविधि से मिली सीख ने विभिन्न दृष्टिकोणों को हासिल करने में मदद की।



## AC Chair Car Presentations



"Peer to peer learning"

There were two major group activities, the AC chair car presentations of the role model organizations and the Biz Gyaan Tree Plan.

These sessions were packed with learning and yatri could learn about team building, collaborating, strategizing, SWOT analysis, finding innovative solutions, validating ideas, making financial plans and forecasting and not to miss making the elevator (Or is that chair car?) pitch.

The session on presenting about the role model organization was fairly easy as all required data was available. It was like a dress rehearsal. The only difficult part was coming up with a replication model. Though only two days time was available many teams came up with innovative replication models, however not many team dynamics were evident.

Then came along BGT, the business plan competition where every group had to pitch their plan in front of a jury. There were several challenges encountered across groups. Every yatri in the group had their own opinion, and inspired by the role-model sessions and the various discussions on the digital platform, everyone was eager to share their ideas. Time was of essence here, as from the company's registration to the day of the pitching, the yatri had only 5 days!

Each group had a unique journey in this process. A few groups had everything planned out, even before the BGT registration, and everyone collaborated effectively. Though, most of the groups had their own share of disagreements at several stages of the process. Getting a majority to agree on the final business idea was quite challenging and time taking.

इन सत्रों का उद्देश्य था की सारे यात्री टीम निर्माण, सहयोग, रणनीतिकार, विश्लेषण, नवीन समाधान खोजना, विचारों को मान्य करना, वित्तीय योजना बनाना, पूर्वानुमान बनाना सीखें और एलीवेटर पिच कैसे देते है उससे।

रोल मॉडल संगठन के बारे में प्रस्तुत करने का सत्र काफी आसान था क्योंकि सभी आवश्यक डेटा उपलब्ध थे। यह एक ड्रेस रिहर्सल जैसा था। एकमात्र मुश्किल हिस्सा था एक प्रतिकृति मॉडल बनाना। केवल दो दिन का समय उपलब्ध था, फिर भी सभी दलों ने काफी अभिनव प्रतिकृति मॉडल प्रस्तुत किये, परन्तु कुछ टीमों की गतिशीलता स्पष्ट नहीं थी।

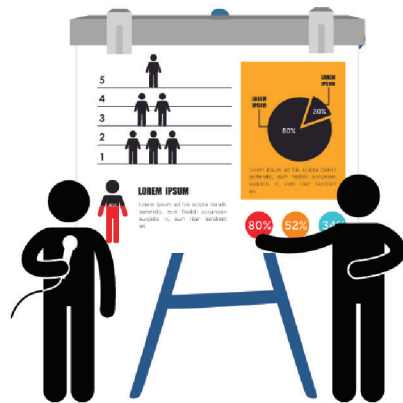
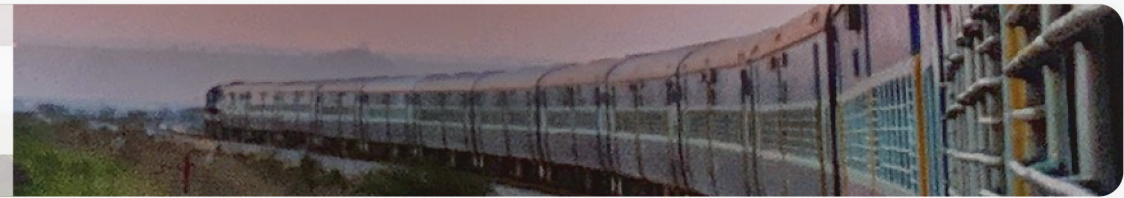
फिर आया बीजीटी: एक व्यवसाय योजना प्रतियोगिता, जहां हर समूह को एक निर्णायक मंडल के सामने अपनी योजना को प्रस्तुत करना था। समूहों के सामने कई चुनौतियाँ थीं। समूह के प्रत्येक यात्री की अपनी राय थी, रोल-मॉडल सत्र और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विभिन्न चर्चाओं से प्रेरित, हर कोई अपने विचारों को साझा करने के लिए उत्सुक था। समय यहाँ सार था, क्योंकि कंपनी के पंजीकरण से पिचिंग के दिन तक, यात्रियों के पास केवल 5 दिन थे!

इस प्रक्रिया में प्रत्येक समूह की एक अनोखी यात्रा थी। कुछ समूहों के पास बीजीटी पंजीकरण से पहले ही पूरी योजना बनी हुई थी, और सभी ने प्रभावी ढंग से सहयोग किया। दूसरी ओर ऐसे समूह भी थे जिनमें प्रक्रिया के हर चरण में खूब असहमति देखी | अंतिम व्यावसायिक विचार पर सभी की सहमती के लिए बहुमत प्राप्त करना काफी चुनौती पूर्ण और समय लेने वाला कार्य था।





## AC Chair Car Presentations



Some of the groups realised that and moved ahead with an idea and worked on developing the business plan. Others were engrossed in their discussions and could not finalise the idea till hours before the pitch. As a result, they did not get enough time to include the specific numbers (operational and financial aspects) in their plan!

Some groups shared their learnings and insights with the team members at Jagriti as well. Other groups sought their help to develop their ideas, and t

hen there were some groups in which the team members reached out to take the groups' initiatives further. In some groups, the facilitators became too proactive, while in others, they disappeared altogether. There were some groups where only 3-4 people were left in the end, and they chose to show up and perform.

The entire experience was overwhelming and full of challenges, learnings, and fun!

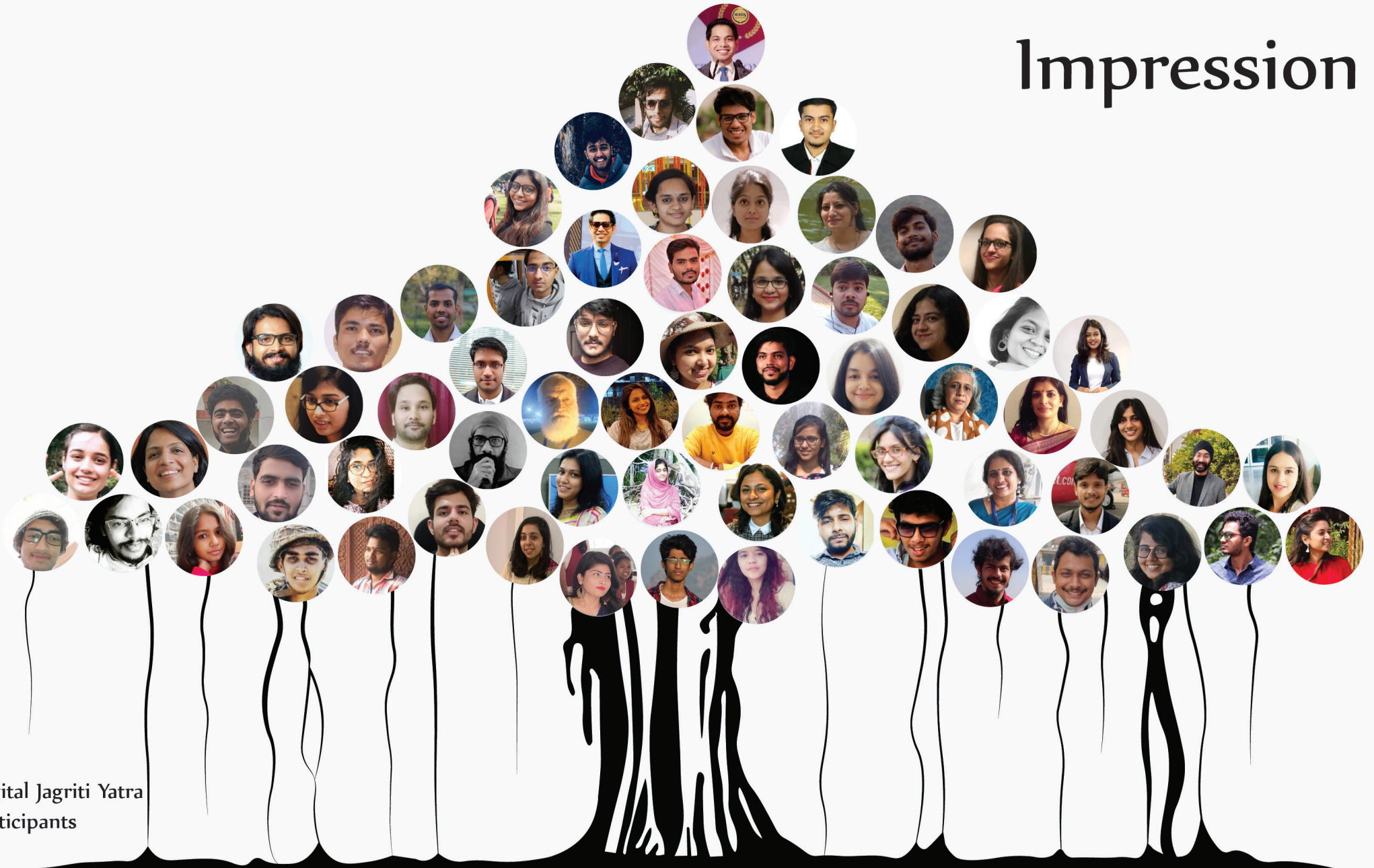
कुछ समूहों ने महसूस किया कि एक विचार के साथ आगे बढ़ना चाहिए और व्यवसाय योजना विकसित करने पर काम करना चाहिए। अन्य लोग अपनी चर्चाओं में तल्लीन थे और पिच से चंद घंटों पहले ही एक विचार पर सहमति पर आये। परिणामस्वरूप, उन्हें अपनी योजना में विशिष्ट संख्याओं (परिचालन और वित्तीय पहलुओं) को शामिल करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला!

कुछ समूहों ने अपने सीख और अंतर्दृष्टि को जागृति टीम के सदस्यों के साथ साझा किया। अन्य समूहों ने अपने विचारों को विकसित करने के लिए उनकी मदद मांगी और फिर कुछ समूह ऐसे थे जिनमें टीम के सदस्य समूहों की पहल को आगे बढ़ाने के लिए आगे आये। कुछ समूहों में, सुविधाकर्ता बहुत सक्रिय हो गए, जबकि अन्य में, वे पूरी तरह से गायब हो गए। कुछ समूह ऐसे थे जहाँ केवल 3-4 लोग ही बचे थे, फिर भी वे आगे आये और अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

पूरा अनुभव भारी चुनौतियों, सीख और मज़े से भरा था!



# Impression



Digital Jagriti Yatra  
Participants





## KOHINOOR KI KHOJ

31st December, 2020



### Jagriti Yatra ► JDY Main

31st December at 11:59pm

Being on a digital train was no barrier for us to come together and celebrate New Year's Eve with great enthusiasm and pomp. One of the highlights of the celebration was the many "kohinoors" on display! Be it singing, dancing, painting or poetry - the yatris showcased their talents in 90 seconds clips. Sitting in the comfort of our homes, we enjoyed the talent show with rapt attention and cheered each other on as we welcomed the New Year 2021!

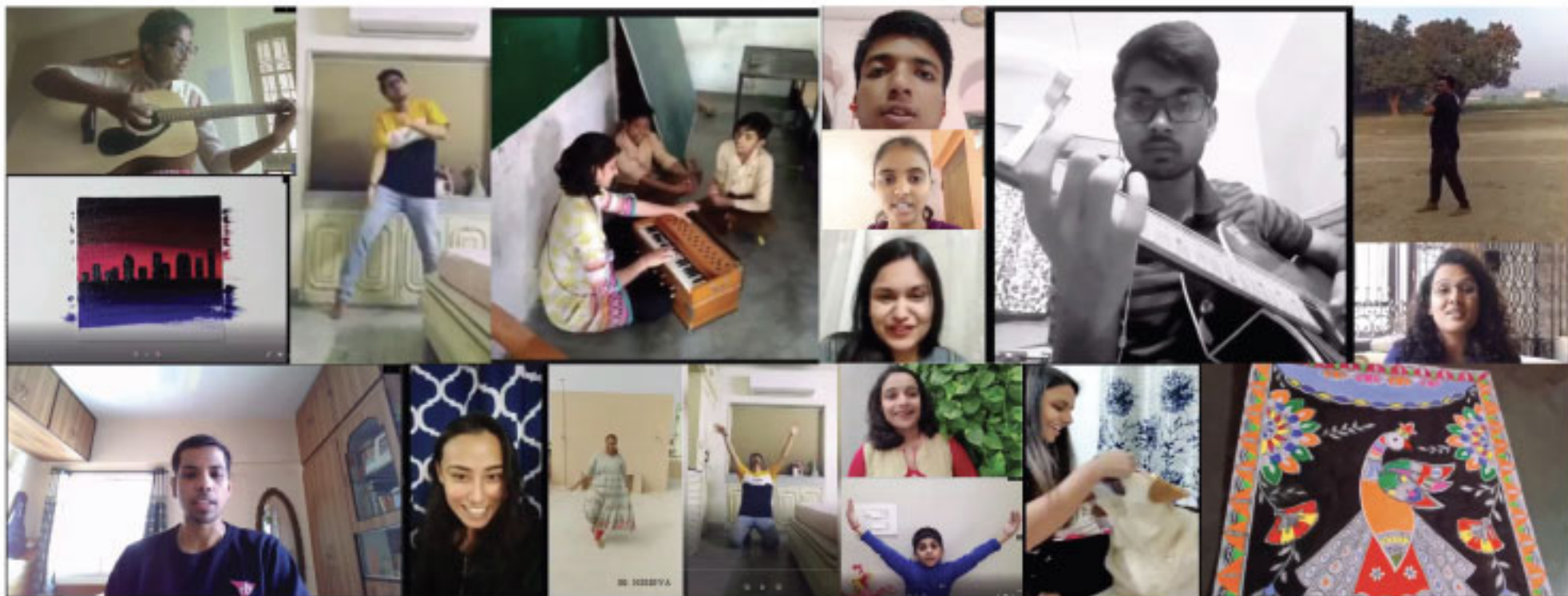


### Jagriti Yatra ► JDY Main

31st December at 11:59pm

वास्तविक यात्रा के स्थान पर एक डिजिटल ट्रेन में सवार हम यात्रियों को साथ आने व नव वर्ष की पूर्व संध्या को बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाने में कोई बाधा नहीं आयी। उत्सव के मुख्य आकर्षण, यात्रियों में से ही कुछ "कोहिनूर" थे! यात्रियों को ९० सेकंड की वीडियो क्लिप के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना था।

हमने नए साल 2021 का स्वागत बड़े खुशनुमा अंदाज़ में किया - अपने घरों के अंदर आराम से बैठकर पूरे परिवार और जागृति डिजिटल परिवार के साथ लैपटॉप और फ़ोन पर प्रतिभा प्रदर्शन का आनंद उठाया।







## IMPACT OF THE DIGITAL YATRA



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

### Demographic of Yatris

500+ yatri participated in the digital yatra  
50% of yatri were women  
Rural 53%, Semi-Urban 30% and Urban 17%  
38% were students, 31% were employed and 16% were entrepreneurs  
Yatri were from 28 states, 6 UTs of the country  
2.3% of yatri were foreign nationals from 14 countries  
Average age is 24 years and 7 months for participants

### 43+ hours of recorded content

Automated morning wake up call, City introduction videos, Role model sessions, Panel discussions, Some ki Chidiya Indian history quiz, Closure video for the day

### 48+ hours of live content

AC Chair Car presentations, BGT presentations, Q&A session of role models, Morning greeting

### 147 JDY official groups for engagement among groups and cohorts

### 50 groups created by yatri

for specific engagement and interaction on a particular topic and/or discussion in a particular language (Hindi/Marathi)

### 40+ speakers from 12+ cities working in 10+ sectors



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

### यत्रियों का जनसांख्यिकी

डिजिटल यात्रा में 500+ यात्रियों ने भाग लिया  
यत्रियों में से 50% महिलाएं थीं  
ग्रामीण 53%, अर्ध-शहरी 30% और शहरी 17%  
प्रतिभागी देश के 28 राज्यों, 6 वैद्य शासित प्रदेशों से थे।  
2.3% प्रतिभागी 14 देशों के विदेशी नागरिक थे।

### 43+ घंटे की रिकॉर्ड सामग्री

ऑटोमैटिक मॉर्निंग वेक अप कॉल, सिटी इंट्रोडक्शन वीडियो, रोल मॉडल सेशन, पैनल डिस्कशन, सोम की चिड़िया भारतीय

### 48+ घंटे की लाइव सामग्री

एसी चेयर कार की प्रस्तुतियाँ, बीजीटी प्रस्तुति, जयू एंड ए सेशन ऑफ रोल मॉडल, मॉर्निंग ग्रीटिंग

### साथियों के बीच बातचीत के लिए 147 JDY आधिकारिक समूह

### यत्रियों द्वारा बनाए गए 50 समूह

किसी विशेष विषय पर विशिष्ट जुड़ाव और बातचीत और / या किसी विशेष भाषा में चर्चा के लिए (हिंदी / मराठी)

### 10+ क्षेत्रों में काम करने वाले 12 शहरों के 40+ वक्ता

Families of yatri also  
part of the yatra

Engagement among  
yatri with 3.7K  
comments from 450  
yatri watching the  
valedictory session live

Yatri took initiative  
and volunteered to do  
translation live to make  
it accessible and  
inclusive from language

Discussions are  
happening late in the  
night! Did you know  
that lights were off on  
the train at 11PM?

Yatri are able to watch  
the role model sessions  
and panel discussions  
again and again

यात्रियों के परिवार के सदस्य  
भी यात्रा का हिस्सा होते थे

450 यात्रियों के द्वारा 3.7  
हजार टिप्पणियों, सत्र देखने  
की 2 घंटे 45 मिनट की

यात्रियों ने पहल की और  
भाषा के दृष्टिकोण से इसे  
सुलभ और समावेशी बनाने

देर रात तक हो रही चर्चाएँ!  
क्या आप जानते हैं कि ट्रेन में  
रात 11 बजे बंद लाईट बन्द

यात्री वर्कफ्लेस पर बार-बार  
रोल मॉडल सत्र और पैनल  
चर्चा देखने में सक्षम थे





## IMPACT OF THE DIGITAL YATRA



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

Both the physical and digital yatra have their own set of pros and cons. The digital platform gave the liberty to avoid the conflict altogether, whenever one decided. Handling conflicts is challenging, when we did not want to face them digitally, all we had to do was end the call. During the physical yatra, we would have been forced to handle them as there was no option to avoid!

During the physical yatra, we get the opportunity to talk and interact with people of different groups. In the digital yatra, this was challenging. We could reach out to other yatis individually, but inter-group interactions were limited.

There were several other challenges of the physical yatra that the digital one did not have to deal with. Living on a train for 15 days with so many new people around, adapting with the everyday challenges, and participating in the various activities would be an altogether different experience. This would give more opportunities for people to bond and cherish the connections thereafter.

The digital yatra too had its own limitations as many took time to get on to the digital platform. Finding their compartment (cohort) and bogie (group) posed challenges to some. But after the initial hiccups, the digital train chugged along smoothly.



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

वास्तविक और डिजिटल यात्रा दोनों के अपने-अपने फायदे व नुकसान हैं। वास्तविक यात्रा में मतभेदों का सामना करना ही पड़ता है जबकि डिजिटल यात्रा में कॉल काटकर आप मतभेद से पूरी तरह से बच सकते हैं।

वास्तविक यात्रा के दौरान, हमें विभिन्न समूहों के लोगों के साथ बात बातचीत करने का अवसर मिलता है। डिजिटल यात्रा में यह चुनौतीपूर्ण था। हम व्यक्तिगत रूप से अन्य यात्रियों तक पहुँच सकते थे, लेकिन अंतर-समूह बातचीत सीमित थी।

वास्तविक यात्रा की कई अन्य चुनौतियाँ होती हैं जैसे अनेक अनजान लोगों के साथ 15 दिनों ट्रेन में रहना, ट्रेन पर रोज़मर्रा की चुनौतियों से जूझना, और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना बिल्कुल ही अलग अनुभव होता। डिजिटल यात्रा ने इन सब चुनौतियों से सबको दूर रखा।

डिजिटल यात्रा की भी अपनी सीमाएँ थीं क्योंकि कुछ यात्रियों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म को समझना एक चुनौती थी। बहुत लोगों को अपने कंपार्टमेंट (कॉहोर्ट) और बोगी (समूह) को खोजने में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन शुरुआती हिचकी के बाद, पूरी डिजिटल ट्रेन पटरी पर आ गयी और आसानी से आगे बढ़ गई।

**79%**

Inspiration  
& Confidence

**61%**

Understanding of  
entrepreneurship

**51%**

Clarity on  
your goal

**65%**

Understanding of  
Middle India

**53%**

Connections with  
others (networking)

**79%**

प्रेरणा और  
आत्मविश्वास

**61%**

उद्यमिता  
की समझ

**51%**

अपने लक्ष्यों  
पर स्पष्टता

**65%**

दूसरों के साथ  
की समझ

**53%**

दुसरो के साथ  
जुड़ाव (नेटवर्किंग)



## IMPACT OF THE DIGITAL YATRA



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

"Coming out of my comfort zone and able to keep my points even if it is right or wrong without any fear in front of a group of people."

"It improved my English speaking skills."

"Leadership and patience of listening"

"Changed the thought to look at life. A lot of positivity and starting our own something rather than employment."

"The wisdom from each role model for the strong character of an entrepreneur"

"I was able to look inside me for the changes I need to incur to be the best version of myself."

"I learned to interact with many new people and learned how to work in a big group of being the youngest in the group!"

"Yatra helped me to look within myself and reflect upon my truest self. Much grateful for that. I joined Yatra when I was struck in a low point of my life, with tears in eyes and many sleepless nights. Thank you for making me believe I'm one of a kind and important for the nation building process."



Jagriti Yatra ► JDY Main  
26th December at 3:00pm

"आरामदायक स्थिति से बाहर आना और लोगों के समूह के सामने बिना किसी डर के सही या गलत होने पर भी अपनी बात रखने में सक्षम होना।"

"इससे मेरे अंग्रेजी बोलने के कौशल में सुधार हुआ।"

"नेतृत्व और सुनने का धैर्य"

"जीवन को देखने के लिए विचार को बदल दिया। बहुत सारी सकारात्मकता और रोजगार के बजाय हमारे खुद का कुछ शुरू करना।"

"एक उद्यमी के मजबूत चरित्र के लिए प्रत्येक रोल मॉडल से ज्ञान"

"मैं अपने अंदर उन बदलावों को देखने में सक्षम था जो मुझे खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनने के लिए आवश्यक थे।"

"मैंने कई नए लोगों के साथ बातचीत करना और सबसे कम उम्र का होकर बड़े समूह में काम करना सीखा!"

"यात्रा ने मुझे अपने भीतर देखने और अपने सबसे अच्छे स्व को प्रतिबिंबित करने में मदद की। उसके लिए बहुत आभारी हूँ। मैं यात्रा में तब शामिल हुआ जब मैं आँखों में आँसू और कई बिन सोयी रातों की नींद के साथ अपने जीवन के एक निचले बिंदु पर था। मुझे यह विश्वास दिलाने के लिए धन्यवाद कि मैं राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया के लिए एक अनोखा और महत्वपूर्ण व्यक्ति हूँ।"





## IMPACT OF THE DIGITAL YATRA



Jagriti Yatra ► JDY Main

26th December at 3:00pm

"Paradigm shift towards many aspects of life like poverty, mindful giving"

"I am now able to align more with my goals and also, I got to see how important the is community around me and my responsibilities towards my country."

"Being accepted, heard and celebrated for who you are gave a confidence to speak my mind. I was humbled by the people around me."

"It was amazing journey. It helped me to redefine my aspirations and shape my perspectives. I was so confused before this yatra because I never really had anyone to reach out, to get a right kind of orientation while choosing a career. But those role models, the journey experience, my peers, it all leads me to redefine my goals myself."



Jagriti Yatra ► JDY Main

26th December at 3:00pm

"जीवन के कई पहलुओं की तरफ प्रतिमान बदलाव जैसे गरीबी, योग्य दान।"

"मैं अब अपने लक्ष्यों के साथ अधिक संरेखित होने में सक्षम हूँ और यह भी, मुझे यह देखा है कि मेरे आसपास का समुदाय कितना महत्वपूर्ण है और मेरे देश के प्रति मेरी जिम्मेदारी है।"

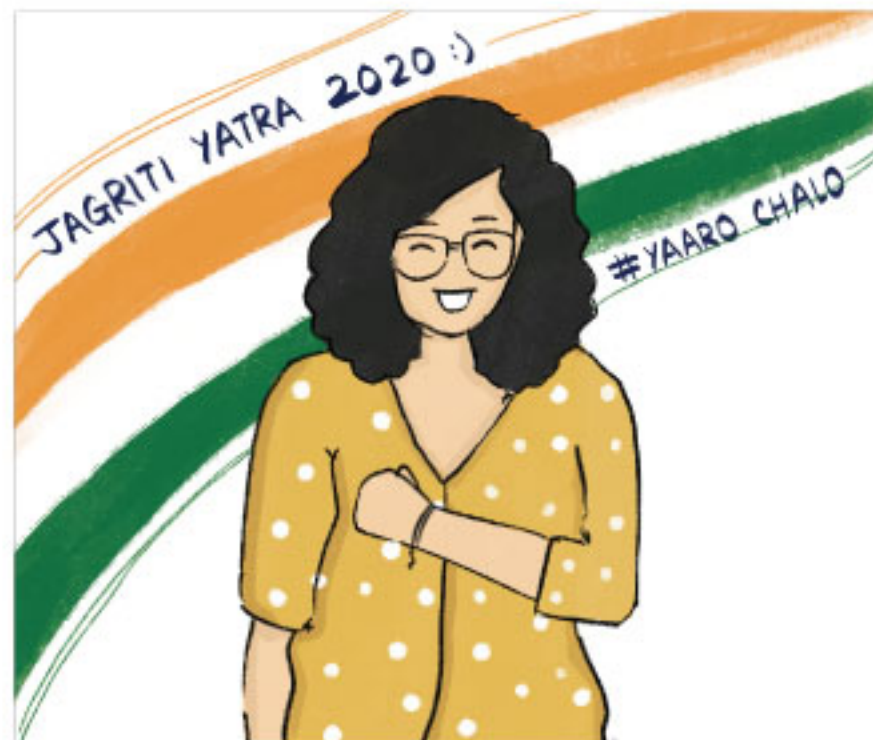
"स्वीकार किया जाना, सुना जाना और जो मैं हूँ माना जाना मेरे मन की बात कहने के लिए विश्वास देता है। मैं अपने आस-पास के लोगों के साथ सविनय था।"

"यह अद्भुत यात्रा थी। इसने मुझे मेरी आकांक्षाओं को फिर से परिभाषित करने और अपने दृष्टिकोण को आकार देने में मदद की। मैं इस यात्रा से पहले बहुत उलझन में था क्योंकि करियर चुनते समय मेरे पास सही तरह से उन्मुखीकरण प्राप्त करने के लिए वास्तव में कोई नहीं था। लेकिन उन रोल मॉडल, यात्रा के अनुभव, मेरे साथियों, यह सब मुझे अपने लक्ष्यों को फिर से परिभाषित करने की ओर ले जाता है।"



Sharanya Ojha ► JDY Main  
is feeling joyful :)

"I really wanted to express my gratitude - for this marvellous journey!! Never had I imagined learning so much and making close friends whom I have never seen (other than on my screen!!) We have heard countless times - the actual Yatra begins now! and it all depends on how we apply these insights to life!"



Sri Sowmya Sunkara ► JDY Main  
is feeling proud

"I was a tiny creature in this yatra I have received a lot but a little I give. I feel the journey and experiences of jagriti is like learning alphabets in the school which are very much needed basics to write our own stories. I have learned a lot in this 15 days which I never ever imagined would happen."



Abhay Vashishth ► JDY Main  
is feeling proud

"Awakening means awakening. It is not just a journey but a farming to generate entrepreneurship. This farming is watered by a rail and Biz Gyan Tree is a fertilizer with which new enterprise models are generated!"



Surabhi Hazra ► JDY Main  
is feeling proud

"This Yatra was way more than I expected. I didn't think that I could learn (and unlearn) so much, feel so much, think so much, in a 15 day timeframe - But, I did."





**Sneha Raman ▶ JDY Main is feeling proud**

"Thank you for being so open to teaching me new perspectives, concepts, learnings, being all in all collaborative and as a program - truly accepting ourselves and each one of us for who and what we are."



**Suyashi Dwivedi ▶ JDY Main is feeling proud**

जागृति यात्रा समापन सार"  
जागृति से जागृत होना....  
प्रेरक से प्रेरणा बनना  
प्रकाश से प्रकाश मान होना  
कुटुंब से वसुधैव कुटुम्बकम् की राह है  
इड़ा पिंगला और सुधुम्मा  
(भारत वर्ष) देश की जागृत कर,  
आभा का गठन कर, फिर?????  
हिंदुस्तानी होने का गर्व कर, फर्क कर!!  
बढ़ते चल, चलते चल!  
जागृति से जागृत बन,  
प्रेरक से प्रेरणा बन!!



**Aakash Deep ▶ JDY Main is feeling proud**

"Jagriti Yatra name is well chosen as it initiates a fire of Jagriti in your mind and heart. It was not only about sessions and all but about connecting amazing people together to create a movement of mass Jagriti about ourselves and our society. BizGyan Tree was one of the most important part of the Yatra, not because it is a competition but because of the interaction and collaboration people do to complete it."



**Manjushri Gulve ▶ JDY Main is feeling joyful :)**

सभी याली परिवार को नमस्कार मैं आप सभी से बहुत कुछ सिखना चाहती हूँ मगर हिंदी या मराठी भाषा में क्योंकि मुझे गाव में रहकर मेरे जैसी कम पढ़ी लिखी या अनपढ़ महिलाओं के साथ कार्य करना है

हम हमारे कार्य में भाषा कि वजह से पिछे नहीं रहना चाहते हैं मुझसे अनजाने में कोई गलती हुई हो किसी के मन को ठेस पहुंची हो तो क्षमा करीय

सभी से सीनती करती हूँ जो हमारा कंसिलेटर का ग्रुप है उसमें हिंदी भाषा का प्रयोग कीजिए ताकि हम थोड़ा सा हि सही समझ के और भी महिलाओं को बता सके

धन्यवाद आप सभी को आप सभी याली यो ने पुरे जागृति की टीम ने साथ दिया और मेरे कोहोट की सभी गुड़िया मेरे

ग्रुप के मेरे मुझे साथ देने वाले सभी सहयात्री। सभी को धन्यवाद मेरी मार्ग दर्शन करने वाली खुद से खुद कि पहचान करने वाली मुग्धा जी को भी बहोत सारा धन्यवाद

यात्रा में शामिल हुए और मुझसे बात करके मेरा होसला बढ़ाने वालों को भी बहोत सारा धन्यवाद

मे आप के नाम का उल्लेख इसलिफ कर नहीं रही क्योंकि गलती से उनके नाम का उल्लेख रह गया तो जिसने भी मेरी मदद की उनको भी बुरा लग जाए गा और उनसे जादा मुझे बुरा लगोगा

फिर से दिल से आप सभी को बहुत सारा धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद



## YATRI TESTIMONIALS & CREATIVE EXPRESSIONS



Shruti Kulkarni ▶ JDY Main  
is feeling proud

"What did I get in these 15 days? I got a team of 15 people who made me realise the leadership skills in me. The team had participation from Kerala to Uttar Pradesh to Canada to Nagpur. Had to manage two different time zones, sort language difficulties and non-ending and extending meetings over late nights. All this was worth as our team's idea was judged as the 'best pitching idea' under education section."



Nikhil Bhat ▶ JDY Main  
is feeling proud

"The role model presentation gave us all an idea of how the best practices can be replicated and solve problems. The challenges faced by role models is a learning experience for all of us. Their solutions should motivate us to take audacious steps in building a better India."



Tanaya Unhale ▶ JDY Main  
is feeling proud

"I don't want to call it a 'Digital' Yatra, because even though the mode was digital, I don't believe that it's learnings were diminished at all compared to the physical Yatra. Much learning and unlearning has happened in the last 14 days. Every day we were yanked out of privilege-induced stupor and made to look at reality. I want to put all of what I've learnt and felt into words, but haven't been able to do justice to it. I feel truly privileged to have been a part of this Yatra."



Manav Kishore ▶ JDY Main  
is feeling joyful :)

यारो चालो	तो
यारो चालो,	यारो चालो,
अपनी मेज़िल की तलाश में	इस मेज़िल की तलाश में
एक सुहाने सफर पे,	एक सुहाने सफर पे,
कम्याबी की चाह में	काबिलियत की चाह में
एक रोमांचक सफर पे,	एक रोमांचक सफर पे,
अटूट रिश्तों की उमीद में	अटूट रिश्तों की विश्वास में
एक अंजाने सफर पे,	एक जाने-पहचाने सफर पे,
बदलाव की आग लिये दिल में	बदलाव की खवाहिश लिये दिल में
एक अनोखे सफर पे,	एक अनोखे सफर पे,
जैसा भी हो सफर	
तुम याद रखना मगर	
अनुशासन से ते करेंगे हम	
बदलाव का ये सफर	
पुराने चेहरों के सांग रहेंगे हम	
वापसी की डगर	
बन के निकले काबिल हम	
कम्याबी देगी ये खबर	
जिये हर लम्हा इस सफर का हम	
हो सबकी मेज़िल अगर	





## YATRI TESTIMONIALS & CREATIVE EXPRESSIONS



Anurag Datta Roy ► JDY Main  
is feeling proud

"My biggest learning or realization from the Yatra was how little I knew about the India outside of big cities. Now comes the hard part – using these learning and embarking on our own journey of nation building."



Sindhu Kandipati ► JDY Main  
is feeling proud

"What an amazing journey. I got an opportunity to listen to so many amazing life stories, filled with highs and lows. There is a common thread among all those stories " never give up attitude " & " a strong passion to make a positive difference".



Sayali Deshpande ► JDY Main  
is feeling proud

Jagriti Yatra changed us bit by bit, nudging slightly to be a different person, making us aware of the realities of India, and gently moving us to pay back to society without any arrogance and ego. Yatra has given us the arsenal, now is our turn to pay back."



Mallika Mathur ► JDY Main  
is feeling proud

"As a mother of a 6 year old, I really found it almost impossible to be on a physical yatra for such a long time, but the digital version gave me this opportunity of experiencing it firsthand. The energy and vibrance that my group members brought during interactions was infectious. It brought back my dreams, it actually awakened me, literally "Jagriti" happened.



Akanksha Jain ► JDY Main  
is feeling joyful :)

Woh swapn hi kya...  
Jo bhoole jayein...  
Woh aag hi kya...  
Jo asaani se bujh jaye...  
Woh lakshya hi kya,  
Jo dhundhla pad jaaye...  
Woh yatri hi kya...  
Jo safar par Kabhi...  
Nikal hi na paaye?  
Darti toh aag bhi hai..  
Paani se...  
Darta swapn bhi hai..  
Toot jaane se...  
Darr toh lakshya ko bhi hai,  
Bhatke jaane se...  
Darr har yatra ko hai,  
Khatam ho jaane se...  
Par akhir khatam hona hi kyu hai?  
Tootna,  
Bhatakna,  
Dama hi kyu hain?  
Jis yatra par..  
Nikal pade hain..  
Usmein ab...  
Rukna....hi kyu hai?



## YATRI TESTIMONIALS & CREATIVE EXPRESSIONS



Anuja Bali Karthikeyan ► JDY Main  
is feeling proud

"Jagriti Yatra is a Nation building exercise that will transform your perceptions, attitude and meaning of life."



Medha Mehta ► JDY Main  
is feeling proud

"It's been a memorable journey with all of you on this digital platform. This experience is nothing less to than physical yatra."



Soumita Roy ► JDY Main  
is feeling proud

"I found a new myself within these days. And this digital yatra is really really worthy for me this year. This journey might not have been possible for me if it had not been digitized this year."



Dr. Trisha Rajpurohit ► JDY Main  
is feeling AMAZING!

Juggling between Hospital Duty and Jagriti Digital Yatra has been an experience I shall never forget. This journey of JAGRITI DIGITAL YATRA has completely transformed my perception of "hope." Teaching us the importance of collaboration over competition, clubbing together empathy and purpose, growing and EVOLVING together, the learnings are endless, and the memories are surely to last forever."



Rohan Jadhav ► JDY Main  
is feeling joyful :)

#...सीखले...#  
रात आधियारी है  
तू ख्वाब देखना सीख ले..  
चांद जो आसमां में नहीं  
तू चांद बनना सीख ले...  
सीख ले उम्मीद का  
दामन ना छोड़ना,  
सीख ले धुंधले रास्तों पर  
करवट ना मोड़ना..  
बेबसी की नाव छोड़  
तू खुद तैरना सीख ले,  
रात आधियारी रही है  
तू ख्वाब देखना सीख ले...  
बंजारा तू आवारा  
इस जहां में घूमता,  
हर घड़ी मगरूर खुदके  
कश्मकश में झुमता..  
आपसी रंजिश को छोड़  
ठहराव पलभर सीख ले,  
रात आधियारी है  
तू ख्वाब देखना सीख ले...  
तपी हुई जमीनों पर

जो लहू लेकर चल पड़े,  
जिस्म की दीवार बनकर  
आधियों से लड़ पड़े..  
उनके इस कर्ज का  
हिस्सा चुकाना सीख ले,  
रात आधी आ रही है  
तू ख्वाब देखना सीख ले...  
सीख ले जिंदगी से  
जिंदगी पर प्यार करना,  
सीख ले सुखियों में  
हौसलों का रंग भरना..  
धम गए जो लम्हे सारे  
तु मैं ढूँढना सीख ले,  
रात आधियारी है  
तू ख्वाब देखना सीख ले...





## YATRI TESTIMONIALS & CREATIVE EXPRESSIONS



Wageesh Shulka ► JDY Main  
is feeling joyful :)

विविधताओं से भरी  
संभावनाओं से घिरी  
उत्साह से संचारित  
क्षमताओं से संयोजित  
भावों से चालित  
आशाओं से पूरित  
मन को करे आह्लादित  
तन को करे स्फुरित  
हो रहा रोम-रोम पुलकित  
हर याली है जहाँ उत्साहित

सब मिलकर हैं प्रफुल्लित  
हर मोड़ पर हो रही  
जहाँ उत्साकृता जाग्रत  
यह है जागृति यात्रा  
दर्ज हो रहे हर एहसास,  
खिल रहा हर विचार



Dolly Aswani ► JDY Main  
is feeling AMAZING!

"Learned more from @rameshmashelkar sir in one hour than a full-fledged 4 year engineering degree! From the importance of aspirations to sustainable & compassionate innovations, the session with @Jagriti-Yatra has given me years of knowledge to keep & cherish!"



Riddhi Bhatt ► JDY Main  
is feeling proud

"I was shocked at the ease at which I could express myself and be appreciated for it. No one here dismissed my aspirations and claimed them to be utopian. That felt different. Meeting like-minded passionate people who are respectful towards each other was a pleasant surprise. Every single person here only wanted to go forward and just dive into this sea which had endless opportunities. The professional, social and emotional networks I was able to make in these 15 days are overwhelming. I have a much broader perspective towards what I want from life and most importantly how I CAN BE THE CHANGE. This Yatra might end today but my journey has truly begun from here."



Siddhartha Jatar ► JDY Main  
is feeling proud

India Unbound (poetry on wheels)  
Metal on metal, the train chugs along;  
Across fields of paddy and palm trees.

Mile after mile we traverse this peninsula,  
Deep in thought about emerging India.

A kaleidoscope of ideas, a confluence of  
thoughts;  
Each one optimistic of our society's future.

And soon a sense of bonding ensues;  
A common vision of India Unbound.



Aarohi Trivedi ► JDY Main  
is feeling joyful :)

The journey has been  
overwhelming, enriching and  
sparkingly amazing!"



Pratikshit Sharma  
► JDY Main

"Forgive me for not able to find  
right words to express my  
gratitude. This was for sure  
transformational and life  
exchanging experience."



## QUOTES FROM DERC who kept the engine running smoothly



Brijesh Prasad ► JDY Main  
is feeling joyful :)

5 yatras down, what I expected to call my 6th actually became my 1st, and it was an absolute learning curve. What started with initial apprehension on people bonding virtually turned into one of the most magical spaces of yatri bonding that I have ever seen. For me the most memorable aspect of the Yatra was the liveliness of the interactions and engagement on the comment box, where 400 odd Yatri didn't just learn, but interacted, had fun, shared little moments, and throughout all this unfolded themselves, each other, and the digital Yatra. Each Yatri this time for me wasn't just a participant but a co-founder of this Digital Yatra.



Brijesh Prasad ► JDY Main  
is feeling joyful :)

५ यात्राओं के बाद, यह मेरी ६वीं यात्रा थी और मैं पहले जैसी उम्मीद कर रहा था, लेकिन यह वास्तव में मेरी पहली यात्रा बन गई, और एक नए तरह से सीखने की अवस्था बन गई। यह सब एक प्रारंभिक अनिश्चितता के साथ शुरू हुआ था की लोग कैसे ऑनलाइन यात्रा में एक दूसरे के साथ बातचीत करेंगे और जुड़ सकेंगे। जो मैंने कभी नहीं देखी, ऐसी यात्री बॉन्डिंग हुई और जादुई घनिष्टता में बदल गयी। यात्रा का सबसे यादगार पहलू था बातचीत का जोश और कमेंट बॉक्स पर लाइव चैट, जहां लगभग 400 यत्रियां न सिर्फ सीखते थे, बल्कि बातचीत और मस्ती भी करते थे, छोटे-छोटे पल साझा करते थे, और इस दौरान उन्होंने जिस तरह से अपने और अपने साथियों के अनकहे भावों को समझा उसी तरह से डिजिटल यात्रा के जुड़ाव को भी व्यक्तिगत रूप से महसूस किया। मेरे लिए इस बार की डिजिटल यात्रा का प्रत्येक यात्री सिर्फ एक प्रतिभागी नहीं बल्कि सह-संस्थापक भी था।



Prerak Baheti ► JDY Main  
is feeling amazed :)

Contradictory to my presumption, Digital was more humane, full of life, and Prerak(Google पर्यायवाची) than my prior Yatras! I discovered that every keyboard activist has the Yang to contribute towards "positive community development". Jaw-dropping raw thoughts that Yatris expressed naively was more Prerak to me than any bigwig's fabricated story. I realized every yatri was a "Prerak" to me at some point in time during this supernatural expedition. Hey, my bros in arms wish we be each other's Noah's ark to पार्थसारथी our way into being better Hoomans. दूर हो या पास, तुम हमेशा मेरे प्रेरक-स्तम्भ रहोगे।



Prerak Baheti ► JDY Main  
is feeling amazed :)

मेरे अनुमान के विपरीत जागृति डिजिटल यात्रा पहले की तुलना में अधिक मानवीय जीवंत तथा प्रेरक था। मुझे यह जानकर खुशी हुई की हर एक यात्री सकारात्मक सामुदायिक विकास की दिशा में योगदान करने के लिए उत्साहित है। यात्रियों ने जिस सदाचार और भोलेपन से अपने विचार व्यक्त किए वह मेरे लिए रचनात्मक ढंग से गढ़ी हुई कहानियों की तुलना में अधिक प्रेरक थे। इस अलौकिक यात्रा के दौरान हर यात्री किसी ना किसी तरह से मुझे एक प्रेरणा का स्रोत लगा। ओ मेरे यात्री दोस्तों मेरी यह दिली इच्छा है कि हम एक बेहतर इंसान बनने में एक दूसरे का साथ दें।  
दूर हो या पास, तुम हमेशा मेरे प्रेरक-स्तम्भ रहोगे।





## QUOTES FROM DERC who kept the engine running smoothly



Meet Bhatt ► JDY Main  
is feeling joyful :)

The Jagriti Digital Yatra was truly a journey to Central India. In which most people were involved in Tier 2 and Tier 3 and villages. We connected to our mission through digital travel. My memorable thing is that all the role models who came to the session and the speakers, while listening to them I took notes and heard them well while streaming. And the fun of our green room will be memorable.



Meet Bhatt ► JDY Main  
is feeling joyful :)

जाग्रति डिजिटल यात्रा सच्चे मायनों में मध्य भारत की यात्रा थी। जिस में टियर २ और टियर ३ एवं गाओसे ज्यादातर लोग जुड़े थे। डिजिटल यात्रा के ज़रिये हम हमारे उद्देश से जुड़े रहे। मेरी यादगार बात येही है की जितने भी रोम मोडल आये और स्पीकर आये उनको स्ट्रीमिंग करते वक़्त अच्छे से सुना और सिखा। और हमारे ग्रीन रूम की मस्ती याद रहेगी।



Leena Borhade ► JDY Main  
is feeling amazed :)

Looking at the year 2020, I had not expected anything great to happen till the end of it. But one day I got invited for a zoom call where I learned that Jagriti Yatra will be digital this year. It sounded a bit unpredictable and impossible the first time. But I figured out that I will be supporting not as an ERC (3rd year) but a D-ERC. This year interacting with yatris was less, travel fun was missing but it taught me the use of technology. Secondly, an important learning was handling things under pressure and how to be calm in such situations, not let people know the mistake and try to keep the digital train running on track. Bonding with yatris was similar to last yatras. Overall digital yatra went well and I feel very fortunate to be a part of such an amazing initiative and happy that I could contribute to make it a grand success. Thanks for this opportunity to be a part of JDY. Yaro chalo



Pragati Baheti ► JDY Main  
is feeling amazed :)

Going opposite about imagining the physical Yatra, now it is believable that digital has enormous potential to connect the world and nothing can break if we have the power to make it happen. That's what made Jagriti Digital Yatra - the group named Yatris, DERC's and Team. This Yatra Saar will remind you of wake up calls, role model sessions, rolling comments, group video calls, knowing and learning from co-Yatris, openness for something new and informal conversations which gave you good friends. I congratulate all the Yatris for completing this journey and taking back a lot for yourself from this Yatra. a big thanks to Yatra Saar team for putting the whole experience together successfully.

आशा है आपकी ज़िंदगी की यात्रा में हमेशा प्रगति होती रहे।

If we have not got the chance to have a conversation during Yatra, feel free to connect me and if we have - stay connected!



## QUOTES FROM DERC who kept the engine running smoothly



Aniket Gawali ► JDY Main  
is feeling overjoyed :)

Hello Yatris

I have been told to write about my experience in Digital Yatra, A way different story this was for me, Traveling from a train journey for 15 days to Digital train journey for Jagriti digital Yatra 2020 Also being a Erc member, thought would be like having a privilege, but, Jab kam ata hai na bhai, tabhi sach samjta hai...P. To start with I was first told to be a person who will be helping the technical team with Digital errors, if we come across any during the Yatra, but sooner the date of yatra approached I was told to handle the OBS software, start streaming practise and within few days I had told to drive the platform/train as a Stream Coordinator. At first my happiness had no limits, I was overjoyed, for me working on such a huge platform and being helpful to the team as a Stream Co-Ordinator was really way different. Slowly the induction Day approached and we Stream Co-Ordinators had practiced day and night, so we were confident enough to handle the first Day, But as we know life is not a movie and everything is not perfect, whatsoever we do it can't be perfect, so sudden changes in the plan do create an issue and this was what exactly took place and from everything being perfect to something went wrong the JDY team was bit disturb on the first day of the Yatra, but as we say when a team works everything gets back on track and things start running smooth, so we can say train was bit late to start the journey, but the team work made it easier and we were back on track. Then as days passed by, we streaming team started enjoying streaming, we used to have lot of fun prior to streaming like exploring zoom, its features, the other software features and also BTS in zoom calls were the funniest. The difference I observed being a photographer was only one I couldn't capture the yatra physically in my lenses, but Digitally I could enjoy the journey without any further complications.



Vishwas ► JDY Main  
is feeling joyful :)

I have been to Yatra twice and was very cynical if the Yatra was happening or not. When I got to know about the digital Yatra, I wasn't sure how big and exciting it could be. However, as part of Jagriti Team (JEC-P) I had few glimpses of the preparations of the Yatra. But from the Day 1(Launch event) I witnessed the amazing piece of work in the Jagriti Digital Yatra. From the launch event to Morning Music to EOD music and the kind of ideas discussed during the Digital Biz Gyan Tree sessions and so on. I am finding it very hard to explain this amazing platform in words. You have to be part of this to experience what I meant here.



Chinmay ► JDY Main  
is feeling amazed :)

After doing 12 consecutive Jagriti Yatras, we were conditioned to execute Jagriti Yatra in a certain operational and programming manner. In order to execute Jagriti Digital Yatra it was important for us to uncondition, unwire ourselves and offer an enriching experience for the digital Yatri's keeping in mind to capture the spirit of the train journey. We repurposed the departments in mid September with a small yet focused team and in less than 3 months we were able to offer you all the digital experience.



Lalitha ► JDY Main  
is feeling amazed :)

Digital yatra was relaxed and was very peaceful. Less demands on the body and more stretching of the mind . Since the challenge of organising and handling logistics was eliminated, could get more time to concentrate on the content . I was able to participate in all the events of JDY. One thing I miss is the physical bond with fellow yatris and every day jugaad to take bath.





# Intent



Digital Engine Room  
Crew



Ashutosh Kumar  
आशुतोष कुमार

Jagriti  
CEO

THE FUTURE  
AS WE ARE  
BUILDING IT

भविष्य जैसा  
हम बना रहे हैं

"The best way to predict the future is to create it." In these words of Abraham Lincoln, I find an inspiration for myself, and a collective guidance for our community of alumni – the Yatris.

Earlier this year, when we were struggling to 'predict the future', because of the ambiguities surrounding our usual train journey program - Jagriti Yatra, we decided to 'create the future'. We spent a good four months of brainstorming to stitch the program together beginning from finding the right digital platform and bringing different stakeholders on board - we created something that we are proud of – Jagriti Digital Yatra 2020! And this Yatra Saar, a work of love and passion of our Digital Yatris, beautifully captures that spirit, that essence of Digital Yatra.

Jagriti is built on a 12-year strong foundation of the Jagriti Yatra, and powered by the energy and intellect of the Yatris. The digital avatar of the Yatra has enabled us to penetrate further into the small towns and villages of India. Yatris like Manjushree Gulve, a farmer from rural Maharashtra who after toiling the whole day in her farm found time and energy to join the Digital Yatra, is a testimony to the power of digital, and inspiration for us.

"भविष्य की भविष्यवाणी करने का सबसे अच्छा तरीका है उसका सृजन करना" अब्राहम लिंकन के इन शब्दों से मुझे प्रेरणा मिलती है साथ ही हमारे जागृति समुदाय के लिए एक सामूहिक मार्गदर्शन भी।

2020 की शुरुआत में जब हम भविष्य की जागृति ट्रेन यात्रा के सामान्य कार्यक्रम को लेकर आशंकित थे क्योंकि हमारे आसपास बहुत सारी अनिश्चितताएं थी, हमने भविष्य बनाने का फैसला किया। हमें सही डिजिटल प्लेटफॉर्म की तलाश से लेकर विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक साथ लाने में लगभग 4 महीने लग गए - और हमने कुछ ऐसा बनाया जिस पर हमें गर्व है - जागृति डिजिटल यात्रा 2020! और यह यात्रा-सार जो हमारे डिजिटल यात्रियों के प्यार और जुनून का काम है जागृति डिजिटल यात्रा की भावना को बड़ी खूबसूरती से आत्मीयता के साथ बयान करती है।

जागृति का निर्माण जागृति यात्रा के 12 साल की मजबूत नींव पर किया गया है जो यात्रियों की ऊर्जा और बुद्धि द्वारा संचालित है। यात्रा के डिजिटल अवतार ने हमें भारत के छोटे शहरों और गांवों में प्रवेश करने के सक्षम बनाया है। ग्रामीण महाराष्ट्र की एक किसान मंजूश्री गुलवे जैसी यात्री जो अपने खेत में पूरे दिन की मेहनत के बाद डिजिटल यात्रा में शामिल होने के लिए समय और ऊर्जा बचा पाई, हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है, साथ ही भारत की डिजिटल शक्ति का प्रमाण भी।





## THE FUTURE AS WE ARE BUILDING IT

भविष्य जैसा  
हम बना रहे हैं

We have realized that digital without human touch is incomplete; both coming together is a potent force.

And that is a real framework to guide the future of Jagriti – in tier 2/3 districts of India, a young enterprise facilitator – an Udyam Corps – using technology to enable local entrepreneurs, while enjoying the heat and dust of the district. The Jagriti Enterprise Centre-Purvanchal (JEC-P) and the Jagriti Ambassador for District Entrepreneurship (JADE) are already using this framework to build entrepreneurship ecosystems in tier 2/3 districts. The Jagriti Digital Yatra leveraged cohort-based learning supported by facilitators rather than it just being another online course.

We now have a recipe for the future; we need to just keep building it. And our hope is that many of you will come forward to build it along with us, bringing your compassion and wisdom.

Ashutosh Kumar  
CEO, Jagriti

हमने यह महसूस किया है कि डिजिटल मानवीय संपर्क के बिना अधूरा है तथा दोनों का एक साथ होना अपने आप में एक प्रबल शक्ति है और यही जागृति के भविष्य का मार्गदर्शन के लिए सही रास्ता है - भारत के टियर 2/3 जिलों में जागृति उद्यम कोर (एक युवा एंटरप्राइज फैसिलिटेटर) धूल और गर्मी का आनंद लेते हुए तकनीक का सही उपयोग कर स्थानीय उद्यमियों को सक्षम बनायेंगे | जागृति एंटरप्राइज सेंटर - पूर्वांचल (JEC-P) और जिला उद्यमिता के लिए जागृति एम्बेसडर (JADE) पहले से ही इस ढांचे का उपयोग टियर -2/3 जिलों में उद्यमशीलता के माहौल के निर्माण के लिए काम कर रहे हैं। जागृति डिजिटल यात्रा ने सह कर्मियों पर आधारित शिक्षा का लाभ उठाया और इसे सुविधाकर्ताओं द्वारा समर्थित किया ताकि यह यात्रा केवल एक अन्य आनलाईन पाठ्यक्रम बनकर न रह जाये |

हमारे पास अब भविष्य के लिए एक नुस्खा है, रणनीति है ; हमें बस इसे बनाए रखने की जरूरत है और हमारी आशा है कि आप में से कई लोग अपनी कर्तुणा और ज्ञान के साथ आगे आकर हमारे साथ इसे बनाएँगे। हम मिलकर भविष्य बनाने के लिए तैयार हैं |

आशुतोष कुमार  
मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जागृति



# Supporters and Sponsors

## Principal Partner



## Women Partner



## Knowledge Partner



## Friends of Yatra

